ISSN 2229-547X VIDEHA

विदेह ३११ म अंक ०१ सितम्बर २०२३ (वर्ष १६ मास १८९ अंक ३११)

[विदेह (since 2000) ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004) www.videha.co.in]



विदेह मैथिली साहित्य आन्दोलन: मानुषीमिह संस्कृताम्



विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर।



(c) २०००- २०२३. सर्वाधिकार सुरक्षित। भालसरिक गाछ जे सन २००० सँ याहूसिटीजपर छल http://www.geocities.com/.../bhalsarik_gachh.html , http://www.geocities.com/ggajendra आदि लिंकपर आ अखनो ५ जुलाइ २००४ क पोस्ट http://gajendrathakur.blogspot.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html केर रूपमे इन्टरनेटपर मैथिलीक प्राचीनतम उपस्थितक रूपमे विद्यमान अछि *(किछु दिन लेल http://videha.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html लिंकपर, स्रोत wayback machine of https://web.archive.org/web/*/videha 258 capture(s) from 2004 to 2016- http://videha.com/ भालसरिक गाछ-प्रथम मैथिली ब्लॉग / मैथिली ब्लॉगक एग्रीगेटर)।*

ई मैथिलीक पहिल इंटरनेट पत्रिका थिक जकर नाम बादमे १ जनवरी २००८ सँ 'विदेह' पड़लै। इंटरनेटपर मैथिलीक प्रथम उपस्थितिक यात्रा विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका धरि पहुँचल अछि, जे http://www.videha.co.in/ पर ई प्रकाशित होइत अछि। आब "भालसरिक गाछ" जालवृत्त 'विदेह' ई-पत्रिकाक प्रवक्ताक संग मैथिली भाषाक जालवृत्तक एग्रीगेटरक रूपमे प्रयुक्त भऽ रहल अछि।

(c)२०००- २०२३. विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (since 2000) ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004). सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर। Editor: Gajendra Thakur. In respect of materials e-published in Videha, the Editor, Videha holds the right to create the web archives/ theme-based web archives, right to translate/ transliterate those archives and create translated/ transliterated web-archives; and the right to e-publish/ print-publish all these archives. रचनाकार/ संग्रहकर्ता अपन मौलिक आ अप्रकाशित रचना/ संग्रह (संपूर्ण उत्तरदायित्व रचनाकार/ संग्रहकर्ता मध्य) editorial.staff.videha@gmail.com केँ मेल अटैचमेण्टक रूपमेँ पठा सकैत छथि, संगमे ओ अपन संक्षिप्त परिचय आ अपन स्कैन कएल गेल फोटो सेहो पठेताह। एतऽ प्रकाशित रचना/ संग्रह सभक कॉपीराइट रचनाकार/ संग्रहकर्तालोकनि लगमे रहतन्हि आ जतऽ रचनाकार/ संग्रहकर्ताक नाम नै अछि ततऽ ई संपादकाधीन अछि। सम्पादक: विदेह ई-प्रकाशित रचनाक वेब-आर्काइव/ थीम-आधारित वेब-आर्काइवक निर्माणक अधिकार, ऐ सभ आर्काइवक अनुवाद आ लिप्यंतरण आ ओकर वेब-आर्काइवक निर्माणक अधिकार; आ ऐ सभ आर्काइवक ई-प्रकाशन/ प्रिंट-प्रकाशनक अधिकार रखैत छथि। ऐ सभ लेल कोनो रोयल्टी/ पारिश्रमिकक प्रावधान नै छै, से रोयल्टी/ पारिश्रमिकक इच्छुक रचनाकार/ संग्रहकर्ता विदेहसँ नै जुड़थि। विदेह ई पत्रिकाक मासमे दू टा अंक निकलैत अछि जे मासक ०१ आ १५ तिथिकेँ www.videha.co.in पर ई प्रकाशित कएल जाइत अछि।

Videha eJournal (link www.videha.co.in) is a multidisciplinary online journal dedicated to the promotion and preservation of the Maithili language, literature and culture. It is a platform for scholars, researchers, writers and poets to publish their works and share their knowledge about Maithili language, literature, and culture. The journal is published online to promote and preserve

Maithili language and culture. The journal publishes articles, research papers, book reviews, and poetry in Maithili and English languages. It also features translations of literary works from other languages into Maithili. It is a peer-reviewed journal, which means that articles and papers are reviewed by experts in the field before they are accepted for publication.

Font/ Keyboard Source: https://fonts.google.com/ , https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts , https://keyman.com/

These are print-on-demand books, send your queries to editorial.staff.videha@gmail.com. The eBooks of some of these are available for sale on Google Play [(c) Preeti Thakur, sales.videha@gmail.com], send your queries to sales.videha@gmail.com. The contents and documents e-published by Videha (since 2000) ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004) are periodically being checked for accessibility issues. People with disabilities should not have difficulty accessing these contents/ documents.

Videha e-Journal: Issue No. 377 at www.videha.co.in

𑒮𑒧𑒰𑒢𑒰𑒢𑓂𑒞𑒩 𑒣𑒩𑒧𑓂𑒣𑒩𑒰𑒏 𑒫𑒱𑒠𑓂𑒨𑒰𑒣𑒞𑒱- *𑒔𑒱𑒞𑓂𑒩 𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯 𑒮𑒧𑓂𑒧𑒰𑒢𑒮𑒿 𑒮𑒧𑓂𑒧𑒰𑒢𑒱𑒞 𑒬𑓂𑒩𑒲 𑒣𑒢𑒏𑒪𑒰𑒪 𑒧𑒝𑓂𑒛𑒪 𑒠𑓂𑒫𑒰𑒩𑒰*

𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒦𑒰𑒭𑒰 𑒖𑒑𑒖𑓂𑒖𑒢𑒢𑒲 𑒮𑒲𑒞𑒰𑒨𑒰𑓁 𑒦𑒰𑒭𑒰 𑒂𑒮𑒲𑒞𑓂। 𑒯𑒢𑒴𑒧𑒢𑓂𑒞𑓁 𑒅𑒏𑓂𑒞𑒫𑒰𑒢- 𑒧𑒰𑒢𑒳𑒭𑒲𑒧𑒱𑒯 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒏𑒵𑒞𑒰𑒧𑓂।

𑒁𑒏𑓂𑒭𑒩 𑒐𑒧𑓂𑒦𑒰 (𑒂𑒐𑒩 𑒐𑒰𑒧𑓂𑒯)

𑒞𑒱𑒯𑒳𑒁𑒢 𑒐𑒹𑒞𑓂𑒞𑒯𑒱 𑒏𑒰𑒘𑒱 𑒞𑒮𑒳 𑒏𑒱𑒞𑓂𑒞𑒱𑒫𑒪𑓂𑒪𑒱 𑒣𑒮𑒩𑒹𑒃। 𑒁𑒏𑓂𑒐𑒩 𑒐𑒧𑓂𑒦𑒰𑒩𑒧𑓂𑒦 𑒖𑒅 𑒧𑒘𑓂𑒔𑒼 𑒥𑒢𑓂𑒡𑒱 𑒢 𑒠𑒹𑒃॥ *(𑒏𑒲𑒩𑓂𑒞𑒱𑒪𑒞𑒰 𑒣𑓂𑒩𑒟𑒧𑓁 𑒣𑒪𑓂𑒪𑒫𑓁 𑒣𑒯𑒱𑒪 𑒠𑒼𑒯𑒰।)*

𑒧𑒰𑒢𑒫 𑒂𑒐𑒩 𑒩𑒴𑒣𑒲 𑒐𑒰𑒧𑓂𑒯 𑒢𑒱𑒩𑓂𑒧𑒰𑒝 𑒏𑓄 𑒞𑓂𑒩𑒱𑒦𑒳𑒫𑒢 (*𑒑𑒠𑓂𑒨-𑒣𑒠𑓂𑒨 𑒩𑒴𑒣𑒲*) 𑒧𑓀𑒔 𑒖𑒿 𑒢𑒻 𑒥𑒰𑒢𑓂𑒯𑒪 𑒖𑒰𑒨 𑒞𑒿 𑒄 𑒞𑓂𑒩𑒱𑒦𑒳𑒫𑒢𑒩𑒴𑒣𑒲 𑒏𑓂𑒭𑒹𑒞𑓂𑒩𑒧𑒹 𑒍𑒏𑒩 𑒏𑒲𑒩𑓂𑒞𑒱𑒩𑒴𑒣𑒲 𑒪𑒞𑓂𑒞𑒲 𑒏𑒼𑒢𑒰 𑒣𑒮𑒩𑒞।

𑒬𑒳𑒏𑓂𑒪 𑒨𑒖𑒳𑒩𑓂𑒫𑒹𑒠 (𑓒𑓖.𑓒)-𑒨𑒟𑒹𑒧𑒰𑓀 𑒫𑒰𑒔𑓀 𑒏𑒪𑓂𑒨𑒰𑒝𑒲𑒧𑒰𑒫𑒠𑒰𑒢𑒱 𑒖𑒢𑒹𑒦𑓂𑒨𑓁। 𑒥𑓂𑒩𑒯𑓂𑒧𑒩𑒰𑒖𑒢𑓂𑒨𑒰𑒦𑓂𑒨𑒰𑓀 𑒬𑒴𑒠𑓂𑒩𑒰𑒨 𑒔𑒰𑒩𑓂𑒨𑒰𑒨 𑒔 𑒮𑓂𑒫𑒰𑒨 𑒔𑒰𑒩𑒝𑒰𑒨 𑒔।। 𑒯𑒧 𑒮𑒦 𑒑𑒼𑒙𑒹𑒏𑒹𑒿 𑒄 𑒣𑒫𑒱𑒞𑓂𑒩 𑒫𑒰𑒝𑒲 (𑒫𑒹𑒠𑒫𑒰𑒝𑒲) 𑒮𑒳𑒢𑒰𑒫𑒲। 𑒥𑓂𑒩𑒰𑒯𑓂𑒧𑒝𑒏𑒹𑒿, 𑒏𑓂𑒭𑒞𑓂𑒩𑒱𑒨𑒏𑒹𑒿, 𑒬𑒴𑒠𑓂𑒩𑒏𑒹𑒿 𑒂 𑒂𑒩𑓂𑒨𑒏𑒹𑒿; 𑒁𑒣𑒢 𑒪𑒼𑒏𑒏𑒹𑒿 𑒂 𑒁𑒣𑒩𑒱𑒔𑒱𑒞𑒏𑒹𑒿 𑒮𑒹𑒯𑒼 (𑒧𑒰𑒢𑒫 𑒮𑒦𑒏𑒹𑒿)। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒄 𑒫𑒹𑒠𑒫𑒰𑒏𑓂𑒨𑒏 𑒫𑒱𑒣𑒩𑒲𑒞 𑒧𑒢𑒳𑒮𑓂𑒧𑒵𑒞𑒱 𑒫𑒹𑒠𑒫𑒰𑒝𑒲𑒏 𑒁𑒡𑓂𑒨𑒨𑒢/ 𑒬𑓂𑒩𑒫𑒝𑒏𑒹𑒿 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒏 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒑𑒼𑒙𑒹 𑒪𑒹𑒪 𑒢𑒱𑒭𑒹𑒡 𑒏𑒩𑓄 𑒔𑒰𑒯𑒪𑒏, 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒮𑓂𑒧𑒵𑒞𑒱 𑒮𑒹𑒯𑒼

वेदलक्षकँ प्रमाण मानैत अछि (शब्द प्रमाण) सँ एकर विरुद्ध दल ठाकुर निर्देश स्वयं अमान्य कऽ जाइत अछि।

Do not judge each day by the harvest you reap but by the seeds that you plant. -Robert Louis Stevenson

----

Videha: Maithili Literature Movement

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः

: :

अनुक्रम

ऐ अंकमे अछि:-

१.१.गजेन्द्र ठाकुर- नूतन अंक सम्पादकीय

१.२.अंक ३१६ पर टिप्पणी

२.गद्य खण्ड

३.पद्य खण्ड

𑓓.𑓑.𑒣𑒫𑒢 𑒧𑒱𑒬𑓂𑒩 '𑒑𑒢𑒾𑒪𑒲'- 𑒍 𑒖𑒧𑒰𑒢𑒰 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒂𑒍𑒩 𑒕𑒪

𑓓.𑓒.𑒂𑒔𑒰𑒩𑓂𑒨 𑒩𑒰𑒧𑒰𑒢𑓀𑒠 𑒧𑓀𑒛𑒪- 𑒄 𑒡𑒢𑒲 𑒕𑒻/ 𑒯𑒧 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰 𑒕𑒲/ 𑒢𑒰𑒨𑒏 𑒕𑒲 𑒯𑒧

𑓓.𑓓.𑒩𑒰𑒖 𑒏𑒱𑒬𑒼𑒩 𑒧𑒱𑒬𑓂𑒩-𑒂𑒩𑒳𑒠

𑓓.𑓔.𑒂𑒬𑒲𑒭 𑒁𑒢𑒔𑒱𑒢𑓂𑒯𑒰𑒩- 𑓒 𑒙𑒰 𑒑𑒖𑒪

𑓓.𑓕.𑒏𑒪𑓂𑒣𑒢𑒰 𑒗𑒰- 𑒢𑒰𑒩𑒲



ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ग्वंग शान्तिः पृथ्वी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्ति वनस्पतयः शान्ति र्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म

ওঁ দ্যৌ: শান্তিৰন্তৰিক্ষ Ẇ শান্তিঃ পৃথ্বী শান্তিৰাপ: শান্তিৰোষধয: শান্তি ৰনস্পতয: শান্তিৰ্বিশ্বে দেৰা: শান্তিৰ্ব্রহ্ম

ब्रह्मणसँ प्रार्थना जे द्युलोकमे, अंतरिक्षमे, पृथ्वीपर, जलमे, औषधमे, वनस्पतिमे, विश्वमे, सभ देवतागणमे आ ब्रह्ममे शांति हुअय।

ॐ-ब्रह्मण, द्यौ-सूर्य-तरेगण, अंतरिक्ष- पृथ्वी आ द्यूलोकक बीच, आप:-जल, विश्वेदेवा- सभ देवता, ब्रह्म- सर्जक।

ব্রহ্মণসঁ প্রার্থনা জে দ্যুলোকমে, অংতৰিক্ষমে, পৃথ্বীপৰ, জলমে, ঔষধমে, ৰনস্পতিমে, ৰিশ্বমে, সভ দেৰতাগণমে আ ব্রহ্মমে শাংতি হুঅয।

ওঁ-ব্রহ্মণ, দ্যৌ-সূর্য-তৰেগণ, অংতৰিক্ষ- পৃথ্বী আ দ্যূলোকক ৰীচ, আপ:-জল, ৰিশ্বেদেৰা- সভ দেৰতা, ব্রহ্ম- সর্জক।

ƒ

ॐ, स॒हस्र॑शीर्षा॒ पुरु॑षः। स॒ह॒स्रा॒क्षः स॒हस्र॑पात्।

ওঁ, স↓হস্রা↑শীর্ষা↓ পুৰু↑ষঃ। স↓হ↓স্রা↓ক্ষঃ স↓হস্রা↑পাৎ।

स भूमिँ ग्वंग वि॒श्वतों वृ॒त्वा। अत्यंतिष्ठद् दशाङ्गु॒लम्॥

স ভূমিঁ↑ Ẇ ৰি↓শ্বতো↑ ৰৃ↓ত্বা। অত্যা↑তিষ্ঠদ্ দশাঙ্গু↓লম্॥

हजार माथ, हजार आँखि, हजार पएर संग विश्वकें आच्छादित केने अछि, दस आंगुरक गनतीक वशमे नै अछि ओ।

ॐ सहस्त्रंशीर्षा पुरुषः सहस्त्राक्षः
सहस्त्रंपात् ॥ सभूमिंᳫसर्व्वतस्पृत्वा
त्त्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥

पद्भ्यागँ् शूद्रो अंजायत॥

𑒣↓𑒠𑓂𑒦𑓂𑒨𑒰𑒑𑓂◌𑓀↑ 𑒬𑒴↓𑒠𑓂𑒩𑒼 𑒁↑𑒖𑒰𑒨𑒞॥

पएरसँ शूद्रक उत्पत्ति भेल॥

पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्राँत्।

𑒣↓𑒠𑓂𑒦𑓂𑒨𑒰𑓀 𑒦𑒴𑒧𑒱↓𑒩𑓂𑒠𑒱𑒬𑓁↓ 𑒬𑓂𑒩𑒼𑒞𑓂𑒩𑒰↑↑𑒞𑓂।

मुदा पएरेसँ भूमियोक उत्पत्ति।

❀ (White Florette- innocence and purity)

☸ (Wheel of Dharma)

卐 (Swastik)

꣼ (सिद्धिरस्तु, सिद्धम 𑒮𑒱𑒠𑓂𑒡𑒱𑒩𑒮𑓂𑒞𑒳, 𑒮𑒱𑒠𑓂𑒡𑒧 Devanagari Anji)

ẇ (Gwang ग्वंग- two small circles connected by u and a dot placed over it, used in reference of Vedic texts)

ꣻ (Tirhuta Anji, Ankush of Ganeshji, placed at the beginning of something)

ꣻ



१.१.गजेन्द्र ठाकुर- नूतन अंक सम्पादकीय

१.२.अंक ३७६ पर टिप्पणी

१.१.गजेन्द्र ठाकुर- नूतन अंक सम्पादकीय

मोली पासवान लऽ कऽ आयल छथि अपन पहिल काव्य संग्रह 'अजय यात्रा'। प्रजातंत्रक नीक शिक्षाक दुर्गतियेन ओ चिन्तित छथि, जंगल काटि कटलासँ अमंगल देखि रहल छथि। मुदा 'काँटो प्रिय' मे ध्वनि तरंग द्वारा मानवता आ बन्धुत्व राग रहल जवासँ आह्लादित सेहो छथि। प्रकृतियेन 'आउल बादल' पद्य सेहो लिखै छथि। दार्शनिक कविता मे 'रंग मंच' पद्य विम्बात्मक अछि। 'कामिनी' शृंगार रस पर अछि, विश्वासघाति मान पाछि देने छथि जखन ओ कहै छथि- मधुर विज्ञानीक नखा/ दिगदिगन्त ध्वनि छिटकल। 'वीनल जाल' मे ओ बहुजन समाजक शोषणक बनल जालमे फँसल रहबाक प्रति सजगताक अनुरोध करबैत छथि। बाल कविताम 'बौआ' के बचपनमे कृष्णका कखनो ओ राम, कखनो कृष्ण, कखनो रहमान आ कखनो यीसु मसीह सन देखाइत छन्हि, बच्चा गँ एगवानक रूप होइत अछि। 'पसरल निरासा' कालाना महामारीयेन अछि। 'उपदेशक' मे सौंस सह-सह करैत धर्म उपदेशक आ गली-गलीमे बैसल उपस्थितिक अछैत अधर्म आ जादू-टोनाक बढ़ैत जवापन ओ निवान करै छथि, अंग्रेजक बदला नेता सभ सह-सह करैत अछि मुदा जनताकें नतृत्व विहीन पबै छथि। मोली पासवानक 'अजय यात्रा' उत्तम यात्रा अछि जइमसँ कविता रचना, एकमात्र, मन-मस्तिष्क निकालु ओ कहिया सभ नै।

-Gajendra Thakur, editor, Videha (be part of Videha www.videha.co.in -send your WhatsApp no to

+919560960721 so that it can be added to the Videha WhatsApp Broadcast List.)

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

१.२.अंक ३७६ पर टिप्पणी

प्रेमकान्त चौधरी, गुवाहाटी

गजेंद्र बाबू नमस्कार अपने अद्भुत काज कैने छी। भाषा साहित्य संस्कृति संस्थान क नउक छी। जय हो।

आशीष अनचिन्हार

अंक ३७६ मे लाल देव कामतजीक छोट-छोट टिप्पणी कानगर अछि। परमानंद लालजीक गीता माहात्म्य तिरहुता लिपि मे नीक पहल अछि।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.गद्य खण्ड

२.१.परमानन्द लाल कर्ण- गीता माहात्म्य (आगाँ)

२.२.आचार्य रामानंद मंडल-मिथिला:समाज साहित्य प्रीति (मिथिला जन विमर्श)

२.३.लालदेव कामत-बदलैत गाम/ संस्कृतक विद्वान डॉ. रविन्द्र नारायण चौरसिया/ मैनेजर स्व०मखसूदन रंडानी/ अमर शहीद रामफल मंडल/ बहिर्मुखी कामैत कौम/ सूखल मन तरसल आँखि

२.४.निर्मला कर्ण- अग्नि शिखा (खण्ड-२६)

२.५.नन्द विलास राय-घसनहिनी

२.६.कुमार मनोज कश्यप- लघुकथा- कुकर्म किंवा सुकर्म

२.७.नवीन्द्र नारायण मिश्र-बदलि गेल अछि सभकिछु (उपन्यास)-धारावाहिक

२.८.नवीन्द्र नारायण मिश्र- जय महाकाल

२.९.रामानन्द लाल कर्ण- गीता माहात्म्य (आगाँ)

𑓇



(𑒢𑒰𑒧- 𑒣𑒩𑒧𑒰𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒪𑒰𑒪 𑒏𑒩𑓂𑒝 (𑓑𑓙𑓕𑓐) 𑒣𑒱𑒞𑒰- 𑒮𑓂𑒫० 𑒣𑒩𑒬𑒳𑒩𑒰𑒧 𑒪𑒰𑒪 𑒏𑒩𑓂𑒝, 𑒑𑒰𑒧- 𑒒𑒼𑒒𑒮𑒧, 𑒣𑒼० 𑒩𑒻𑒨𑒰𑒧, 𑒠𑒩𑒦𑓀𑒑𑒰, 𑒥𑒱𑒯𑒰𑒩-𑓘𑓔𑓗𑓒𑓐𑓓 𑒬𑒱𑒏𑓂𑒭𑒰- 𑒮𑓂𑒢𑒰𑒞𑒏𑒼𑒞𑓂𑒞𑒩, CAIIB, 𑒮𑒹𑒫𑒰𑒢𑒱𑒫𑒵𑒞𑓂𑒞- 𑒣𑓂𑒩𑒥𑒢𑓂𑒡𑒏, 𑒮𑒹𑒢𑓂𑒙𑓂𑒩𑒪 𑒥𑒻𑓀𑒏 𑒂𑒤 𑒃𑓀𑒛𑒱𑒨𑒰)

𑒑𑒲𑒞𑒰 𑒧𑒰𑒯𑒰𑒞𑓂𑒧𑓂𑒨

(𑒣𑒠𑓂𑒧 𑒣𑒳𑒩𑒰𑒝 𑒅𑒞𑓂𑒞𑒩 𑒐𑒝𑓂𑒛)

𑒥𑒰𑒩𑒯𑒧 𑒁𑒡𑓂𑒨𑒰𑒨

𑒬𑓂𑒩𑒲 𑒧𑒯𑒰𑒠𑒹𑒫 𑒖𑒲 𑒏𑒯𑒪𑒢𑒱- 𑒣𑒰𑒩𑓂𑒫𑒞𑒲! 𑒠𑒏𑓂𑒭𑒱𑒝 𑒠𑒱𑒬𑒰 𑒏𑒼𑒪𑓂𑒯𑒰𑒣𑒳𑒩 𑒢𑒰𑒧 𑒮𑒿 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒢𑒑𑒩 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒮𑒥 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒩𑒏 𑒮𑒳𑒐𑒏 𑒂𑒡𑒰𑒩, 𑒮𑒱𑒠𑓂𑒡 𑒧𑒯𑒰𑒞𑓂𑒧𑒰 𑒪𑒼𑒏𑒢𑒱𑒏 𑒢𑒱𑒫𑒰𑒮 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒢 𑒂 𑒮𑒱𑒠𑓂𑒡𑒱 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒣𑓂𑒞𑒱𑒏 𑒏𑓂𑒭𑒹𑒞𑓂𑒩 𑒁𑒕𑒱। 𑒍 𑒣𑒩𑒰𑒬𑒏𑓂𑒞𑒱 𑒦𑒑𑒫𑒞𑒲 𑒪𑒏𑓂𑒭𑓂𑒧𑒲𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒡𑒰𑒢 𑒣𑒲𑒚 𑒁𑒕𑒱। 𑒮𑒥 𑒠𑒹𑒫𑒞𑒰 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒮𑒹𑒫𑒰 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒪𑒟𑒱𑒢। 𑒍 𑒣𑒳𑒩𑒰𑒝 𑒣𑓂𑒩𑒮𑒱𑒠𑓂𑒡 𑒞𑒲𑒩𑓂𑒟 𑒦𑒼𑒑 𑒂𑒍𑒩 𑒧𑒼𑒏𑓂𑒭 𑒣𑓂𑒩𑒠𑒰𑒞𑒰 𑒕𑒟𑒱। 𑒩𑒳𑒠𑓂𑒩 𑒑𑒨𑒰 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒍𑒯𑒱 𑒚𑒰𑒧 𑒁𑒕𑒱। 𑒍 𑒣𑒻𑒒 𑒢𑒑𑒩 𑒮𑒥 𑒪𑒼𑒏𑒢𑒱 𑒧𑒹 𑒫𑒱𑒐𑓂𑒨𑒰𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒋𑒏 𑒠𑒱𑒢 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒨𑒳𑒫𑒰 𑒍𑒯𑒱 𑒢𑒑𑒩 𑒧𑒹 𑒋𑒪𑒰𑒯। 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒬𑒩𑒲𑒩𑒏 𑒩𑓀𑒑 𑒑𑒼𑒩, 𑒢𑒲𑒏 𑒂𑒿𑒐𑒱 𑒑𑓂𑒩𑒲𑒫𑒰 𑒬𑓀𑒐 𑒮𑒢, 𑒧𑒼𑒙𑒑𑒩 𑒏𑓀𑒡𑒰, 𑒔𑒾𑒛𑓃𑒑𑒩 𑒕𑒰𑒞𑒲 𑒂 𑒣𑒻𑒒-𑒣𑒻𑒒 𑒯𑒰𑒟 𑒕𑒪। 𑒢𑒑𑒩 𑒧𑒹 𑒣𑓂𑒩𑒫𑒹𑒬 𑒏𑓄 𑒮𑒥 𑒠𑒱𑒬𑒰 𑒧𑒯𑒪𑒏 𑒬𑒼𑒦𑒰 𑒠𑒹𑒐𑒻𑒞 𑒍 𑒠𑒹𑒫𑒹𑒬𑓂𑒫𑒩𑒲 𑒧𑒯𑒰𑒪𑒏𑓂𑒭𑓂𑒧𑒲𑒏 𑒠𑒩𑓂𑒬𑒢𑒰𑒩𑓂𑒟 𑒅𑒞𑓂𑒏𑒝𑓂𑒚𑒱𑒞 𑒦𑓄 𑒧𑒝𑒱𑒏𑒝𑓂𑒚-𑒞𑒲𑒩𑓂𑒟 𑒑𑒹𑒪𑒰𑒯 𑒂 𑒍𑒯𑒱 𑒚𑒰𑒧 𑒮𑓂𑒢𑒰𑒢 𑒏𑓄 𑒍 𑒣𑒱𑒞𑒩 𑒏𑒹𑒿 𑒞𑒩𑓂𑒣𑒝 𑒏𑒹𑒪𑒢𑒱। 𑒤𑒹𑒩 𑒧𑒯𑒰𑒧𑒰𑒨𑒰 𑒧𑒯𑒰𑒪𑒏𑓂𑒭𑓂𑒧𑒲 𑒏𑒹𑒿 𑒣𑓂𑒩𑒝𑒰𑒧 𑒏𑓄 𑒦𑒏𑓂𑒞𑒱𑒣𑒴𑒩𑓂𑒫𑒏 𑒮𑓂𑒞𑒳𑒞𑒱 𑒏𑒩𑓄 𑒪𑒑𑒪𑒰𑒯।

𑒩𑒰𑒖𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩 𑒏𑒯𑒪𑒢𑒱- 𑒖𑒱𑒢𑒏𑒰 𑒯𑒵𑒠𑒨 𑒧𑒹 𑒁𑒮𑒲𑒧 𑒠𑒨𑒰 𑒦𑒩𑒪 𑒁𑒕𑒱, 𑒖𑒹 𑒮𑒧𑒮𑓂𑒞 𑒏𑒰𑒧𑒢𑒰𑒏 𑒠𑒹𑒫𑒲 𑒂 𑒁𑒣𑒢 𑒏𑒙𑒰𑒏𑓂𑒭 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒮𑒿 𑒮𑒧𑒮𑓂𑒞 𑒖𑒑𑒞𑒏 𑒮𑒵𑒭𑓂𑒙𑒱, 𑒣𑒰𑒪𑒢 𑒂 𑒮𑓀𑒯𑒰𑒩 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱 𑒍𑒯𑒱 𑒖𑒑𑒢𑓂𑒧𑒰𑒞𑒰 𑒧𑒯𑒰𑒪𑒏𑓂𑒭𑓂𑒧𑒲𑒏 𑒖𑒨 𑒯𑒼𑒋। 𑒖𑒰𑒯𑒱 𑒬𑒏𑓂𑒞𑒱𑒏 𑒮𑒯𑒰𑒩𑒰 𑒪𑓄 𑒏𑒹𑒿 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒂𑒠𑒹𑒬𑒰𑒢𑒳𑒮𑒰𑒩 𑒣𑒩𑒧𑒹𑒭𑓂𑒚𑒲 𑒥𑓂𑒩𑒯𑓂𑒧𑒰 𑒮𑒵𑒭𑓂𑒙𑒱 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱, 𑒦𑒑𑒫𑒰𑒢 𑒁𑒔𑓂𑒨𑒳𑒞 𑒖𑒑𑒞𑒏 𑒣𑒰𑒪𑒢 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱 𑒂 𑒦𑒑𑒫𑒰𑒢 𑒩𑒳𑒠𑓂𑒩 𑒁𑒐𑒱𑒪 𑒫𑒱𑒬𑓂𑒫𑒏 𑒮𑓀𑒯𑒰𑒩 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱 𑒍𑒯𑒱 𑒮𑒵𑒭𑓂𑒙𑒱, 𑒣𑒰𑒪𑒢 𑒂 𑒮𑓀𑒯𑒰𑒩𑒏 𑒬𑒏𑓂𑒞𑒱 𑒮𑒿 𑒮𑒧𑓂𑒣𑒢𑓂𑒢 𑒦𑒑𑒫𑒞𑒲 𑒣𑒩𑒰𑒬𑒏𑓂𑒞𑒱𑒏 𑒯𑒧 𑒦𑒖𑒢 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒲।

हे कमले ! योगी लोकनि अहाँक चरण कमलक चिन्तन करैत छथि । अहाँ अपन स्वाभाविक सत्ता सँ हमर समस्त इन्द्रिय गोचरक विषय केँ जनैत छी । अही कल्पनाक समूह केँ आओर ओकर संकल्प करऽ वाला मन केँ उत्पन्न करैत छी । इच्छाशक्ति ज्ञानशक्ति आ क्रियाशक्ति सब अहीँक रूप अछि । अहाँ परासंविद् रूपिणी छी । अहाँक स्वरूप निष्कल, निर्मल, नित्य, निराकार, निरंजन अन्तरहित, आतंकशून्य, आलम्बहीन आ निरामय अछि । देवी अहाँक महिमाक वर्णन करऽ मे के समर्थ भऽ सकैत अछि । जे षट्चक्रक-क भेदन कऽ अन्तःकरणक बाहरो स्थान मे विहार करैत छथि अनाहत ध्वनि, बिन्दु, नाद आओर कला जिनकर स्वरूप अछि ताहि माता महालक्ष्मी केँ हम नमन करैत छी । हे माता अहाँ अपन पूर्ण चन्द्रमा सँ प्रकटित अमृत राशि केँ बरसबैत छी । अही परा, पश्यन्ती, मध्यमा आ वैखरी नाम सँ वाणी छी । हम अपनेक नमन करैत छी । हे देवी अहाँ जगत्क रक्षाक लेल कतेको रूप धारण कऽ लैत छी । अम्बिके अहीं ब्राह्मी, वैष्णवी आ माहेश्वरी शक्ति छी । वाराही, महालक्ष्मी नारसिंही, ऐन्द्री, कौमारी, चण्डिका, जगत केँ पवित्र करऽ वाली लक्ष्मी, जगन्माता सावित्री, चन्द्रकला आ रोहिणी सेहो अही छी । परमेश्वरी ! अहाँ भक्तक मनोरथ पूर्ण करऽ केँ लेल कल्पलता सन छी । हमरा पर प्रसन्न होउ ।

हुनका एना स्तुति केला पर भगवती महालक्ष्मी अपन साक्षात् स्वरूप धारण कऽ कहलीह - राजकुमार ! हम अहाँ सँ प्रसन्न छी । अहाँ कोनो उत्तम वर माँगु ।

राजपुत्र कहलनि - माँ ! हमर पिता राजा बृहद्रथ अश्वमेध नाम सँ महान यज्ञक अनुष्ठान कऽ रहल छलाह । ओ दैवयोग सँ ग्रस्त भऽ स्वर्गगामी भऽ गेलाह । एहि बीच यूप मे बान्हल हमर घोड़ा केँ, जे पृथ्वीक परिक्रमा कऽ लौटल छल, कोनो राति मे बन्धन काटि कतहुँ दोसर जगह पहुँचा देलक अछि । ओकरा खोज मे हम किछु लोकनि के भेजने छलहुँ मुदा ओसब कतहुँ पता नहि पाबि जखन खाली हाथ लौटि एलाह तखन हम सब ऋत्विजक आज्ञा सँ अहाँक शरण मे आयल छी । देवी ! जौं अहाँ हमरा पर प्रसन्न छी तऽ हमर यज्ञक घोड़ा हमरा मिल जाय जाहि सँ हमर यज्ञ पूर्ण भऽ सके । तखनहि हम अपन पिता महाराजक ऋण उतारि सकब । शरणागत पर दयावान जगज्जननी लक्ष्मी ! जाहि सँ हमर यज्ञ पूर्ण भऽ सके तकर उपाय करू ।

𑒦𑒑𑒫𑒞𑒲 𑒪𑒏𑓂𑒭𑓂𑒧𑒲 𑒏𑒯𑒪𑒢𑒱- 𑒩𑒰𑒖𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩! 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒧𑒢𑓂𑒠𑒱𑒩𑒏
𑒠𑒩𑒥𑒰𑒖𑒰 𑒣𑒩 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒥𑓂𑒩𑒰𑒯𑓂𑒧𑒝 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱 𑒖𑒹 𑒮𑒥 𑒪𑒼𑒏𑒢𑒱 𑒧𑒹
𑒮𑒱𑒠𑓂𑒡𑒮𑒧𑒰𑒡𑒱𑒏 𑒢𑒰𑒧 𑒮𑒿 𑒫𑒱𑒐𑓂𑒨𑒰𑒞 𑒕𑒟𑒱। 𑒍 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒂𑒖𑓂𑒘𑒰 𑒮𑒿 𑒁𑒣𑒢𑒹𑒏
𑒮𑒥 𑒏𑒰𑒧 𑒣𑒴𑒩𑒰 𑒏𑓄 𑒠𑒹𑒞𑒰𑒯।

𑒧𑒯𑒰𑒪𑒏𑓂𑒭𑓂𑒧𑒲 𑒏𑒹𑒿 𑒋𑒢𑒰 𑒏𑒯𑒪𑒰 𑒣𑒩 𑒩𑒰𑒖𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩 𑒍𑒯𑒱 𑒚𑒰𑒧
𑒑𑒹𑒪𑒰𑒯 𑒖𑒰𑒯𑒱 𑒚𑒰𑒧 𑒮𑒱𑒠𑓂𑒡𑒮𑒧𑒰𑒡𑒱 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒪𑒰𑒯। 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒔𑒩𑒝𑒰𑒑𑒞
𑒦𑓄 𑒩𑒰𑒖𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩 𑒔𑒳𑒣𑒔𑒰𑒣 𑒚𑒰𑒜𑓃 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪𑒰𑒯। 𑒞𑒐𑒢 𑒥𑓂𑒩𑒰𑒯𑓂𑒧𑒝 𑒏𑒯𑒪𑒢𑒱
𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒏𑒹𑒿 𑒧𑒰𑒞𑒰𑒖𑒲 𑒋𑒯𑒱 𑒚𑒰𑒧 𑒦𑒹𑒖𑒪𑒢𑒱 𑒁𑒕𑒱। 𑒚𑒲𑒏 𑒁𑒕𑒱, 𑒠𑒹𑒐𑒴
𑒂𑒥 𑒯𑒧 𑒁𑒣𑒢𑒹𑒏 𑒮𑒥 𑒁𑒦𑒲𑒭𑓂𑒙 𑒏𑒰𑒧 𑒮𑒱𑒠𑓂𑒡 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒲। 𑒄 𑒏𑒯𑒱 𑒧𑒢𑓂𑒞𑓂𑒩-
𑒥𑒪𑒹𑒿 𑒥𑓂𑒩𑒰𑒯𑓂𑒧𑒝 𑒮𑒥 𑒠𑒹𑒫𑒞𑒰 𑒏𑒹𑒿 𑒍𑒯𑒱 𑒚𑒰𑒧 𑒐𑒲𑒿𑒔 𑒪𑒹𑒪𑒟𑒱। 𑒩𑒰𑒖𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩
𑒠𑒹𑒐𑒪𑒟𑒱𑒢 𑒖𑒹 𑒞𑒐𑒢 𑒮𑒥 𑒠𑒹𑒫𑒞𑒰 𑒯𑒰𑒟 𑒖𑒼𑒛𑓃𑒱 𑒟𑒩-𑒟𑒩 𑒏𑒰𑒿𑒣𑒻𑒞
𑒍𑒯𑒱 𑒚𑒰𑒧 𑒅𑒣𑒮𑓂𑒟𑒱𑒞 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪𑒰𑒯। 𑒞𑒐𑒢 𑒍 𑒬𑓂𑒩𑒹𑒭𑓂𑒚 𑒥𑓂𑒩𑒰𑒯𑓂𑒧𑒝 𑒮𑒧𑒮𑓂𑒞 𑒠𑒹𑒫
𑒪𑒼𑒏𑒢𑒱 𑒮𑒿 𑒏𑒯𑒪𑒟𑒱𑒢- 𑒨𑒾 𑒠𑒹𑒫𑒞𑒰 𑒪𑒼𑒏𑒢𑒱, 𑒋𑒯𑒱 𑒩𑒰𑒖𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩𑒏
𑒁𑒬𑓂𑒫, 𑒖𑒹 𑒨𑒖𑓂𑒘𑒏 𑒢𑒱𑒧𑒱𑒞 𑒕𑒪, 𑒩𑒰𑒞𑒱 𑒧𑒹 𑒠𑒹𑒫𑒩𑒰𑒖 𑒃𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒔𑒼𑒩𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒏𑒞𑒯𑒳𑒿
𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒚𑒰𑒧 𑒩𑒰𑒐𑒢𑒹 𑒕𑒟𑒱 𑒍𑒏𑒩𑒰 𑒪𑓄 𑒂𑒅।

𑒞𑒐𑒢 𑒠𑒹𑒫𑒞𑒰 𑒪𑒼𑒏𑒢𑒱 𑒧𑒳𑒢𑒱𑒏 𑒏𑒯𑒪𑒰 𑒣𑒩 𑒨𑒖𑓂𑒘𑒏 𑒒𑒼𑒛𑓃𑒰
𑒪𑒰𑒥𑒱 𑒠𑓄 𑒠𑒹𑒪𑒟𑒱𑒢। 𑒞𑒏𑒩 𑒥𑒰𑒠 𑒍 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒖𑒰𑒨 𑒏𑒹 𑒂𑒖𑓂𑒘𑒰 𑒠𑒹𑒪𑒟𑒱𑒢
𑒠𑒹𑒫𑒞𑒰 𑒪𑒼𑒏𑒢𑒱𑒏𑒏 𑒂𑒏𑒩𑓂𑒭𑒝 𑒠𑒹𑒐𑒱 𑒂𑒯𑒹𑒩𑒰𑒨𑒪 𑒁𑒬𑓂𑒫 𑒏𑒹𑒿 𑒣𑒰𑒥𑒱
𑒩𑒰𑒖𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩 𑒧𑒳𑒢𑒱𑒏 𑒔𑒩𑒝 𑒧𑒹 𑒣𑓂𑒩𑒝𑒰𑒧 𑒏𑓄 𑒏𑒯𑒪𑒢𑒱- 𑒯𑒹 𑒧𑒯𑒩𑓂𑒭𑒱 𑒁𑒣𑒢𑒹𑒏
𑒃 𑒮𑒰𑒧𑒩𑓂𑒟𑓂𑒨 𑒂𑒬𑓂𑒔𑒩𑓂𑒨𑒖𑒢𑒏 𑒁𑒕𑒱। 𑒁𑒯𑒲𑓀 𑒋𑒯𑒢 𑒏𑒰𑒧 𑒏𑓄𑒮𑒏𑒻𑒞 𑒕𑒲 𑒠𑒼𑒮𑒩
𑒏𑒹𑒍 𑒢𑒯𑒱 𑒏𑓄 𑒮𑒏𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒥𑓂𑒩𑒰𑒯𑓂𑒧𑒝 𑒯𑒧𑒩 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒩𑓂𑒟𑒢𑒰 𑒮𑒳𑒢𑒪 𑒖𑒰𑒅, 𑒯𑒧𑒩
𑒣𑒱𑒞𑒰 𑒩𑒰𑒖𑒰 𑒥𑒵𑒯𑒠𑓂𑒩𑒟 𑒁𑒬𑓂𑒫𑒧𑒹𑒒 𑒨𑒖𑓂𑒘𑒏 𑒁𑒢𑒳𑒭𑓂𑒚𑒰𑒢 𑒂𑒩𑒧𑓂𑒦 𑒏𑓄 𑒠𑒻𑒫𑒨𑒼𑒑
𑒮𑒿 𑒧𑒩𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒰𑒯। 𑒋𑒐𑒢 𑒡𑒩𑒱 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒬𑒩𑒲𑒩 𑒞𑒣𑒰𑒨𑒪 𑒞𑒹𑒪 𑒧𑒹 𑒮𑒐𑒰𑒏𑒹𑒿
𑒯𑒧 𑒩𑒰𑒐𑒢𑒹 𑒕𑒲। 𑒯𑒹 𑒮𑒰𑒡𑒳 𑒬𑓂𑒩𑒹𑒭𑓂𑒚 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒣𑒳𑒢𑓁 𑒖𑒲𑒫𑒱𑒞 𑒏𑓄 𑒠𑒱𑒁𑒅।

𑒃 𑒮𑒳𑒢𑒱 𑒧𑒯𑒰𑒧𑒳𑒢𑒱 𑒥𑓂𑒩𑒰𑒯𑓂𑒧𑒝 𑒏𑒱𑓀𑒔𑒱𑒞 𑒧𑒳𑒮𑓂𑒏𑒩𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒏𑒯𑒪𑒢𑒱-
𑒔𑒪𑒴 𑒖𑒰𑒯𑒱 𑒚𑒰𑒧 𑒨𑒖𑓂𑒘𑒧𑒝𑓂𑒛𑒣 𑒧𑒹 𑒁𑒯𑒰𑒿𑒏 𑒣𑒱𑒞𑒰 𑒕𑒟𑒱 𑒍𑒯𑒱 𑒚𑒰𑒧 𑒔𑒪𑒴। 𑒍
𑒮𑒱𑒠𑓂𑒡𑒮𑒧𑒰𑒡𑒱 𑒩𑒰𑒖𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒍𑒯𑒱 𑒚𑒰𑒧 𑒖𑒰 𑒏𑒹 𑒖𑒪 𑒁𑒦𑒱𑒧𑒢𑓂𑒞𑓂𑒩𑒱𑒞 𑒏𑒻𑒪𑒢𑒱
𑒂 𑒖𑒪 𑒏𑒹𑒿 𑒬𑒫𑒏 𑒧𑒮𑓂𑒞𑒏 𑒣𑒩 𑒩𑒰𑒐𑒪𑒟𑒱𑒢। 𑒖𑒪 𑒏𑒹𑒿 𑒩𑒰𑒐𑒻𑒞 𑒩𑒰𑒖𑒰 𑒮𑒔𑒹𑒞
𑒦𑓄 𑒅𑒚𑒱 𑒥𑒻𑒮𑒪𑒟𑒱। 𑒤𑒹𑒩𑒱 𑒍 𑒥𑓂𑒩𑒰𑒯𑓂𑒧𑒝 𑒏𑒹𑒿 𑒠𑒹𑒐𑒱 𑒣𑒳𑒕𑒪𑒟𑒱𑒢- 𑒡𑒩𑓂𑒧𑒮𑓂𑒫𑒩𑒴𑒣

𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒏𑒹 𑒕𑒲 ? 𑒞𑒐𑒢 𑒩𑒰𑒖𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩 𑒧𑒯𑒰𑒩𑒰𑒖 𑒮𑒿 𑒮𑒥 𑒫𑒵𑒞𑓂𑒞𑒰𑒢𑓂𑒞 𑒮𑒳𑒢𑒰 𑒠𑒹𑒪𑒐𑒱𑒢
𑒩𑒰𑒖𑒰 𑒣𑒳𑒢𑒩𑓂𑒖𑒲𑒫𑒱𑒞 𑒠𑒱𑒫𑓂𑒨 𑒥𑒰𑒪𑒰 𑒥𑓂𑒩𑒰𑒯𑓂𑒧𑒝 𑒏𑒹𑒿 𑒢𑒧𑒢 𑒏𑓄 𑒣𑒳𑒕𑒪𑒐𑒱𑒢 - 𑒥𑓂𑒩𑒰𑒯𑓂𑒧𑒝.
𑒏𑒼𑒢 𑒣𑒳𑒝𑓂𑒨 𑒮𑒿 𑒁𑒣𑒢𑒹𑒏 𑒄 𑒁𑒪𑒾𑒏𑒱𑒏 𑒬𑒏𑓂𑒞𑒱 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒣𑓂𑒞 𑒦𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰
𑒋𑒢𑒰 𑒏𑒯𑒪𑒰 𑒣𑒩 𑒥𑓂𑒩𑒰𑒯𑓂𑒧𑒝 𑒧𑒡𑒳𑒩 𑒫𑒰𑒝𑒲 𑒧𑒹 𑒏𑒯𑒪𑒢𑒱 - 𑒩𑒰𑒖𑒢𑓂 ! 𑒯𑒧 𑒮𑒠𑒞𑒱
𑒂𑒪𑒮𑓂𑒨 𑒩𑒯𑒱𑒞 𑒦𑓄 𑒑𑒲𑒞𑒰𑒏 𑒥𑒰𑒩𑒯𑒧 𑒁𑒡𑓂𑒨𑒰𑒨𑒏 𑒖𑒣 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒲 𑒖𑒰𑒯𑒱 𑒮𑒿
𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒄 𑒬𑒏𑓂𑒞𑒱 𑒧𑒱𑒪𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒂 𑒁𑒣𑒢𑒹𑒏 𑒖𑒲𑒫𑒢 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒣𑓂𑒞 𑒦𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒄
𑒮𑒳𑒢𑒱 𑒥𑓂𑒩𑒰𑒯𑓂𑒧𑒝 𑒮𑒯𑒱𑒞 𑒩𑒰𑒖𑒰 𑒥𑓂𑒩𑒯𑓂𑒧𑒩𑓂𑒭𑒲 𑒮𑒿 𑒑𑒲𑒞𑒰𑒏 𑒥𑒰𑒩𑒯𑒧 𑒁𑒡𑓂𑒨𑒰𑒨𑒏 𑒁𑒡𑓂𑒨𑒨𑒢
𑒏𑒹𑒪𑒢𑒱। 𑒖𑒏𑒩𑒰 𑒧𑒰𑒯𑒰𑒞𑓂𑒧𑓂𑒨 𑒮𑒿 𑒮𑒥𑒯𑒏 𑒮𑒠𑓂𑒑𑒞𑒱 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪। 𑒠𑒼𑒮𑒩 -
𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒖𑒲𑒫 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒑𑒲𑒞𑒰𑒏 𑒣𑒰𑒚 𑒮𑒿 𑒣𑒩𑒧 𑒧𑒼𑒏𑓂𑒭 𑒣𑒰𑒥𑒱 𑒪𑒹𑒪𑒟𑒱।

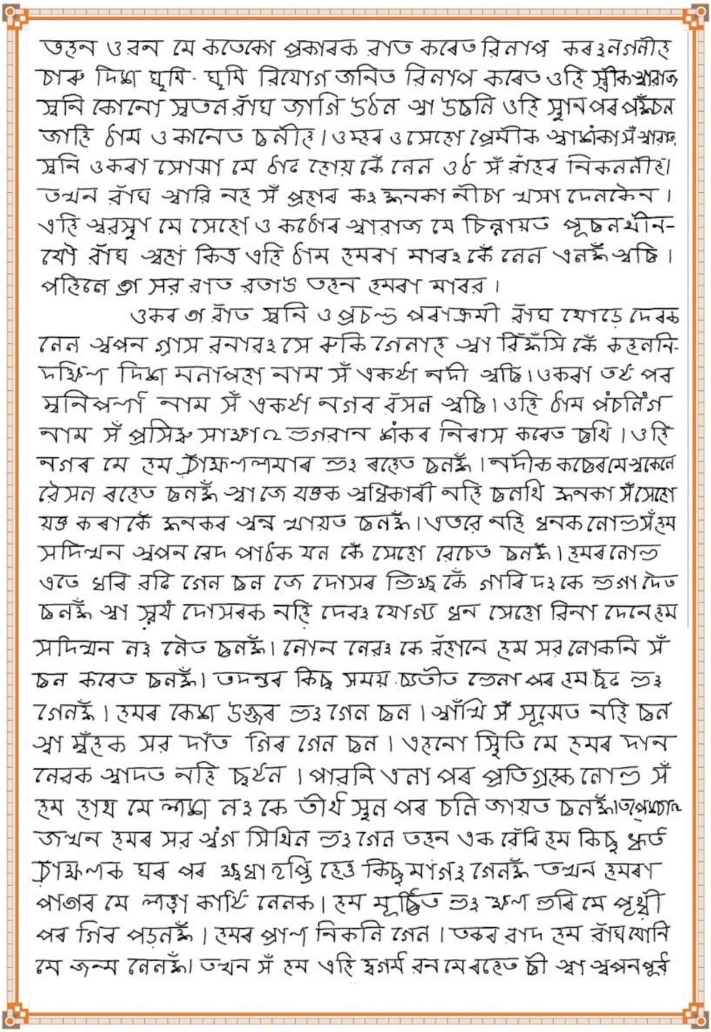
0



(𑒢𑒰𑒧- 𑒣𑒩𑒧𑒰𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒪𑒰𑒪 𑒏𑒩𑓂𑒝 (𑓑𑓙𑓓𑓐) 𑒣𑒱𑒞𑒰- 𑒮𑓂𑒫° 𑒣𑒩𑒬𑒳𑒩𑒰𑒧 𑒪𑒰𑒪 𑒏𑒩𑓂𑒝, 𑒑𑒰𑒧- 𑒒𑒼𑒒𑒮𑒥, 𑒣𑒼°- 𑒥𑒱𑒩𑒾𑒪, 𑒠𑒩𑒦𑓀𑒑𑒰, 𑒥𑒱𑒯𑒰𑒩-𑓘𑓔𑓗𑓒𑓐𑓓 𑒬𑒱𑒏𑓂𑒭𑒰 - 𑒮𑓂𑒢𑒰𑒞𑒏𑒼𑒞𑓂𑒞𑒩, CAIIB, 𑒮𑒹𑒫𑒰𑒢𑒱𑒫𑒵𑒞𑓂𑒞 𑒣𑓂𑒩𑒥𑒢𑓂𑒡𑒏, 𑒮𑒹𑒢𑓂𑒙𑓂𑒩𑒪 𑒥𑒻𑓀𑒏 𑒂𑒤 𑒃𑓀𑒛𑒱𑒨𑒰)

𑒑𑒲𑒞𑒰 𑒧𑒰𑒯𑒰𑒞𑓂𑒧𑓂𑒨
(𑒣𑒠𑓂𑒧 𑒣𑒳𑒩𑒰𑒝 𑒅𑒞𑓂𑒞𑒩 𑒐𑒝𑓂𑒛)
𑒞𑒹𑒩𑒯𑒧 𑒁𑒡𑓂𑒨𑒰𑒨

𑒬𑓂𑒩𑒲 𑒧𑒯𑒰𑒠𑒹𑒫 𑒖𑒲 𑒏𑒯𑒪𑒢𑒱- 𑒣𑒰𑒩𑓂𑒫𑒞𑒲! 𑒂𑒥 𑒞𑒹𑒩𑒯𑒧 𑒁𑒡𑓂𑒨𑒰𑒨𑒏 𑒁𑒑𑒰𑒡 𑒧𑒯𑒱𑒧𑒰𑒏 𑒫𑒩𑓂𑒝𑒢 𑒮𑒳𑒢𑒴। 𑒖𑒹𑒏𑒩𑒰 𑒮𑒳𑒢𑒪𑒰 𑒮𑒿 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒥𑒛𑓃 𑒣𑓂𑒩𑒮𑒢𑓂𑒢 𑒯𑒼𑒨𑒥। 𑒠𑒏𑓂𑒭𑒱𑒝 𑒠𑒱𑒬𑒰 𑒞𑒳𑓀𑒑𑒦𑒠𑓂𑒩𑒰 𑒢𑒰𑒧 𑒮𑒿 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒣𑒻𑒒 𑒢𑒠𑒲 𑒁𑒕𑒱। 𑒍𑒏𑒩𑒹 𑒏𑒱𑒢𑒰𑒩𑒹 𑒯𑒩𑒱𑒯𑒩𑒣𑒳𑒩 𑒢𑒰𑒧 𑒮𑒿 𑒩𑒧𑒝𑒲𑒨 𑒢𑒑𑒩 𑒥𑒮𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒍𑒯𑒱 𑒚𑒰𑒧 𑒮𑒰𑒏𑓂𑒭𑒰𑒞 𑒦𑒑𑒫𑒰𑒢 𑒯𑒩𑒱𑒯𑒩 𑒫𑒱𑒩𑒰𑒖𑒧𑒰𑒢 𑒕𑒪𑒰𑒯 𑒖𑒱𑒢𑒏𑒰 𑒠𑒩𑓂𑒬𑒢𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒮𑒿 𑒣𑒩𑒧 𑒏𑒪𑓂𑒨𑒰𑒝𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒣𑓂𑒞𑒱 𑒯𑒼𑒨𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒯𑒩𑒱𑒯𑒩𑒣𑒳𑒩 𑒧𑒹 𑒯𑒩𑒱𑒠𑒲𑒏𑓂𑒭𑒱𑒞 𑒢𑒰𑒧 𑒮𑒿 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒬𑓂𑒩𑒼𑒞𑓂𑒩𑒱𑒨 𑒥𑓂𑒩𑒰𑒯𑓂𑒧𑒝 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒪𑒰𑒯 𑒖𑒹 𑒞𑒣𑒮𑓂𑒨𑒰 𑒂 𑒮𑓂𑒫𑒰𑒡𑓂𑒨𑒰𑒨 𑒧𑒹 𑒮𑓀𑒪𑒑𑓂𑒢 𑒂 𑒫𑒹𑒠𑒏 𑒣𑒰𑒩𑒑𑒰𑒧𑒲 𑒫𑒱𑒠𑓂𑒫𑒰𑒢 𑒕𑒪𑒰𑒯। 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒮𑓂𑒞𑓂𑒩𑒲 𑒕𑒪𑒻𑒢 𑒖𑒱𑒢𑒏𑒰 𑒮𑒥 𑒪𑒼𑒏𑒢𑒱 𑒠𑒳𑒩𑒰𑒔𑒰𑒩𑒰 𑒏𑒯𑒱 𑒣𑒳𑒏𑒰𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒪𑒟𑒱𑒢। 𑒢𑒰𑒧 𑒮𑒢 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒏𑒩𑓂𑒧 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒕𑒪𑒢𑒱। 𑒍 𑒮𑒠𑒱𑒐𑒢 𑒣𑒞𑒱𑒏𑒹𑒿 𑒠𑒳𑒩𑓂𑒫𑒰𑒔𑓂𑒨 𑒏𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒪𑒟𑒱𑒢। 𑒣𑒞𑒱 𑒮𑒿 𑒮𑒧𑓂𑒥𑒢𑓂𑒡 𑒩𑒰𑒐𑒃𑒫𑒰𑒪𑒰 𑒖𑒞𑒹𑒏 𑒪𑒼𑒏𑒢𑒱 𑒒𑒩 𑒣𑒩 𑒂𑒥𑒻𑒞 𑒕𑒪𑒟𑒱𑒢 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒮𑒥𑒏𑒹𑒿 𑒛𑒰𑒿𑒙𑒻𑒞 𑒕𑒪𑒟𑒱𑒢 𑒂 𑒁𑒣𑒢𑒹 𑒮𑓂𑒫𑒨𑓀 𑒏𑒰𑒧𑒼𑒢𑓂𑒧𑒞𑓂𑒞 𑒢𑒱𑒩𑒢𑓂𑒞𑒩 𑒫𑓂𑒨𑒦𑒱𑒔𑒰𑒩𑒲 𑒮𑓀𑒑 𑒩𑒧𑒝 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒪𑒟𑒱। 𑒋𑒏 𑒠𑒱𑒢 𑒢𑒑𑒩𑒏 𑒣𑒳𑒩𑒫𑒰𑒮𑒲 𑒮𑒿 𑒦𑒫𑒢 𑒍𑒧𑓂𑒯𑒩 𑒍𑒧𑓂𑒯𑒩 𑒂𑒥𑒻𑒞 𑒖𑒰𑒨𑒞 𑒪𑒼𑒏𑒢𑒱 𑒏𑒹𑒿 𑒠𑒹𑒐𑒱 𑒍 𑒢𑒱𑒩𑓂𑒖𑒢 𑒫 𑒠𑒳𑒩𑓂𑒑𑒧 𑒫𑒢 𑒧𑒹 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒪𑒹𑒪 𑒮𑓀𑒏𑒹𑒞 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒢 𑒥𑒢𑒰 𑒪𑒹𑒢𑒹 𑒕𑒪𑒟𑒱। 𑒋𑒏 𑒩𑒰𑒞𑒱𑒏 𑒮𑒧𑒨 𑒧𑒹 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒏𑒰𑒧𑒲 𑒏𑒹𑒿 𑒢𑒯𑒱 𑒣𑒰𑒥𑒱 𑒍 𑒒𑒩𑒏 𑒏𑒹𑒥𑒰𑒛𑓃 𑒐𑒼𑒪𑒱 𑒢𑒑𑒩 𑒮𑒿 𑒥𑒰𑒯𑒩 𑒍𑒯𑒱 𑒮𑓀𑒏𑒹𑒞 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒢 𑒣𑒩 𑒔𑒪𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒲𑒯। 𑒞𑒐𑒢 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒔𑒱𑒞𑓂𑒞 𑒏𑒰𑒧 𑒮𑒿 𑒧𑒼𑒯𑒱𑒞 𑒦𑓄 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪𑒻𑒢। 𑒍 𑒋𑒏-𑒋𑒏 𑒏𑒳𑓀𑒖 𑒧𑒹 𑒂 𑒮𑒥 𑒑𑒰𑒕𑒏 𑒢𑒲𑒔𑒰 𑒖𑒰 𑒏𑒹𑒿 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒣𑓂𑒩𑒱𑒨𑒞𑒧𑒏 𑒐𑒼𑒖 𑒏𑒩𑒃 𑒪𑒑𑒪𑒲𑒯 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒮𑒥 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒢 𑒣𑒩 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒣𑒩𑒱𑒬𑓂𑒩𑒧 𑒫𑓂𑒨𑒩𑓂𑒟 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪𑒢𑒱। 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒣𑓂𑒩𑒱𑒨𑒞𑒧𑒏 𑒠𑒩𑓂𑒬𑒢 𑒢𑒯𑒱 𑒦𑒹𑒪𑒢𑒱



पाप केँ स्मरण कए कखनहुँ धर्मिष्ठ महात्मा, यति, साधु पुरुष आ सती स्त्री केँ नहि खायत छी। पापी, दुराचारी आ अनर्थी स्त्री केँ हम भक्ष्य बनबैत छी। अनर्थी भेलाक कारण अहाँ अवश्य हमर ग्रास बनब।

एतबा कहि ओ अपन कठोर नह सँ हुनकर शरीरक टुकड़ा-टुकड़ा कए खा गेलाह। तकर बाद यमराजक दूत ओहि पापिनी केँ संयमनीपुरी लए गेल। ओहि ठाम यमराजक आज्ञा सँ हुनका कतेको बेरि विष्ठा मूत्र आ रक्त सँ भरल भयानक कुण्ड मे गिरेलथि। कतेको कोटि कल्प धरि ओहि मे रखलाक बाद ओहि ठाम सँ लए के सौ मन्वन्तर धरि रौरव नरक मे राखलनि। फेरि चारू दिश घुमि कए के दीन भाव सँ कानैत ओहि पापिनी केँ ओहि ठाम सँ खिंच कए दहनानन नाम सँ नरक मे गिराओल गेल। ओहि समय हुनकर केश खुजल छल शरीर भयानक देखि पड़ैत छल। एना घोर नरकक यातना भोगलाक उपरान्त ओ महापापिनी एहि लोक मे आबि चाण्डाल योनि मे जन्म लेलीह। चाण्डालक घर मे सब दिन पूर्वजन्मक अभ्यास सँ पूर्ववत् पाप कर्म मे प्रवृत्त रहैत छलीह। फेरि हुनका कोढ़ आ राजयक्ष्मा रोग भए गेलनि। आँखि सँ पीड़ित भए गेलीह। किछु समयक बाद ओ अपनय निवास स्थान चलि गेलीह। जाहि ठाम भगवान शिवक अन्तःपुरीक स्वामिनी जम्भकादेवी विराजमान छलीह। ओहि ठाम ओ वासुदेव नाम सँ एकटा पवित्र ब्राह्मणक दर्शन केलनि जे सदिखन गीताक तेरहम अध्यायक पाठ करैत छलाह। हुनका मुख सँ गीताक पाठ सुनैत ओ चाण्डाल शरीर सँ मुक्त भए गेलीह आ दिव्य देह धारण कए स्वर्गलोक चलि गेलीह।

—— o ——

२.२.आचार्य रामानंद मंडल-मिथिला:समाज सापेक्ष प्रीति (मिथिला पत्र विमर्श)



आचार्य रामानंद मंडल- मिथिला:समाज सापेक्ष प्रीति (मिथिला पत्र विमर्श)

मिथिला:समाज सापेक्ष प्रीति (मिथिला पत्र विमर्श)

सच स पहिल रामायणकालीन मिथिला पर।

प्रथम कथा क अनुसार मिथि करट। उनका दास राज म रहैत हलन आ मिथि नाम क शासन क्षेत्र क परिवार सहित पिबैत हलन। काना मिथिला क समाज राज न अपना क हमशा पित मानैत हलन। मिथि नाम क प्रजु मानैत रहलन। नाम उत्रिय ग करट शुद्ध रहलन।

मिथिला म समाज राज क अराज दिखैत हय।

शासन कथा। प्रसंग छय राम आ सुग्रीव क मित्रता पर। अहि मित्रता मे सुग्रीव क बड़ भाइ बालि मारल जाइ छथि। मित्रता क बुनियाद दुश्मन बड़ भाइ बालि क छल। जे मित्र राम करैत छला। बाद मे राम क पत्नी क खोज मे मित्र सुग्रीव करैत छला। मित्र सुग्रीव मित्र राम क प्रभु स संबोधित करैत छला। आ दास भाव मे रहैत छला। बालि क मृत्यु क बाद हुनकर पत्नी अर्थात भौजी तारा स विआह करैत छल आ किष्किन्धानगर क राजा बनैत छला। मित्रता मे समान भाव क अभाव परिलक्षित होइ छय।

महाभारतकालीन प्रथम कथा। सुदामा आ कृष्ण। मित्र ब्राह्मण सुदामा क मित्र यादव कृष्ण सिंहासन पर बैठल छल आ भीख माँगैत छला। कृष्ण क रानी सत्यभामा आ रुक्मिणी बेना हौंकैत छला।

शासन कथा मित्रता क एकटा मिसाल छय अंगराज कर्ण आ सुयोधन क मित्रता। शुद्र कर्ण क वीरता स प्रभावित होक अंगराज्य क राजा बना देल जाइत छय। आ मित्रता क बलिवेदी पर कर्ण अपन प्राण न्योछावर कर देल छला। मित्रता मे समान भाव दिखाइ पड़ैय छय।

जौं वर्ण-व्यवस्था क अनुसार विमर्श कैल जाय त उच्च वर्ण क निम्न वर्ग भीख माँगैत छला। बाद मे क्षत्रिय राम आ शुद्र करैट होय ता ब्राह्मण सुदामा आ यादव (शुद्र) कृष्ण। भगवान कृष्ण क साक्षात मानल जाइत छय। महाभारत क कथा प्रसंग मे हुनकर

जाति क लक मजाक उड़ायल गेल छल। कर्ण (अपमानित अप्रिय) आ सुयोधन दुनू अप्रिय। गान खाय क कोनो प्रसंग न छल।

जौं भगवान आ भक्त क रूप म निर्णय कैल जाय त भगवान राम आ भक्त केवट। भगवान राम बड़ आ भक्त केवट नीच दिखाई पड़ैय छल। भगवान कृष्ण आ भक्त सुदामा क रूप म भगवान स बड़ भक्त दिखाई पड़ैय छल। मित्र सुदामा मित्र कृष्ण क नजदीक नीच न दिखाई पड़ैय छल। कर्ण आ सुयोधन क बीच भगवान आ भक्त क कोनो संबंध न छल। कोनो ऊंच-नीच न छल। मित्रता क समान भाव दिखाई पड़ैय छल।

निष्कर्ष: राम आ केवट, कृष्ण आ सुदामा। भगवान आ मानव क बीच मित्रता छल। परंतु कर्ण आ सुयोधन क बीच मानव-मानव क मित्रता छल।

मित्रता म समान भाव आवश्यक तत्व छल।

समान सामे प्रीति।

-आचार्य रामानंद मंडल सामाजिक चिंतक सह साहित्यकार सीतामढ़ी।

-आचार्य रामानंद मंडल सामाजिक चिंतक सीतामढ़ी, *सेवानिवृत्त प्रधानाध्यापक, माता-चन्द्र देवी, पिता-स्व०राजवंश मंडल, पत्नी-प्रमिला देवी, जन्म तिथि-01 जनवरी 1960 पता- ग्राम-...सी (रसायन*

शास्त्र), एम ए (हिन्दी)। रुचि- साहित्यिक, मैथिली-हिन्दी कविता - कहानी लेखन आ आलेख। प्रकाशित पोथी - मैथिली कविता संग्रह रासा क न बांटिया। २०२२ प्रकाशित रचना - समिया कविता संग्रह पोथी - जनक नंदिनी जानकी आ शौर्य गाथा। २०२२ पत्रिका -मिथिला समाज, घर -बाहर आ अपूर्वा (मैसाम)। अखबार -दैनिक मैथिल पुनर्जागरण प्रकाश। सामाजिक-सामाजिक चिंतन, दायित्व- पूर्व जिला प्रतिनिधि, प्राथमिक शिक्षक संघ, डुमरा, सीतामढ़ी। स्थायी पता- ग्राम-पिपरा विशनपुर थाना-परिहार जिला-सीतामढ़ी। वर्तमान पता- पिपरा सदन,मुरलियाचक वार्ड-04 सीतामढ़ी पोस्ट-चकमहिला जिला-सीतामढ़ी राज्य-बिहार पिन-843302 मो नं-9973641075 ईमेल- ramanandmandal001@gmail.com

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.३.लालदेव कामत-बदलैत गाम/ संस्कृतक विद्वान डॉ. रविन्द्र नारायण चौरसिया/ मैनेजर स्व०मधुसूदन रौतानी/ अमर शहीद रामफल मंडल/ बहिर्मुखी कामैत कौम/ सूखल मन गनसल आँखि



लालदेव कामत-बदलैत गाम/ संपूर्णक विज्ञान डा. नविन्द्र नारायण चौरसिया/ मैनजन स्व0मधुसूदन रंजानी/ अमन शहीद नामरूल मंडल/ बहिर्मुखी कामैत कौम/ सूखल मन पनसल आँखि

१

बदलैत गाम



कालीदास विद्यापति साइंस कॉलेज, उच्चै0 - बनीपट्टी (मधुबनी) कन प्रधानाचार्य डा0 शुभ कुमार वर्णवाल नविन ६१ गोट मैथिली काव्यक संग्रह " बदलैत गाम " पढवाक सुअवसर भेटल। एहि १४३ पृष्ठ 'क २०२२ ई0 मे पल्लवी प्रकाशनक पोथीक दाम तीन सय टाका अछि। सद्यप्रकाशित एहि मैथिली भाषा मे पोथी क' आवरण पृष्ठ पर ग्रामीण उन्नक पतिवेश आकर्षक देखाइछ। पोथीक पछिला कौरन पर कविवर महोदय क सचित्र छवि - व्यक्तित्वक परिचय छहम देल गेल छैक। श्रीमान वर्णवाल जी सन् २००१ सँ मैथिली कविता नवनाक दिस उन्मुखलाह,ताहि सँ पूर्व उा हिन्दी भाषा उन्नम काज कनैत धनि हिन्दी कविता संग्रह " शुभ कल्प " पोथी निकालि चुकल छलाह। उाना वर्णवाल जी भूगोल विषयक प्राध्यापक नहल छथि। पँ हिनक नव कविता म भूगोलीय - खगोलीय छँटा देखवाक जान कनी। सद्यह हिनका कविता म छन्द,अलंकार, नस पँ छन्द्धि मुदा तुकवंदी सव0ाम नहिं मिलैत छैक। पैया पहिल

मातृभाषाम यात्री ' बदलैत गाम ' एक अभिनव प्रयोगक दस्तावेज थीक। गाम समाजमे जे परिदृश्य अखनो बाँचल अछि आओर जेठमी सभ्यता सँ सम्पृक्त नहिं भेल अछि से विशद लोकाचार मादे कविता गढ़िकय कविवर महोदय साहित्य जगत मे पैघौत पौलनि अछि। बदलैत गाम 'क रचनाकार डा० वर्णवाल जीक संदर्भ मे अपना शुभाशंसामे कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय क कुलपति श्री शशि नाथ झा लिखने छथि - "मैथिली कविता संग्रह मे डा० शिव कुमार वर्णवाल क' स्वरचित विविध भाव'क कविता संग्रहीत अछि । विशेष कय गाम घरक माँटि पानिक सौरभ सँ ई मह-मह क' रहल अछि।" किछु कविता के ओ विशेष रूप सँ सजौलनि अछि,यथा-: राष्ट्रभावना, अतिथि सत्कार, मिथिला,गंगा, पर्यावरण,कल्पना,सुनामी, दाही, रौदी , भूकम्प, आतंकवाद। मधुबनी सँ प्रा० जयी. सिंह जी अपन शुभाशीष मेँ कहैत छथि- " डा० शिव कुमार वर्णवाल जीक कविता मे ज्वलंत समस्या स्वयं रूप ल' लैत छैक। भूगोलविद् डा० वर्णवाल जी सँ समाजक भूगोल दूर नहिँ भय सकैछ। समस्याक ध्वन्यात्मक आ गीतात्मक अभिव्यक्ति हिनक कविताक विशेषता अछि। आधुनिक सभ्यता ग्राम संस्कृति केँ निगलैक प्रयास करैत छैक। एखनो संवेदनशील व्यक्ति गामकेँ नहिं बिसरि सकैत अछि।" लेखक ई एकपटिया पीपरक छाँव ! कैया बिसरि गेलहुँ अपन ई गाँव !! अपन शुभकामे प्रा०(डा०) टुनटुन झा 'अचल ' सेवानिवृत्त विश्वविद्यालय प्राचार्य एवं विभागाध्यक्ष स्नातकोत्तर भूगोल विभाग लनामिविवि० दरभंगा सह पूर्व अध्यक्ष , विज्ञान - मानविकी भूगोल परिषद - पटना लिखैत छथि -: ' बदलैत गाम '

काव्य संग्रह म अधिकांश कविता गेय अछि। वस्तुत: कविता जखन संगीत कर वाणीम लयट दल जाइत अछि त' अति माधुर्यक संग लोकप्रिय बनि जाइत अछि । हम हृदय सँ आशिर्वाद दैत अभिव्यक्त क' रहल छी जे डॉ० ' शुरु' माँ मैथिलीक' सेवा म निरन्तर अपन लेखनी चलबैत रहथि ताकि वर्तमान आ भविष्यक पीढ़ी लाभान्वित होइत रहत। बरैबरि.......बरैबरि.... ! कविक ' पावन मिथिला धाम ' पाठन करैत अपन पाठक देख सकब जे ओहि धनाधाम पर अतीतम जनक, याज्ञवल्क्य, भारती - मण्डन , उदयन, विद्यापति, शिव रूप उगना, अयाची , राष्ट्रकवि दिनकर, जगजननी सीया, दीना-भद्री, लोरिक दूलना, राजा सलहेसक गौरवगाथा सँ भरल अछि। कवि पाँति ओ तरहेँ रचलनि अछि। यथा- .... पग-पग पोखरि ताल- तलैया नामी माछ - बखान सुननि वाला सुननि शाला पान भरल मुख आम । पतम प्रिय ....!! अपना देशम ७०प्रतिशत कृषि काजम संलग्न कृषक आ खेतिहर मजदूरक अवदशा पर चिंता करैत कविजी ' पीड़ा - दर्द किसानक मूख' कविता 'क रचना कयलनि। ओहिम किसानक प्रमुख समस्या आ ताकर समाधान धनि नखांकित क' सरकारक ध्यानाम ०।८ करैत छथि। ओहिक पाँति द्रष्टव्य -: .... खेती देशक रीढ़ कहाबैछ अछि किसान देशक कंगाल; मृत्यु सँ दबल आत्महत्या करैछ घर - गृहस्थिक हाल - बहाल। .... कवि जी ' नारि - सुखानक बैरन मिथिला ' कविताम समाजक आह्वान करैत कहैत छथिन; सब मीलि कवियौ निदान यौ। ओहिम पाँति देलनि अछि - .... खेती-बाड़ी सब पिछड़लए हाल- बेहाल किसान यौ;

ढाकवा - ढुनका,बूचनी- लुटनी जुखल सुगल मचान यो। नाढि ....। कवि जी ' नशा मुक्त अभियान यो' कविताम विहान कँ नशा मुक्त करयम सबक आह्वान करैत विन्ती कयलनि अछि। एतुका नवतुरिया धनि रंग , गांजा,खैनी - बिडी, सिगरेट ,गुटका ,ताडी - दारू, अन्य मादक द्रव्य उपयोग करैत रुग्न र' जाइछि। निशाबाज सामाजक कानमेँ नीक लोक अपन नम्हा यश प्रतिष्ठा कोना बचाएत,किसाक गँ गनावी अवैत जाइत यथिकक दख वहु तनरुक उठापटांग करैछ। आब दखाबटीम नियमतः नशा मुक्त छैथी। याँति-: ...,............... यैघ - यैघ ज हाइछि बमारी नशा मात्र कर सबन सँ प्राण यखरु उमन सँ यहिन रुनै उठि जायत जीवन सँ ! दश रुमन गांधी - गौतम कर दिव्य महावीर स्थान यो! दून गरीबी ....। हम आब हिनक दासन नसगन कविता याथी " रूसल प्रकृति " पढयक ताकम छी!
२

संस्कृतक विद्वान डा. रविन्द्र नारायण चौरसिया

संस्कृतक विद्वान डा. रविन्द्र नारायण चौरसिया कर याथी ल. ना. मिथिला विश्वविद्यालयक लोक सूचना अधिकारी रूपम विहान सरकार आ अनेक गैरसरकारी संस्थानसँ सम्मानित डा. रविन्द्र नारायण चौरसियाजीक जन्म 2 जनवरी 1970 ई.मे श्री सूर्य नारायण चौरसियाजी आ श्रीमती कपूरी देवीजीक घर भेल छल सी. एम. कालेज दरभंगाक संस्कृत विभागाध्यक्ष आ एन. एस. एस. तथा रेड रिबन क्लब मिथिला विश्वविद्यालयक कार्यक्रम समन्वयक छैथ। हिनक दर्जनसँ बेसी शोध आलेख प्रकाशित भेल छैन। ओ अखिल भारतीय प्राच्य

विद्या सम्मेलन आ अ.भा. दर्शन परिषदक संगहि इण्डियन सोसाइटी फॉर गाँधियन स्टडीज कर आजीवन सदस्य छथि। हिनक श्लोक प्रकाशन लक्ष्मीसागर-दरभंगासँ 2011 ईस्वीमे पहिल हिन्दी पोथी 'यज्ञकथा' प्रकाशित भेल अछि। ई अपन सासु श्वसुर परमादरणीय कल्याणीजी आ बालेश्वर चौरसियाजी समर्पण करैत छथि। 128 पृष्ठक अइ ग्रन्थक दाम 250 टाका निर्धारित रखल छैक। महिलाकेँ आदरणीया आ पूजनीय कहल गेल छन। स्त्रीकेँ पुरुषक सहायिका सेहो कहल जाइत छै। प्रस्तुत कृति नारी विमर्श एवम् महिला सशक्तिकरणक अइ युगमे यज्ञकथाक प्राचीन चरित्रक आधुनिक प्रासंगिकताक बोध करबैत अछि। आर्षकाव्य रामायण तथा महाभारतमे भारतीय वाङ्मय कर विचारणीय अवधारणा थिक। कथा कमनीया होइत स क लऽ जा सकैछ? एहन चिन्ता निOाह मात्र बापुक मनमे रहैत छैक। कथा कमनीया भेलति बा इयं नारयति कथा वैदिकमे दुहिता शब्द देल गेल। श्रुतिमे ब्रह्मांडकेँ यज्ञमण्डल युक्त कहल गेल। जेना- स्वयं भूमण्डल, सोममण्डल, आदित्य मण्डल, चन्द्रमण्डल आ पृथ्वीमण्डल। सामनादित्या बलिनां शब्द, स्पर्श, रूप, रस आ गन्ध ई पञ्चतन मात्रा छी। शब्दसँ आकाशक सम्बन्ध, स्पर्शसँ वायु, रूप अग्निसँ युक्त, रस-जलसँ आ गन्ध - पृथ्वीसँ सम्बद्ध छै। हिन्दू धर्मग्रन्थ रामायण आ महाभारतमे पञ्चनारीक चरित्र विश्लेषण ई कएल गेल अछि स आध्यात्मिकता आ मनोवैज्ञानिकता कर आधारपर भेल छन्। आधुनिक ज्ञान बोध आ चिन्तन पद्धतिक आगा एकर आन्तरिक आडान नारी चरित्रक पल्लवन परम प्रशंसनीय होएत। रामायण सूर्यक भनति महाकाव्य अइ लल कहल जाइत छै;

किछुक मे अहूँ सूर्यवंशी श्रीनाम कन गाथा वर्णित छैन । नानीक तीन पात्र अहिल्या, ताना आ मंदोदनी नामायणकालिन विशेष महानानीकेँ अधिक कहल गेल; किछुक मेँ एकन नायिका कृष्णाद्रौपदी अग्नि संभूता वैथ अर्क ते अग्नि काव्य कहल गेल छन । सब प्रकाशित अछि 'पञ्चकन्या' पाँचोम द्रौपदी कुन्ती आ द्रौपदी महानानी कालीन विशेष । साधना - इच्छा, स्नान तथा क्रियाक रूपम प्रात:स्मनणीया अहिल्या, ताना, मन्दोदनी, कुन्ती आ द्रौपदीसन पञ्चकन्याक पञ्चनानि सदा कहि सक छी; कानण पाँचो विवाहिता छथि। उपनाक पाँचो कन्या मर्यादापुरूषोत्तम प्रभु श्रीनाम आ श्रीकृष्ण बहु भगवानक असीम कृपा भेटलैन! धैनि अहल्या, द्रौपदि, ताना, कुन्ती, मन्दोदनि धन्या.! प्रभु की पनम अनुग्रह भाजन पावन प पाँचो कन्या !! अहूँ आदर्श पाँचोक महिमा मण्डित नाममात्र उच्चानण वा स्मनण कलास महापापक दोषमुक्त होइत अछि। उपनाक पाँचो देवीकेँ पनपुरूष कलंकित कयैम अपन वासनाक आगि आ विष्ठ इच्छाक हनवपूर्वक स्त्रीत्व नष्ट कनवाक धृष्टताक कानणेँ बलात् भोगी महिला जानल जाइत अछि। गँभ दिनका सभकेँ मन पवित्र नहल, कर्म अपवित्र नहि मानल गेल छैन । सदा आदर्श नानी रूपं समाजक गिनती होइछी, ताइल अत्यन्त सुचिता छथिन । कायन पूरूषक गुरूभोगीक सन्तान वंश पंचकन्याक नाम जपैत प्रभाति गबैत अछि।

३

मैनजन स्व०मखसूदन रुंतानी

मैनजन स्व०मखसूदन रुंतानी जीक पूर्व स्मनद्ध सियेल जिलाक मनौना (वलही)प्रखंड अन्तर्गत एकटा प्रसिद्ध गाम अछि:-गढ़िनिया। डाही गामक स्व०संजीत रुंतानी आ सानियां दवीक घन "वौआ" कन जन्म रुल नहय। ६०शालक उमनम अयना कुलहनिया यंवायत सँ सनयंच यदक यूर्व उम्मीदवान (१९१८)गादि सँ यहिल जगना लाकनाव यार्टीक मैनजन दिवंगत मकसूदन रुंगानीजी यनायद्वाक वर्चित माध्ययंच नहथि। हुमना गामक वद्गतां यूनान वुजुर्ग यथा-नामजी वावा मुखियाजी,वद्वन कामति,लखन मास्टनजी,विकनी कामत आदिसँ वनी घूलल-मिलल नहथि। सूनकन संवंधी सम्यनकीय लाक हूलयनास,विद्वान विधान सभा क विरिन्न मगदागगाम जना कि सुनियाही,यनसा-नवनौली ,मूसहननियां,अलाला,हटनी शहनवा सनौगी,दवनाथयट्टी,मैनहीं,किनयून ,मूटकी वथनाहा२आदिगामम छलनि। जंगन डा वन-वन जाकय अयन टीमक संग नाजनीतिक जागनद्ध कनैत नहलाह। कूनका गनवाक स्वांग्रा सनानी स्वर्गीय अनन्दलाल वावू सँ प्रनद्धा आ येघ नार्गलाय रुल नहनि। एकन निष्कर्ष निकालवाक लल १९७२सँ जीवनक आखनि समयधनि कनट कीमसँ माननीय विधायक वनवाक सफन यनियास कनैत नहलाह। गुप्तयूर्व मंत्री हनिप्र०साद कूनका सँ किसन यूनजप्र(निर्मली)मँ सद्य वद्गता वन सामाजिक नाजनीतिक मदैत लौत नहनि। मैनजन साहव मनौनाक अंचल सह प्रखंड कार्यालय क वलहीम खुद्दा गाल्हीन विनाधी डानसियलक दगतगाटम चुनकीयकैन मानैत आखिनी दमधनि सनकानी

कार्यालय कायम करबाक समर्थ भेलाह। तत्काल ओ आफिस निर्मलीक दछिनवारी हाट गोदाम मे चलैत रहलैक। गाम-गाममे पारखनिक उनाही मकान आ माछ पालन अपना इलाकाक ईनरवा मोआही ,परनी,लाल पुत्र, ललमनियां आदि गाममे कएलाह। एहि रचनात्मक काजमे हुनक परिपोषकका दरबार साहेब बठ संग पुरनि। ओ सोशलिस्ट आन्दोलनकारी छत्रकप रहैत नाम धरक्का सिंघनाथ मनियाक ORG सहा करप रहथि। मूंशी प्रेमचंद जीक अनकां कथापर आधारित हुनक नाच खुब जमै,गँआलापुर,परबही जवदी,नारदीगर परगाना सहित नेपाल अधिनायक'क राजधानी विराटनगर कर लगपास कतका जगह ऐतिहासिक नाच भान-रंगिमाओं संग करैत यश बटारलनि। जिनक एहि क्रममे कियाट जातिक यात्रा लगबैत हुनका लोकनिमे सेहो प्रेरणा भेटैत रहला।.....आ हुलपरास उत्र क निकसाह पछआयल कौनो कहियाधनि एम एल एOपदकँ शुसारीत करैक, ताहि लल नीक तरहँ सघन जन सम्पर्क कैइलाह। तीर्थराज घुमंतु यात्रा'क पायारन मामूश्री कँ स्मृतिशेष ,विशेष नमन।
_लाल दन कामत

४

अमन शहीद रामरुल मंडल

स्वाधिनता सनानी कँ शत् शत् नमन! भारत छोड़ो अन्दोलन कर हवा क्रांतिकारी रहथि- अमन शहीद रामरुल मंडल जी। हुनक जनम विहान राज्य कर सीतामढ़ी जिला अन्तर्गत प्रसिद्ध वाजपट्टी थानाक मधुरापुर गाममे ६अगस्त १९२४ ईOकँ भेल छलन्हि। हुनक

माय गनवी मंडल आ बाबूजी- गोखुल मंडल छलथिन। हुनक १६ सालक उमेरमे कन्नीसेदपुर प्रखंडक गंगवाना गामक अमीन मंडल जीक बेटीक संग बियाह भेल छलनि। जाहि सँ हुनका एक पुत्र जन्म दि० १७/९/ १९४२कँ भायक सासुर नेपालक एक गाम लछमिनिया मे भेल छलनि,परंच ओ शिशु १ मासक बाद कष्ट भ' काल कवलित भ'गेलैक। ओहि समय मंडल जी जहलमे छलथि। ओ चारि भाय छलाह,यथा-: रामशरण,महेश्वर,आ अपने रतन मिसरी। सब भाय खेती करैत छलाह आ पशु पालन करैत खूब नीक सँ सम्पन्न छलाह ,पशुक खरीद-बिक्री सेहो करथि। बाबूजी किरानाक दोकान करथि। मंडल जीक प्राथमिक शिक्षा पनासी गाम सँढवारामे भेल छलन्हि। १४सालक उमेरमे मिडिल पास कयने छलाह। बालपन अवस्थामे अखाड़ा पर खेलौना सेहो बनल छलथि। लाठी भाँजेमे निपुण कला छलनि। अपना लाठीक मारे ओ सबकेँ डेरायल करैत छलाह जे अंग्रेज केँ एहि लाठी सँ मारि भगा सँ भगाएब। लाठिये हमर बन्दूक थीक। ब्रिटिश शासन सँ उबिकय लोकसब हुकुमत केँ खिलाफ गाम-घरमे बालबाल शुरू क' देने छलैक। हुनका गामक कबइनी पन प्रमुख आन्दोलनकारी लोकनि जेनाकि - बिहुश्वरी प्रसाद जीक नेतृत्व मे वैसार भेल छलैक। ओहीमे गामक नायक रूपेँ रामफल मंडल चयनित भेल छलथि। ओएह गाममे गुप्त कार्यालय आजाद हिंद फौज क' छलैक। जाहि मे लाठी चलौनाइ,बंम बनौनाइ आ गुरिल्ला युद्ध'क प्रशिक्षण देल जाइत छलैक। अजादिक आन्दोलनमे बिहार'क भूमिका अति महत्वपूर्ण रहल छैक। दलघन विद्रोह (१८३१)'दानापुर विद्रोह ((१८३१), बिरसा मुंडा-खूँटी(१९००), चम्पारण सत्याग्रह

(१९१८-१९)आ करू वा मरू आन्दोलन (१९४२)मे बिहार अग्रणी भूमिका निभेने छैक। एहि दि0१३/८/१९४२ई0 भारती, दरभंगा- मानसखण्ड मेँ तीन देशी सैनिक कँ विद्रोह कयला पर फाँसी दिचल गेलैक। ओखन बंगाल प्रांत कँ तीन बिहार,आसाम,पश्चिम बंगाल आ उड़िसा रहैक। महात्मा गांधी जीक अगुवायम अखिल भारतीय कांग्रेस कमटी'क अधिवेशन सभापति अब्दुल कलाम आजाद द्वारा ज भेल रहैक,जाहि मं एकटा प्रस्ताव छलै "अंग्रेज भारत छोड़।" एहि अगस्त क्रान्तिक धधरा पूरा देश मं पसरलैक। एना कहूं मेँ बिहार'क सीतामढ़ी कोना पाछू रहैत? ९ तारीख सँ १९ धनि अगस्तक १९४२ कोन समय वड दुखदाई कहल जा सकैछ। अंग्रेजी सिपाही आबि बन्दू-बटीक ... पर धावा कैल जाई। खादी भंडार,बाबा नरसिंह दास आउर रामनन्दन सिंह,मोहन सिंहक घर जला देलक। पुरनीक दरोगा अर्जुन सिंह उपाध्याय मवावय ल २४/८/ १९४२ कँ बाजपट्टी आवय वाला छलैक,स पता चैलत आन्दोलनकारी सब गुप्त बैठक बनगाम मेँ आयोजन कलथि। उमे0ाम नामरूल मंडलक शपथ दल गेलनि दारोगा कँ सबक सिखबा ल। एहि बातक पता कँ सूखबीन किया दरोगाक हँसनीक गैयानी वाली बात बूझा दलकैक। स उ कन्निकाटि पना बदलि ललक। ता झमि गेल एस तौ उ दीय नारायण सिंह,चयनासी दलनशी सिंह आ पुलिस ... नामभूर्ति मा, हवलदार श्याम लाल सिंह। एहि मौका पर सबक बीच सीटी सुनि हनसा सँ भगदैन काटय लागलाह नामरूल मंडल जी। खुनक हवाना दखाहि जीय छाउ बालक आदित्य नाम पनायल आ जाकय हथाक

आनाय लगवैत माकदमा दायन कलक। .....अमन शहीद स्वाधिनता सनानी वालक कन ग्रान यन नामरूल मंतल,वावा ननसिंह दास,कयिल दव सिंह आ हनिहन प्रसाद समत ४००० लाकक खिलाफ हत्याक माकदमा चलय लगलैक। नामरूल मंतलक घनम आगि लगाकय तहि दलकै आ हुनकन खती सब जाति - उयटा दलकैक। गोयन सँ ओलान कन नईक ज किया यकडत तकना १०००टाका इनाम रटतैक। तहि लालच सँ हनुमाननगन नयाल रायक सासून सँ गाम ओलायन कानाफूसि हुअय लागलै। किछु हितसन लाक कहलकनि रुना डतहि वलि जाकय नहु। इंग्लिया मँ अहां उयन खतना अछि। उा नहिं माललनि आ वाजलाह-हो डीना अंगनजवा सवकँ कातवैक.,....! हुनक मित दरूदान शिवधानी कुंवन छलसँ नशा खूआ दलकै आ नीक -नीक गय्यम डासनन नहलैक। नस-नस जहन अह्नान हुअय लगलैक तँ नहास हालतम हाथ-गोड मीमीन कडी सँ वाह्नि गिनक्षानी कलकैक। गिनहुत कमिश्नी कन मुज़फ्फनयून जिला आव १९१२कन वाद सीतामढी जिला जहलम कस्तीम नाखल गलाह। १ग झलाई १९४३कँ कांग्रस कमटी-विहान नाथ कन वैसकम नामरूल मंतल जी ओनं आन दासनाक संवंध मँ ओसतीडा०इस्मयक्षन आ आना यूलिसकर्मी गथक हत्याक आनाय यन विशेष चर्चा रलैक। कमिटीक आग्रह यन महात्मा गांधीजी नामरूल मंतल आ आन आनायीक वचवाक यडम क्रान्तिकानिगथक माकदमा लडय वाला दशक जानल-मानल वंगालक डाकील सीआन दास आडान यीआन दास दुनू रायकँ यठौलनि। नामरूल मंतल सहित आन आनायिक विरुद्ध

४७३/१९४२ कन गहत नालीश दायन दल छलैक। वकील महादय अपना जनैत नामहल मंतलक खुब नीक सँ सुझाउ दलनि ज अदालतम जज कन समक्ष अहाँ स्वी करवैक ज हम हत्या किनकहु नँय कयल। ३०००वानि हजान लाककमँ सँ क मानलकै, स नँय जनैत छी। दिनांक १२अगस्त १९४३ स्वी०कँ दागलपुनम जज सी आन सनी कन कार्टम यहिल वहस दलैक। जहन जज महादय नामहल मंतल सँ पूछलखीन - की गां नसतीउा हनदीय नानायक सिंह कँ खुनी छँ? गँ उा गछलैन हँ हजुन! यहिल हनसा सँ हमही मानलौंह। आन लाक सर हत्या कनै सँ स्वीनकान क' (गलाह। वहस क वाद उाकिल साहन नामहल मंतल यन विगनैत तांटलक आ वाजलाह अंतिम वहसम जौं फाँसि नँय वाजवह गँ गाँ वूसह! नामहल मंतल कहलाह -साहव !आव नै गउवनैक। दासना दिन सयह;गसन वहस क दौनान जज महादय हन पूछलकैन ! नसतीउा कन खुन अहीं गँ नहिँ कयल! हँ हजुन!नस ती उा कनँ यहिल हनसा हमही मानलौं हन्। नहि गनहँ नकाान गीनदिन धनि वहस चलैत नहलैक, यनंच नामहल मन्त अधिनका कन लाख समझला यन फाँसि नँय वाजलाह। दनिसक उा सनदान दगतसिंह 'क फाँसिक समय दल (गल वाक् कँ आत्मसात कय लन नहथि- "निवानक गान यन स्वीनकिलावक धान गजगन हास्वीछा।" जज सीआन सनी नामहल कँ सजा सुनौलक। फाँसी दै सँ किछु मीनट यहिल जलन पूछलकै- अयनक अंतिम स्वीछा की य? उा उत्तन दलनि -हमन स्वीछा स्वीयह अछि ज -अंगनज हमना दश सँ सदा लल वहना जाय। आ दानत माता कँ गुलामिक जींजीन सँ सदा मुक्त क' सम्पूर्ण

रानगनर्ष कँ स्वगंत्र कय दल कनय। रादव मासक यहिल मलमास दिन ज्ञोनान २३अगस्त १९४३कन मनक्कूस रानकँ रागलयून सञ्चल जल मँ १९शाल ११दिनक नयक्रमम उाष्ट्री (गाननान ओ0या कश वाला रानग सयूग कँ फांसी यनि (गलैनि। उा हौंष्ट्रसग -हौंष्ट्रसग फांसिक फंदाक गना लगवैग आ आजाद रानगक निर्माण मँअयन नाम क'(गलाह। एहि महत्वपूर्ण जागदान लल रानगक नव यिढि हनसमग मान नाखग। वंदमागनम्-जयहिन्द!!रानग माग की-जै हाय।।

७

वहिर्मूखी कामेग कौम

दश आ दूनियांक एकना सन्मार्ग सार्वरौम सांस्कृतिक यहिचान दिएना लल साध्कन कन कान्ध यन आष्ट्री सवसँ वसी नैगिक दायित्व छैक। सामाजिक जागरूकगा आ नाजनीगिक जागृगि आधूनिक समयम आनय गाहि लल ताँक्रन नाम मनाहन लाहियाजी करून छथि-" आए दूर्राग्य छैक ज शुद्र- अधिकशुद्र उागक निक जकाँ विषय प्रसंगक नहिं वूमि सकैछ ", व्यायक वहस नहि कय यवैग अछि, जागक नीक गनहँ अन्याय कन विरुद्ध लतिरीउ सकैग छैक। व्राह्मणक कूनाणी मँ वैकल्तिक नान-छाटका आदि एहि लल दहागी उप्रम करूल जाष्ट्रछ, उा अयनाम मिलानसँ सम्मगी यूर्वक जीवन निर्वाह कनय सँ हनाक नहैछ, राष्ट्री राष्ट्री क वीच एकटा अननलना गाछ अफाक शनिहा गाछ खागिन सीमा विवादम खून वहवैग अछि। टाट-हनक लगेनाकाल एक राष्ट्री दासन रायक हया

कनैत अछि। यालनु यशुक गोवनसँ गोइँटा-चीयनी याथि सूखनाकाल सँभेट कनैत छैक। अमीन आ माथ्र यंचसँ फैसला कयल जगह यन वाँस वल्ला अलायीत कनैत वाल वच्चं महिला मरून शनीन मगन वजानैत छैक। वाटी माटी 'क मूनगा नवा आ फूल गाछ लल आरूद वसाहैत छैक । कलम गाछी मं कना खाति वीछ आम खातीन लिखैन गाछ फूजहैत कनैत मानि ठानैत छैक । वाधमं खत यथानक आदि छुँटनी कऽ वाधवानक मगन गामयन ठानत छैक । ककना वटा - वटीक यढाइ्री नीक दख जनैत- प्रतिशोध कनैत छैक । नीक खानयीन दख , नीक यहिनव दख जलनशील वनि जाइ्छि आदि। ओहिसव दुर्गुण कन अन्द:कथाक कयमँ जन्म लैत छैक नीचा दखनाक षडयन्त्र । जाहि कानणें यंच , सदस्य , यैक्स अध्यक्ष ,मूखिया , सनयंच , समिति , जिला यार्षद , विधायक- सांसद , मंत्री आदि यदप्रतिष्ठा यन मजगूत समर्थनक जगह नियनीत काज हायसँ सामाजिक ऊति हाइ्छ आव गँ मत क ओनज दवल झवान वाजि उठैछ ज टाकायन स्टत, स सनियदूँ स्वजातीय स्तानक तिलांजलि दैत, ओकता कँ विसनैत दासना समाजक अंगः कथा कयमँ जन्म लैत छैक नीचा दखवाक षडयंत्र । जाही कानणे यंच सदस्य मूखिया सनयंच यैक्स अध्यक्ष समिति जिला यार्षद विधायक सांसद मंत्री आदि यद प्रतिष्ठा यन मजवूत समर्थनक जगह नियनीत कार्य हायसं सामाजिक ऊति हाइ्छ । आव गँ मत कँ ओनज दवल झवान वाजि उठैछ । ज टाका यन स्टत, स सनियदूँ स्वजातीय स्तानक तिलांजलि दैत, ओकता कँ विसनैत दासना समाजक धनवान कँ दाट कनैछ ,ज लाकतंत्रक हँसी उडावल जाइ्छ। अयना स्मिताक नऊा

लेल लेखक छथि ,तहिना समाजसेवी सँ मित्रता राखि एकरा सब गामक शक्ति प्रदान करबाक हेतु लागल रहैछ। जातिक मान्यजनी सभा राज ई एखन होइछ, एहेन उचित निदान थानाक गहन दर्जनो मुख्य पुरुष जे बसिकेँ निर्णय करैत छ, ताहि लेल समयाभाव रहैछ ,सर्वत्र ई गीतावट होइत जा रहल छैक। एहि सँ उबरबाक लेल स्मृति कर खियाल राखैत नव ऊर्जा संचयन लेल जरुर जातीय बैसार प्रयास स्तर पर होइत अछि ई उचित प्रतिनिधिगणक माध्य गामक समाजलोकक एकटा शासन गामक टियमणी सूनवाम आउत 'ओ बाटक बनता सामरम छैक-चुनावी वर्ष लागिबायल छैक, ई गैयानी हुअए किछु बुधियार लोक एहन सम्मेलन- गोष्ठी बजन होइक।" ई जनसजगता लेल गाम-गाम अथवा पंचायत स्तर धरि कारी संगठनक प्रसार-गठन होयब एतय आवश्यक होयत, जाहिसँ समस्त समाजक ससमय विषय प्रवेश कता सकी, आब उचित पूसय जे हमरा सँ संवादहीनताक स्थिति नहि बनैत छथि। आ एकर एकटा येघ सबलता सेहो आउत जाहिसँ सहयोग रहत आ अधिवेशनकं संख्याबल कर बढ़लता सेहो होयत। अन्यथा शहरी-लोकक सुलह पहुँचसँ पटना-दिल्ली मे ई लोकक जमानत रह' जायत एहेन दहाल कस्बा सँ लोक कमसंख्याँ मे सम्मिलित होयत। एहि सब नाक्षिटा बात पर गौर करब एतमआवश्यक। एहि गामक जनसमस्या समाधान लेल खलीहा स्वर्गीय लखन कामत गवालवि (ग्रा+पो पतसा) सदिखन चिन्तित रहैत छलाह । एतम ग्रन्थ ढालकिया यौसाजीक साहर शिर साष्टांग दण्डवत।

६

सूखल मन तरसल आँखि



सूखल मन तरसल आँखि अछि मैथिली काव्य पोथीक नव कवयित्री मुन्नी कामत हमर परिचित नव युवती छथिन। हिनक जन्म परसा बरटोली गाममे श्रीमती लक्ष्मी देवी आ श्री दिलीप वर्माजीक घर 17 जुलाई 1989 ईस्वीमे भेल छैन। निर्मली महाविद्यालयसँ बनि हिन्दी आनर्स ग्रेजुएट छथि। सुपियाही निवासी श्रीमान, अरुण कामत पिता रामविलास कामतसँ हिनक विआह भेला बाद पति महोदयक संग साहिबाबाद-गजियाबाद (यू.पी.) मे रहैत अहर्निस साहित्य सेवा करै छथिन। हिनक पहिल कृति 2014 ईस्वीमे प्रकाशित भेलैन, पछाति तकर दोसर संस्करण वर्ष 2017 ईस्वीमे 126 पृष्ठक प्रकाशित भेलैन। दाम 151 टाका छै। अछि सूखल मन तरसल

आँखि 'काव्य' संग्रह मे दु अंकक सहसँ दु नमहर संख्याँ ओकक कविताक गूंथल माला कयं मौलिक रचना धारावाहिकताक अजस्र स्रोत बनिष्ठ भऽ देखाइत अछि। मुन्नीजीक वासना यात्री प्रतिष्ठित प्रकाशनसँ निकलल चूकल छैक आ मैथिलीक कतेका पत्र-पत्रिकामे हिनक रचना छपल सेहो अछि। मुन्नी कामत कर सहधर्मिणी उमेश मण्डल - पूनम मण्डल (बाबा-बाबी) जीक प्रोत्साहन जति कयं जमल छै, से मुन्नीजी अहूँ सिनहकँ 'अयन बात' मे करन छैथ। डॉ. शिव कुमार प्रसाद यात्री समीक्षक सेहो आशीर्वचन कयं अयन अस्मिता प्रकट करैत मुन्नीक बारेम कहला अछि- 'मुन्नी कामति' मात्र मिथिलांचल नहि वरन् समस्त राष्ट्रक बेटीक 'माउथ पीस' बनि अयन काव्य संग्रहक रूप देवाक प्रयास कयलैन अछि। युग-युगसँ संचित आगिक व्यक्त करैम कवयित्री कतेक वेदनासँ गुजरल हेती से शब्दम व्यक्त करब असान नहि। हम कवयित्रीक वेदना नमन करैत छी। हमहूँ तँ कोनो बेटीक सन्तान छी। शासक गठन अट-पट हटौता अपरिवर्तित बेटीक हालकं समाजक ठेना कय सामा-सामी करबाम सक्षम हेती अछि। अहूँ संग्रहम पाठक जे मिथिलाक बेटीक दुखक अनेकानेक दृश्य कवियित्रीक मनक असंतोष टा नहि; मिथिलाक बेटीक मनोदशाक छवि दृश्यमान भेल देखत। ललनाक प्रति समाज कर पुरुखक आँखिम नचैत चण्डालक नुकायल छवि उजागर करैत कवियित्री चैनसँ जीबैक पलखैत नहि देत रहल छथि। पाँति देखु - बेटी शीर्षक कवितासँ- बेटी अभिशाप नै वरदान अछि' तिलक बिहानि सँ बेटी न बचाबू। हूँ छी धनक लक्ष्मी हमरा नै समान बनाबू। नै अछि बाप... दहेजक आगि शीर्षकसँ

सुनथुन सास्-माय हमदूँ छी किनका वटी हमदूँ किनका दुलारी छी हमदूँ 9 महिना किनका कारवम..... दर्दकटीस कनिगासँ .... माऽऽक सुन स्ल ओंचन haौ हनाञल नूनुक वाल असगन छाति वूठ वायकं विछुनि गेल वटा अनमाल । ... नानाञल आँखि शीर्षकसँ कना उजनल घन वसग कना ओकन नान सुख डौन कगक दिन अहिना सगग ऽऽी सग । मून्नी कामग कन यहिल कनिगासँ शुक स्s जाऽऽछ समाजकन वीच असमाननाक मनादगा जकन ओक वानगी' समनयिग हाऽऽग वटी' शीर्षकम द्रष्टन हाऽऽछ- जहिया ओकन जन्म स्ल गहिञ तिविया मिमा गेल, सर कहलक कलंक ञलौ छOिहानासँ गीग हना गेला ऊँ- ऊँ ऽऽी नमहन स्ल... 31 वाँ क्रमयन यृष्ठ सं. 53 म याOकर्के सूखल मन गनसल आँखि सटग, जाहिम याँगि अछि- ओगा सहाना छल गनीवक मल यियाउजका। उहा सूआद छिनाञल जाऽऽञ.... अखना नाटी यन यट ज्ञन्ना आ मूँहम अयनसँ वज्ञान खसावी सन निशान मैथिली अहिचाकि न्कयं श्रीमगी कामगजी कनैग निछछ गनीवी दिश ध्यान आकृष्ट कली । हम कहि सकै छी ननसिखूआ आ हिष्टीम कलम उ(Oनिहानि मून्नी कामग आदनधीय कथाकान श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजीक याथी यठि-यठि मैथिलीक प्रगि जागरूक स्ली आ स मागृ साषाम अयन नचनावलीक माध्यम अजय सण्डान स्नैम आगू ञली । हिनक नावक मौलिक उद्बाधन जहन छयेग अछि गँ याOक आ उसूक लखकीय प्रहनी सहा समय निकालवाक हिनाक म नहैछ आ दूनका मावाऽऽलयन सहा आशिष दैग प्रशंसा कनैग नहल अछि । गऽऽम ओकटा हमदू छी । काना साषाक सूआद साहित्यकानम स्द नहि

गाँओ दिनक पोथी दर्जनो भाषा अनुवाद द्वारा स प्रतिष्ठित आब करने छी। आनन्द पुस्तकक लाञ्छन सासु माय सन स्नेहा मुक नारी करैत बहुत किछु कहै छथिन। मिथिलाक गाम गामक पंजीकृत पुस्तकालय अछि पोथीक माँग बढ़ैत पठन संरक्षण छापल सरकारसँ अपेक्षा करत, सहज विश्वास जगैत अछि।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.४.निर्मला कर्ण- अग्नि शिखा (भाग-२६)



निर्मला कर्ण (१९६०-), शिक्षा - एम. ए., नैहर- खराजपुर, दरभंगा, सासुर- गोढ़ियारी (बलहा), वर्त्तमान निवास- राँची, झारखण्ड। झारखंड सरकार महिला एवं बाल विकास सामाजिक सुरक्षा विभाग बाल विकास परियोजना पदाधिकारी पदसँ सेवानिवृत्ति उपरान्त स्वतंत्र लेखन।

अग्नि शिखा (भाग- २६)

(मूल हिन्दी- स्वर्गीय जितेन्द्र कुमार कर्ण, मैथिली अनुवाद- निर्मला कर्ण)

कथा अखन धरि:

राजा पुरूरवा आ उर्वशीक विवाह बड़ धूमधाम सँ होइत छैक। सौराष्ट्र राति मे हुनक समय उर्वशी राजा के प्रथम मिलन के लेल विशेष रानीकाँ अपनावैत्री के प्रस्ताव देत छथिन |

आब आगू:

उर्वशीक बात पर राजा भ्रमित भs कs कहैत छथि - "हे कान्ता होयत हेता ? अहाँ कोन विशिष्ट अद्वितीय विधि सँ मिलन करबाक गप्प कs रहल छी,कम सँ कम किछु तs कहू, तखनहि हम अहाँक संग दs पाएब"। राजा अपन उत्कट अभिलाषा के त्यागि अपन शारीरिक मिलन के अभिलाषा पर नियंत्रण रखैत उत्कंठा पूर्वक पूछलथि। " कामकला मे कोनक विधि के प्रयोग होइत छैक, आ कान्ता - अहाँ कँ कतेक बात बूझल अछि"? उर्वशी राजाक पत्नीआ लेल हुनु पूर्ण रूपेण तैयार भेल छलीह | "व्यावहारिक वा सैद्धांतिक,हम दुहु सँ कान्ता रूप मे पूर्ण रूपेण अवगत छी। मात्र संख्याक जानकारी अछि। संक्षेपतः ओहि मे चौरासी टा आसन होइत अछि"। राजा सेहो पत्नीआ मे सफलता प्राप्त करबाक निर्णय कएने छलाह | "जँ अहाँ कामकला मे व्यावहारिक रूप सँ अवगत छी तखन अहाँ ओकर अधीन किएक छलहुँ" उर्वशी पूछलथि। हँसैत पुरूरवा बजलाह - "अहाँ सेहो एहन विचित्र आश्चर्यजनक बात करैत छी प्रियतमा! सब तs बिनु सिखौनहि प्राणी स्वयं सीखि लैत अछि।" "मुदा हमरा साधारण अपरिपक्व रानीकाँ सँ काना काज करब पसिन्न नहि लगैत अछि। सब किछु उत्कृष्टता सँ करब हमर विशिष्ट गुण अछि" - उर्वशी अपन पसंद

करैत लगलीह। "एखन अहाँ हमरा स्वयं बना दिय सब किछु,हमरा एहिक पत्नीत्व कियेक लऽ रहल छी?" राजा उर्वशी के समझ अपन पराजय स्वीकार कऽ ललथि। "हम अहाँ कँ एखनि नेह सरे गऽ बनाव जा रहल छी। मुदा एहन सामान्य विधि सँऽनहि,नृत्यक माध्यम! की अहाँ कँ बूझल अछि जे स्वर्ग मे हम कामदेवक पत्नी रति सँऽ नृत्य शैली मे चौरासी मुद्राक औपचारिक शिक्षा ग्रहण लेने रही ! यद्यपि हम सोचैत छलहुँ जे ई शिक्षा व्यर्थ होयत,मुदा आब ई हमरा दूनु प्राणीक जीवन मे उपयोगी होयत" - उर्वशी राजा कँ अपन स्थानक स्थान के सूचना देलनि। "एखन आब शीघ्र प्रारम्भ करू प्रिय। हम अहाँक सरटा हाव बूझि लव" - राजा अपन व्यग्रता देखबैत बजलाह। "नहि, एना नहि महाराहिम। की अहाँ बस बैसि क' देखब? ई काज मात्र अहाँ द्वारा पूर्ण होयत। ए हमरा सामाँ आबि जाउ,आ हमर प्रत्येक गतिविधि के हमर प्रत्येक हाव-भंगिमा क अनुसरण करैत अहाँ सहो हमर सहयोग करू" - उर्वशी हँसैत बाजि उठलीह। किछु क्षण पश्चात उर्वशी लयबद्ध नृत्य करय लगलीह आ दूनका देखैत,दूनकर अनुसरण करैत राजा पुरूरवा दूनकर सहयोग करैत स्वयं लयबद्ध गतिशील होय गेलाह। दूनकर प्रत्येक मुद्रा एवं हाव देखि कऽ गहना सँऽ मनन कऽ कामकला के शिक्षण लमय लगलाह। उर्वशीक हाव-भंगिमा के अनुसरण करैत ओ अपन शरीर सँऽ एक-एक वस्त्र उतारनाई प्रारंभ कऽ देलथि। उर्वशी स्वयं नृत्यक संग चैह कऽ रहल छलीह। राजा कुशलता पूर्वक दूनकर प्रत्येक भंगिमाक अनुसरण कऽ रहल छलाह। एकर पश्चात नृत्य शैली मे एक दूसर के संग चुम्बन के आदान-प्रदान होमय

लगलनि। नृत्य शैली म स्वयं दुनू एक वासनाक अंग-प्रत्यङ्ग क चुम्बन लऽ रहल छलाह। एकर पश्चात नृत्य शैली म अर्ध निमीलित नेत्र सँऽ रति आमंत्रण प्रस्तुत कयल गेल छल। प्रत्येक मुद्रा म दुनूक शरीर,शरीरक प्रत्येक अंग एक वासना सँ मीलि रहल छल। अधर क अधर सँऽ कखनहुँ स्पर्श होइत छल,कखनहुँ एक दोसर सँऽ आलिंगन बद्ध होइत छलथि,कखनहुँ एक टाँग उठौने एक दोसर क योनि क स्पर्श करैत छलथि। कखनहुँ कदली दल सम जघन स्थल एक-दोसर सँऽ स्पर्शित होइत छल। कखनहुँ मुख्य अवयव मं सेहो अद्भुत संयोग होइत छल। एकटा अद्भुत विहंगम दृश्य प्रस्तुत होइत छल। ई सब एकटा अद्वितीय संभोग प्रक्रिया अपना रहल छलाह। क्षण-क्षण मं ई सब अपन मुद्रा बदलि रहल छलाह। कखनहुँ 11, फेर 33, फेर 36, 66, 63, 61, 24, 20, 01, 00 संख्या क आकृति मं आकृत होइत एक दोसर क शरीर मं डुबि अपना क विस्मृत करय लगलाह। कखनहुँ त्रिभुज क केंद्र पर लंबवत् रेखा,कखनहुँ लंब क ऊपर त्रिभुज क केंद्र। गणित क करुन अद्वितीय विलक्षणता! मुद्रा स संपूर्ण लयबद्ध रूप सँऽ नृत्य क शैली मं! एक क्षणक बाद हृदयक धड़कन क रेखा,आँखिक रेखा आ नृत्यक रेखाक बीच द्वंद्वयुद्ध होइत उठल,सभ रेखा म एकहि कथा,एकहि चित्र,आ एकहि क्रियाक प्रदर्शन भऽ रहल छल - सुरत क्रीड़ा। ई क्रीड़ा बहुत काल धरि नृत्य शैली म चलैत रहल, फेर सब रेखा एक संग मिलि गेल। धरा पर नाचल शरीर स्वयं सरल रेखा म परिणत भ गेल। याज्ञवल्क्य सुमधुर कलमुक्त स्वर अंगक गति कँ स्पष्ट कऽ रहल छल। दुनू प्राणी आनंदक चरम पर पहुँचि

आह्लादित भs गेल छलाह। ओहि कउ म नारि रुनि कणिका वन एकटि शैली म अनगिनत आसनक अभ्यास भल छल,जखन राजा पुरूरवा द्वारा अन्य आसनक संबंध म आग्रह कयल गेल तखन उर्वशी हँसैत बजलीह - "हे राजन्,आब ओ मुद्रा अन्य दिनक लेल सुनाओत राखु" | *************** राजा पुरूरवा लेल दिवा अथवा रात्रि क दुनू अलग-अलग पउ म कोनो अंतर नहि छल। राजा लेल दिवस क प्रकाश सदृश रात्रि छल आ रात्रिक अंधकार हुनका उर्वशी क सौंदर्य सँs झिलमिलाइत प्रकाशित जकाँ बुझाइत छलनि। ओ अपन राज्य संचालन क समस्त भार महामात्य क सौंपि देने छलाह आ स्वयं क पूर्णतः निलग्न केने छलाह राज्य क कार्यभार सँs। ओ उर्वशीक सौन्दर्यक भोग म अपना कँ सम्पूर्णत:समर्पित कयलनि। हुनका उर्वशीक संगति म सदिखन नहवाक इच्छा होइत छलनि। ओ कखनहुँ दृष्टिगत होइतथि जलक्रीडा करैत काल,आ कखनहुँ उपवन मँ भ्रमण करइत काल।अन्यथा हुनक शयन कउक द्वार अहर्निशि बंद देखल जाइत छलनि। पुरूरवा क मुख मंडल पर सदिखन मुस्कान व्याप्त रहैत छल। ओ तs मात्र उर्वशी क संगत मँ मग्न छलाह। पुरूरवा राज्य संचालन सँs संपूर्ण रूप सs अपना क निलग्न कएने छलाह। महामात्य सुचारू रूप सs राज्य संचालन कs रहल छलाह। राज्य क बहुत रास महत्वपूर्ण कार्य योजना मात्र पुरूरवा क इच्छाउन सs लागु होइत छल। ओ कोनो काज क देखय अथवा बुझय मँ एक उत्र तक क समय विनावय क व्यर्थ बुझैत छलाह। मुदा हुनकर राज्य- कर्मचारी,अमात्य, महामात्य क योग्यता एवं हुनका सभ क राजा आ राज्य क प्रति निष्ठा मानल जायत,ज

राज्य क प्रशासन सुचारु रूप सँऽ चलि रहल छल। ककरो कोनो दिक्कत नै छल। ककरो हृदय मे राजा क प्रति असंतोष क भाव नै छल। यदि कोनहु राज्य मे कहियो किनको अवहेलना अथवा प्रताडना नहि भेलनि। प्रजा क साथ अन्याय होइ क एकहु टा घटना राज्य मे घटित नहि भेल। राजा क राज्य प्रशासन सँऽ विमुख भऽ जाय क उपरान्तहु किनको हृदय मे राजा क प्रति असंतोष क भावना नहि भेल छल। एकर बाद राज्य प्रशासन सऽ ओ पूर्ण रूप सँऽ विलग भऽ गेलाह ओ अपन समय उर्वशी संग मधुयामिनी मे व्यतीत करवा मे निमग्न भऽ गेल छलाह। एहि भाँति राजा पुरूरवाक दिवा-रात्रि उर्वशीक संगति मे सुखपूर्वक व्यतीत भऽ रहल छल | चाहे ओ ग्रीष्म ऋतु क उमस भरल गर्मी हो अथवा वर्षा ऋतु क रिमझिम फुहार,या कि माघ महीना क शीत लहर,उर्वशी क सान्निध्य मे रहवा क कारण सब ऋतु एक समान सुखदाइ छल। सब मौसम जे आन किनको लेल कठिन बुझाइत होइन मुदा प्रत्येक ऋतु हुनका लोकनि कँ वसन्त जकाँ आनन्ददायक बुझाइत छलनि। हुनकर समस्त संसार उर्वशीक सौन्दर्य मे सीमित भेल छलनि। ने राजा पुरूरवाक कँ भरतमुनिक शाप मोन पडलनि,आ ने उर्वशी क। ओ विसरि गेल छलीह कि हुनका स्वर्ग सऽ निष्कासित कऽ देल गेल अछि मात्र पाँच साल क वास्ते। इ अवधि पूरा भेलाक पश्चात हुनका वापस स्वर्ग जेवा क होयतनि!भेल ओ नहि जाय चाहैत छथि,मुदा इन्द्र हुनका पृथ्वी पर नहि रहय देताह। ओ हुनका साम-दाम-दंड-भेद कोनहु प्रकार सऽ प्रयत्न कऽ वापस मंगवा लेथिन स्वर्ग लोक मे।

क्रमशः

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.७.नन्द विलास राय-घसवाहिनी



नन्द विलास राय

घसवाहिनी

छजना-मसौना रानीगढ़ी परनीसँ पूब सड़कक कातमे एकटा बड़ सघनगर कदमक गाछ अछि। वैशाख मासक रौदका उखनाह। दिनक दस बजे। टहटहौआ रौद। एकटा बीस-बाइस वर्खक घसवाहिनी ओइ कदमक गाछ तर बैसल छली। घसवाहिनी बड़ सुन्नरि छली। गोर बर्ण, छड़हरा शरीर, गोल आ सुडौल मुँह, नमहर-नमहर आँठिया केश। कारी-कारी आ पैघ-पैघ दूनू आँखि। समगालाक हाड़ासन ठोर। पुआ जकाँ फूलल-फूलल आ सब सन लाल-लाल गाल।

चारिटा कौलेजिया लड़का साइकिलसँ ओइ सड़कसँ जा रहल छल। जखन कदमक गाछसँ एक लग्गा पाछू रहए तँ ओइमे सँ एकटा

कौलजिया लड़काक नजरि ओहि घसवाहिनीपर पड़ल। कौलजिया लड़का गँ कौलजिया लड़का छलैक। बसी लफुआ आ उच्छृंखल। ओ लड़का जकर नजरि घसवाहिनीपर पड़ल रहैक, बाजल-

-गै राय, कनी अपना सङ ओ गाछतर जिना ला।

पाछाँ दासन, एसन आ चानिमा लड़काक नजरि घसवाहिनीपर पड़ल। दासन लड़का बाजल-

-हँ, हँ, बड़ नीक छै, कनी गाछतर ठंढा ला।

चारू लड़का अपन-अपन साइकिल खड़ा कलक आ कदमक गाछतर आबि बैस गेल। एसन लड़का घसवाहिनी दिस ताकैत बाजल- -मास्टर ब्यूटीफूल गर्ल।

तैयन घसवाहिनी बजली-

-नहि यौ विद्यार्थी द मास्टर ब्यूटीफूल गर्ल।

चानिम लड़का खुसफुसा कऽ बाजल-

-साग बढ़िं घसवाहिनी बस पढ़ल-लिखल बुझाइ छौ।

चारू लड़का साइकिलपर चढ़ल आ विदा भऽ गेल। लड़का सभकेँ जाइत देखि घसवाहिनी मुस्किया लगली।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.६.कुमान मनाज कश्यप- लघुकथा- कुकर्म किंना सुकर्म



कुमान मनाज कश्यप

लघुकथा

कुकर्म किंना सुकर्म

शहरी विकास मंत्री क शहीदक प्रतिमा क अनावरण क प्रोग्राम पक्का होबाक विधिवत सूचना जिला प्रशासन क देल गेल प्रशासन म चहलकदमी बढ़ि गेलै। विभिन्न काज जेना शहरक सफाई, गाछ क दुरुस्त करब, प्रतिमा स्थल क साज-सज्जा, समारोहक व्यवस्था, मंत्रीजी क आगवानी, खान-पान आदिक व्यवस्था हेतु अलग-अलग निर्दिष्ट टीम बनाओल जा चूकल छलै। जिला कलक्टर आइक मीटिंग म तहसीलदार सऽ ऊपर क सब अधिकारी क एहि कार्यक्रम म होमयवला खर्चक जिम्मा पदानुसार बाँटि देलनि। वर्माजी चूँकि भू-संपदा क डिप्टी कलक्टर छलाह तैं हुनका टेंट आ मंच निर्माण पर होमयवला खर्च क जिम्मेदारी देलनि। वर्माजी मने मन आँगुर पर हिसाब जोड़य लगलाह -- नहियों किछु त दस-बीस लाख टाका सऽ कम क खर्च नहिं हेतै। एतेक टाका तऽ ओ एक बेर म देखनहुं नहिं छथि! कतऽ सऽ जुटा पेता एतेक पैघ राशि? उद्विग्न भऽ उठला ओ। जाड़क दिन रहितो ओ पसेना सऽ तरबतर हुअ लगला। होश एलैन जखन शर्माजी कान्ह पर हाथ दैत कहलखिन - "वर्माजी मन ठीक नहिं अछि की? चलू; घर जा कऽ आराम करू।" वर्माजी हड़बड़ा कऽ उठला। यक्ष-प्रश्न जे हुनका समक्ष छल से टाका क एक हिस्सा क दीगर ओरियाओत। सोचैत रहलाह - जखन कार्यक्रम सरकारी छै तऽ एहि पर होमयवला खर्चा सरकारिय खजाना सऽ न होबाक चाही? ककरा बलि क छागर किएक बनाओल जाइत छै?

वद्गा दिम्माग शटा कऽ थनथनाऽ्लीग डा कलक्टन क चैम्बन म (गलाह - "सोनी सन! कहैग गऽ लाज रऽ नहल अछी; मूदा.........???"

- "क्या......?"

- "स.... न!! टंट आ मंच क ऽ्ँगजाम हम नहिं......."

- "क्या वका हो नर्मा?" कलक्टन साहेब गामस डा0 कऽ 0ाढ र (गलाह।

- "जी सन! हम वच्चा क सय्या खा कऽ कहैग छी। हमना लग आन काना दूआना नहिं। वटा क कालज म ॳडमिशन क लल दस हजान रुपया जागाडाल छल सैह लऽ कऽ आयल छी। ॳकना नाखि लल जाडा सन!"

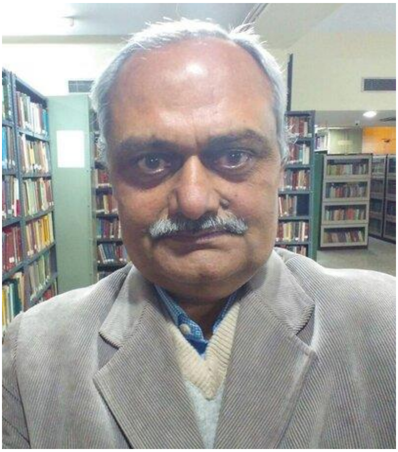
कलक्टन साहेब थूम्म सऽ अयन कूर्सी यन वैसि (गलाह। "नर्मा गुमन मनी ऽ्ज्ञा मिट्टी म मिलान म काऽ्ली कसन नहीं छाडी। हाउ विल आऽ्ली सव माय हुस नाऊ??? अव समय री नहीं वचा है। वूा की गनह खड-खड मना वहना क्या दख नह हो? (गट लास्ट!"

नर्माजी कलक्टन साहेब क चैम्बन सऽ धाउ खसन वहना नहल छलाह। वाहन म डाहिसक अधिकानी-कर्मचानी नर्माजी क दखि कऽ मंद-मंद मूस्किया नहल छल अव - हिनकन (गायनीय नियाटि खनाव हवा सऽ क नाकानि?

-कुमान मनाज कथ्यय, सम्प्रगिसचिन-रानग सनकानक उय :; संयर्क : -सी11, टानन-4, टा्य-5, किदन्ी नगन युर्व दिल्ली हाट क) (सामन, नी दिल्ली-110023 # 9810811850; ीमल : writetokmanoj@gmail.com

अयन मंगब्य editorial.staff.videha@gmail.com **यन यथाउ।**

२.१.नवीन्द्र नानायक्ष मिश्र-वदलि नदल अछि सरकिछ (उयन्यास)-धानानादिक



रवीन्द्र नारायण मिश्र

बदलि रहल अछि सभकिछु (उपन्यास)- धारावाहिक

खण्ड २६-३०

बदलि रहल अछि सभकिछु

26

श्वेतवस्त्र धारण कए हाथम तिरंगा झंडा लए शिखा रहलाइ अड्डासँ बाहर रहलि । काल्हि धरि जकरा कओ नहि जनैत छल से आइ सौंस देशम चर्चाक विषय बनि गेल छलि । सभ अखबारक मुख्यपृष्ठपर ओकर फोटो छल,ओकर बारेम समाचार छल। प्रतिनिधि सभासँ सड़क धरि जेना तूफान आबि गेल छल । माननीय

सदस्यलोकनि सरकारक इस्तीफाक हेतु अड़ि गेल रहथि। सरकार दिससँ कतबा कहल गेल जे नारी निकेतन प्रकरणक सीबीआइसँ जाँच कराओल जाएत, शिक्षाकेँ पूर्ण न्याय भेटत, कानून तोड़निहार केओ नहि बकसल जाएत चाहे ओ कतबा पैघ आदमी किएक न रहथि, मुदा लोककेँ एहिसन बातपर कनीको विश्वास नहि भेलैक। जखन सरकारक आदमी एहिसन कुकांडमे सामिल छथि तखन हुनका खिलाफ कोना जाँचसँ की निकलत? ई तँ जनताकेँ ठगब भेल। एहिना सरकार इस्तीफा दिअ, तखनहि कोना जाँच निष्पक्षतासँ संभव भऽ सकत। एहिलेल राज्यप्रमुख तँ इस्तीफा देलाक बाद कतऽ चलि गेल से किछु पता नहि चलि सकलैक। लोकसभ कहैक जे सरकार ओकरा कतहु नुका कऽ रखने अछि जाहिसँ सभकिछु शांत भेलाक बाद ओ सुरक्षित बाहर आबि सकत। मुदा ई सही नहि रहैक। ओ तँ स्वयं बहुत तंग भऽ गेल रहथि। सुनबामे इहो आएल जे रातिमे किछु विश्वस्तक संग केदारनाथ दिस चलि गेलाह। तकरबाद हुनकर किछु खबरि सरकारोकेँ नहि भेटि रहल छलैक। केओ-केओ इहो बजैक जे ओ संन्यास लऽ आब एहठाम आध्यात्मिक चिंतनमे समय बिताबैत ओहिठामक माहौल बहुत गरमा गेल छल। तहियासँ शिक्षाक प्रबंध ठप्प रहय, जे देखितहि कैकगोटेकेँ सीटीईटी गुम्म भऽ गेल रहैक। शिक्षा जहिना बाहर आएलि, ओहिठाम प्रशिक्षित लोकसभ एकस्वरसँ चिचिआ उठल-

"इनकिलाब! जिंदाबाद!"

आगू-आगू भिखा आ ओकर पाछू-पाछू लोकक हूजुम चलि रहल छल। हम,शक्तिनाथ आ संदीप जना-गना भिखाकेँ सम्हारने ओकर संग पाछू-पाछू चलि रहल छलहुँ। हमसभ जनक्रान्ति दलक मुख्यालयक बड्ड लगीच पहुँचि गेल छलहुँ। मात्र दस मिनटमे हमसभ ओतए पहुँचि जइतहुँ। तावतमे एकटा जबरदस्त विस्फोट भेल। चारूकात धूँआ-धूआँ पसरि गेल। लगातार पाँच मिनट धरि विस्फोट होइत रहल। पुलिस कतहु नहि देखा रहल छल। सड़कपर कतेको घायल लोकसभ यत्र-तत्र पड़ल छल। क ककरा देखी? जे बाँचि गेल छल से बँचबाक हेतु जहाँ-तहाँ भागि रहल छल। बँचबाक कोनो संभावना नहि लागि रहल छल। एक मिनटक लेल तँ हमरा लागि रहल छल जेना प्रलय आबि गेल। हम कना-न-कना सड़कक दहिना भागक दोकानमे रुका गेल छलहुँ। लागल जेना कोनो अदृश्य शक्ति हमरा सड़कपरसँ उठा कए दोकानपर राखि देलक। मुदा शक्तिनाथ,संदीपक कोनो पता नहि छल । भिखाक सेहो कोनो पता नहि छल।

ई समाचार बिजली जकाँ सौंसे पसरि गेल। प्रतिनिधि सभाक कार्यवाही स्थगित कए देल गेल। नेताजी गुप्त स्थानमे नुका गेलाह। ओहि दिन तँ सरकार नामक किछु होइत अछि से लगबे नहि करए। सभ एतबे कहैक जे एहिमे नेताजीक हाथ थिक। अपन कुर्सी बँचबाक हेतु आ लोकक ध्यान कतहु आओर लए जेबाक हेतु ई विस्फोट करबाओल गेल अछि। जतेक मुँह,ततेक गप्पक बात चलि रहल छल। मुदा हंगामा सेहो रुकि नहि रहल छल । राति भरि सौंसे सहरमे बम फूटबाक अवाज होइत रहल,कतहु-

कान्ह गोली चलबाक अवाज सेहो सुनाइ पड़ल । लगैत नहि छलैक जे ई आतंक सहज थिक । चारू कात अशांतिक साम्राज्य पसरि गेल छल।

मुदा हमरा सामने ई सभसँ पैघ समस्या छल जे शिखाक कोनो जानकारी नहि भेटि रहल छल । संदीप आ शक्तिनाथ सेहो नहि भेटि रहल छलाह । कहि नहि जीवित छथि की नहि? ई प्रश्न मनि लागि हमरा परेशान कए रहल । हम ईएहसभ सोचैत अपन कोठरीमे असगर पड़ल छलहुँ की खटकँ अवाज भेल ।

हम कवाट खोलैत छी । देखैत छी जे शक्तिनाथ ठाढ़ अछि। सौंस देहमे खून लागल रहैक । पैरसँ माथ धरि कोकटा पट्टी लागल छलैक । मुदा ओ होसमे छल । चलि सकैत छल ।

"तूँ?"

"हँ ।"

"कोना छलह?"

"हम आ संदीप शिखाकेँ घरमे सुतायल ठाढ़ रही । विस्फोटक बाद शिखाक टाँगमे बन्दूकसँ खून बहए लागल रहैक। चारू कात अन्हार गुज्ज, किछु नहि देखा रहल छल । संयोगसँ एकटा पुलिसक जीप आएल । हमसभ ओहिमे बैसि अस्पताल पहुँचलहुँ ।

"मुदा शिखा अछि कतए? संदीपक की हाल छैक?"

"शिखा अस्पतालमे अछि। संदीप ओकर लग अछि। ओकरा मामूली चोट लागल छैक। मुदा शिखाक देहसँ बहुत खून निकलि गेल छैक। बड़ीकाल धरि खून खसैत रहि गेलैक। तखन बहुत दूरीसँ पहुँचल। तखनसभ किछु पता नहि रहल छैक। किछुटाकाक गुनाँ काज छैक, किछु गोटकेँ खून सेहो चढ़एबाक हेतु लए जाए पड़त। हम गाड़ी हेतु भागल-भागल एहिठाम आएलहुँ अछि।"

27

नेताजी एहि घटनाक्रमसँ हिलि गेल रहथि। कुर्सी बाँचब असंभव लागि रहल छलनि। असलम हालत एहन भऽ जाएत तकर अनुमान हुनका नहि रहनि। नेताजीक अंतर्राष्ट्रीय तस्कर गिरोहसँ पुरान संबंध रहनि। असामाजिक तत्वसभ तँ हुनकर चुनावक खर्चा कहिआसँ उठबैत रहल छल। इलाकाक नामी गुंडासभ सेहो समय-समयपर अपन सेवा हुनका दैत छलनि। मुदा ई सभ काज निःशुल्क तँ रहैक नहि। एक लगाउ, दस पाउक सिद्धान्तपर ओ सभ काज करैत छल। घटनाक निर्माण ओएह सभ रहैत छल। ओएहसभ उद्घाटन करबैत छल आ अंतमे शांति स्थापनाक नामपर समाजमे आगू आबि कऽ नेताजीक

छलनिकँ चमकबैत ठाउन सन छल। आम आदमी तँ थाकल आम छल,कखन गाछसँ खसि पड़त आ ओकरा कँ लोकि लैत,क ओकर उपयोग करत तकर कोनो ठेकान नहि रहैत छल। ओ सन तँ मात्र मूकदर्शक छल। असली कर्ता-धर्ता तँ कड़ा आडान छल। कुलमिला कऽ एकटा दुष्चक्र जकाँ फँसि गेल छल आ ओहीमे रहल नहि जाइत छल। चुनाओ तँ एकटा नाटक छलैक। कड़ा जित,सरकँ गुंडा,अपराधी चाहुँ करी नहि तँ पार्टी चलैत कोना,सरकारी धनक चाहुँ होएत कोना?पार्टीसँ मजगुत होइत कोना? समस्या बड्ड गहींर छलैक। कतेको लोक सुधारक प्रयास करैत-करैत एहि दुनियाँकँ छोड़ि गेलाह। मुदा समस्या जस-क-तस नहि गेल। नेताजी सभ-सभ लोकक सर्वस्व बनल रहलैक।

असलम नानी निकलल कांतकसँ कहि-कहि पसरल छल तकर अनुमान लगाएब बड्ड मोसकिल छल। कड़ा नहि चाहैत छल जे एहि घटनाक्रमसँ जुड़ल जानकारी बाहर आबए। तँ निजययूनम जा कऽ बसक शिक्षा प्राथमिकी लिखबा देलक मुदा बात आगु नहि बढ़ि सकल। उलट ओकर शक्तियूनम पड़ँचाहि हुनाहु अपुपन मूसीबत रहए गेल। सभलोकक ध्यान ओमरहर बँटि गेल। सभ अपन जान बँचबएम लागि गेल। अपन संबंधीक इलाज करबाम लागि गेल। जिनकर संबंधी,इष्ट-मित्रक एहि घटनामे मृत्यु रहए गेलनि से सभ हुनकर अंतिम संस्कारम लागि गेलाह,श्राद्ध करए लगलाह। तकर बाद बम विस्फोटक जाँच शुरु रहल। निष्ठ किछुगोटकँ जाँचक हेतु बजाओल जाए। लोकसभ

एहिसभसँ बहुत घरसान भऽ गेल। बहुत रास निर्दोष लोकसभक नाम ओहि मामिलामे दऽ देल गेलैक। एकरसभक मूल उद्देश्य असली दोषीसभकेँ बँचाएब छल। नगाजीक कुर्सी सलामत रहए तेँ बँकिऽ लोक सभ बँचल रहए। तेँ तमाम असामाजिक तत्व,बड़का-बड़का ठीकेदार,व्यापारी सभ जी-जानसँ नगाजीकेँ बँचबएमे लागि गेल रहए। ओहीक्रममे शिखाकेँ शुरूएमे तेना देबाक हेतु बम विस्फोट कराओल गेल रहैक। मुदा मामिला उनटागिसँ बसी बढ़ि गेलैक। बहुत रास लोक घायल भऽ गेल। कतेको निर्दोष लोक मारल गेल। मुदा शिखा ठामहि बँचि गेलि। घायल ओहो भेल रहए,मुदा जान बँचि गेलैक। संजोगसँ अस्पतालमे नीक डाक्टर पकड़ा गेलखिन। ओ दिन-राति एक लऽ देलनि। हुनक परिश्रमक परिणाम भेल जे पन्द्रह दिनक भीतर शिखा स्वस्थ भऽ अस्पतालसँ वापस भऽ गेलि। ओहिना प्रसन्नता, नगाजीक विनाशक हेतु कृत संकल्प ।

नारी निकेतन मामिलाक कोर्ट स्वयं संज्ञान लेलक । परिस्थितिकेँ देखैत कोर्ट एहि मामिलाक जाँच सीबीआइकेँ दऽ देलक । तकर बाद तँ सौंस हरकंप मचि गेल । नारी निकेतनक कर्ता-धर्तासभ पकड़ल गेलाह । सभटा कागजातसभ जब्त कऽ लेल गेल । किछु स्थानीय लोकसभक सहयोगक आधारपर नारी निकेतन लगपासमे जमीनक नीचाँसँ कतेको मृत लोकसभक कंकाल भेटल । नारी निकेतनसँ कतेको युवतीसभ गायब छलि । ओकरासभकेँ जना-तना पता लगाओल गेल । अखबार,मीडिया एहि समाचारसभसँ

पाटल रहैत छल। एहिसँ घटनाक बाद नगाजीक कुर्सी जाएब निश्चित लागि रहल छल।

तखनसँ शिखा श्वेतवस्त्राक नामसँ सौंसे परिचित भेल जा रहल छलि। हुनकर जनक्रान्तिदलक मुख्यालयमे भेल बैसारमे शिखाकेँ पार्टीक अध्यक्ष बनबाक प्रस्ताव कएलन्हि। मुदा ओ साफे मना कऽ देलक।

"हमरा कोनो पद नहि चाही। कोनो सम्मान नहि चाही। बस न्याय चाही। न्याय हमरटा नहि चाही, ओकरासभकेँ भेटबाक चाही जे सुनैत नामपर नारी निकेतनमे रहबाक बाद घोर असुरक्षित भऽ गेल छलि, समाजक तथाकथित पैघ-पैघ लोकक वासनाक शिकार भऽ गेल छलि। से जँ नहि भेल तँ हम एहि हेतु प्राण उत्सर्ग कऽ देब। मुदा रुकब नहि, झुकब नहि। जीवन पर्यन्त लड़ैत रहि जाएब। इएह हमर जीवनक एकमात्र उद्देश्य अछि।"

नारी निकेतन काण्डक जाँच जना-जना आगू बढ़ए लागल, नगाजीक स्वास्थ्य तहिना गड़बड़ाइत गेलनि। ताहूसँ दिन-राति लागल रहए। मुदा बिमारीक किछु थाह लगबे नहि करैक। मुदा नित्य एकटा नव समस्या हुनका होइत गेलनि। नगाजीक स्वास्थ्यक समाचार आखिर बाहर आबिए गेल। लोकसभमे चर्चा होअए लागल

"एकर पाप तिउआ रहल छैक।"

"कर्मक फल तँ भोगहि पड़ैत छैक।"

"एकर नाम हब करैक। भगवान सभ देखैत छथिन। तरह तरहक बातसभ लोकसभ करए। नेताजीक असली बिमारी की रहनि से मुदा डाक्टर नहि बूझि सकल। एहिना अनुमानसँ इलाज करैत रहल।

28

शिखाक निष्ठुरी रुखि देखि संदीपक हृदयपर बड्ड आघात लगलैक। कष्टमे हमहू सभ रही। मुदा समस्याक समाधान कोना आसान नहि छल,एकदिनमे तँ होएब वला बात नहिए रहैक। निश्चय कए सोचि गेल व्यवस्थाकेँ कानून सम्मत तरीकासँ बदलि देब आसान काज नहि छलैक। मुदा विकल्पो नहि छलैक। तँ हम आ शक्तिनाथ राति-राति भरि जागि कए भविष्यक आंदोलनक प्रारूप बनबएमे लागल रही। मुदा संदीपकेँ बड्ड अनमनस्यक देखिऐक। गप्प-सप्पमे ओ आब बेसी रुचि नहि लैत छल। एकदिन हम पूछबो कलिऐक-

"की बात छैक? आइ-काल्हि तूँ बड्ड गुम्म रहैत छह?"

परंतु ओ किछु जवाब नहि देलक। आओर गंभीर भए गेल। हमहू बेसी नहि कहलिऐक। मनमे होअए लागल जे की

पता कहीं उग्र होए जाइक । ओ कोनो नबालिग तँ अछि नहि। तँ समयक परीक्षा करब उचित बुझाएल । ई बात हम नीकसँ बुझिऐक जे भिखाक संग रहल बुढ़ाँतक ओकर मनोदशापर बड्ड प्रतिकूल प्रभाव पड़ल अछि । उमीद रहए जे कालक्रम ओ स्वयं संतुलित समाधान दिस बढ़त । मुदा से रहल नहि । कौखन ओकरा हम भिखाक संग एकान्ती करैत देखिऐक । हमरा चिंता होअए जे कहीं ई सभ कोनो गलत रस्ता ने पकड़ि लिअए ।

एकदिन राति हम उठलहुँ तँ संदीप नहि रहए । ओकर ओछाओन खाली रहैक । बाहर रस्ता दिस देखलहुँ । सौंस सुन्न छल। कतहु कओ नहि देखाइत छल । रहि-रहि कए एकटा कुकुरक भुकबाक अवाज जरूर सुनाइत छल । हमरा चिंता भेल । भेल जे शक्तिनाथकेँ उठाबी । मुदा ओ निचेन सुतल रहए। दिन भरि काज करैत-करैत बड्ड थाकि गेल रहए । प्रात भेने ओहिना काज करबाक छलैक । गाम-गाम जन-जागरण करबाक हेतु घूमबाक छैक । तँ ओकरा किछु नहि कहलिऐक, सुतल छोड़ि देलिऐक । हम उठि बैसलहुँ । कखनहु बाहर कखनहु अंदर होइत रहलहुँ । मुदा संदीप कतहु नहि देखाएल ।

दुपहर रातिएम संदीप अपन डेरासँ निकलल । ओकरा रानीक बड्ड त्रास रहय बुझल रहैक । रानी एहिबातसँ बड्ड चिंतित रहबा करथि। मुदा कोनो तरहं ओकरा काबू नहि कए सकल । संदीप हमरासभक संग आबि गेल । रानीक ध्यान निराधी भए गेल । दिन-राति जनक्रान्ति दलक कार्यक्रमकेँ आगू

बढ़ैबामे लागल रहल । मुदा शिखा कांतसँ ओकर दिशा बदलि गेलैक । ओ जल्दी सँ जल्दी नेताजीक विनाश चाहैत छल । ओही क्रममे ओ ओहि लागि विदा भेल रहए । ओकरा नीकसँ पता रहैक जे नेताजी लागि कए सरकारी निवासमे नहि, अपितु शहरक हटकी एकटा ठीकेदारक मकानमे रहैत अछि । ओना ई हुनकर रासलीलाक ओनिआन रहैत छनि। तेँ हाथबासँ पहिने ओ अपन सरकारी निवासपर लौटि जाइत छथि। ताहि अनुमानक अनुसार ओ ठीकेदारक घर लग पहुँचल । ओहि घरक आगू-पाछू किछु नहि छलैक । ओना कोनो सरकारी सुरक्षा व्यवस्था सेहो नहि रहैक। ओ मकानक पछिला गेटसँ घुसल । खिड़कीसँ देखन देखलक । नेताजी महिलाक संग पड़ल छलाह। ओहि कोठरीक बगल बला कोठरी लग गेल । कनीक प्रयाससँ ओकर खिड़कीक नीचाँ सटकि गेलैक । ओ कोठरीमे पैसि जाइत अछि । जेबीमे सँ छुरी निकालैत अछि । दुनू कोठरीक बीच केवार खुजल रहैक। ओ सावधानीपूर्वक आगू बढ़ैत अछि । नेताजी खोंढ़ काढ़ि रहल छलाह। हुनकर बगलमे सूतल महिला सेहो निन्नमे छलि । संदीप आगू बढ़ल । छुरीकेँ कसि कए पकड़लक । एकबेर रहन ध्यानसँ नेताजीकेँ देखलक आ जानसँ छुरी हुनकर छातीमे घुसबाक हेतु चला देलक। संजोग एहन भेलैक जे छुरी नेताजीक छातीमे नहि लागि हुनकर बाँहमे लगलनि। ओ चिचिआ उठलाह। हुनका एना चिचिआइत देखि बगलमे सूतलि ओ महिला उठि बैसलि । संदीप ओही छुरीसँ दोबारा नेताजीपर आक्रमण करबाक प्रयास कएलक । ताबे ओ महिला सजग भऽ गेल छलि । ओकरा देखि पाँज पकड़ि

लेलक। नेताजी सेहो उठि गेल छलाह। ओकरा धन दए चिढ़ि गेलाह। ओहन हालतमे उठि संदीपक हाथसँ छड़ी छिनि लेलक। मोबाइल उठौलक आ ककरो फोन कए देलक। ओ बाबू! देखिते-देखिते चारिटा मुसंड ओतए हाजिर भए गेल। संदीप ठामहि पकड़ल गेल।

संदीपक योजना असफल भए गेलैक। उहो आब ओ संकटमे फँसि गेल। प्रायः ओकरा ई नहि बूझल रहैक जे नेताजी बड़का घुटल आदमी अछि। बसक ओ गुरु स्थानमे आनंद मना रहल छल,मुदा संकटसँ निपटबाक अपन निजी सूत्रओक ओरिआन तँ करहि छलाह। आब तँ संदीप पकड़ाइए गेल छल। मुसंडसभ ओकरा बड़ मारि मारलकैक। मोबाइल छिनि लेलकैक। जेबीमे जे कनी-मनी टाका रहैक सेहो छिनि लेलकैक। ओ अधमरु भए गेल छल। ओहन हालतमे मुसंडसभ ओकरा बीच रस्तापर फेकि घसकि गेलैक।

29

मुसंडमेसँ कओ नेताजीक पत्नी महिमाकेँ फोन कए घटनाक सूचना देलकनि। ओ तँ अपने परेसान छलीह। रातिमे नेताजीकेँ गायब देखि चिंतामे रहथि। ओना ई कोनो नव बात नहि छल। नेताजी अहिना करैत रहैत छलाह। महिमा एहिबात सँ बड़का दुखी

रहैत छलीह। कैकबेर मान हानि आ राजीसँ संबंध विच्छेद कए ली। मुदा राजी घटी मानि लैत छलाह, हुनसँ एहन गलती नहि करबाक प्रतिज्ञा करैत छलाह। मुदा प्रात भेने फेर ढाकक तीन पात। ओ पुरना चालि पकड़ि लैत छलाह। राजीक राजनीतिक हस्तियकेँ ख्यालमे रखैत महिमा सेहो बातकेँ बेसी नहि बढ़बैत छलीह। मुदा ओहि दिन तँ बात स्पष्टः सार्वजनिक भए गेल छल। राजी घायल भए गेल रहथि। हुनका संगे सुतल महिला हुनका अस्पताल लए गेलनि। अस्पतालमे लोकक करमान लागि गेल छल। पुलिसबला पूछ-ताछ हेतु ओहि महिलाकेँ पकड़ि लेलकैक। पुलिसकेँ बहाना करैक। मुदा ओ सभ अपना हिसाबे जाँचमे लागल रहल। पुलिस सभक दबाब देलकैक आ आखिर ओ महिला बाजिए देलकैक-

"हम नारी निकेतनमे रहैत छलहुँ। एक राति किछु बदमाससभ हमरा अपहरण कए लेलक। तकर बादसँ दोबारा ओतए नहि जा सकलहुँ। दिनमे कतहु, रातिमे कतहु पहुँचा देल जाइत छी। सालक-साल एहिना समय बीति रहल अछि। कतओ देखनाहर नहि अछि।"

नारी निकेतन कांडक जाँच कए रहल सीबीआइ अस्पताल पहुँचि ओहि महिलाकेँ अपन कब्जामे लए आगूक पूछ-ताछ हेतु अपन कार्यालय लए चलि गेल। राजीक बामा हाथमे लागल घावपर टाँका लगा देल गेल। तकर बाद विशेष कक्षमे राखि देल गेल। संदीप सेहो अस्पताल आनल गेल। ओकर हालत बड्ड खराब छलैक। यत्र-तत्र चोटक निसान छलैक। कैकठामसँ खून

बहि रहल छलैक। दोसर नहि छलैक। लोकसभ तँ कहैक जे ओकर बँचनाइ मोसकिल अछि। अस्पतालमे डाक्टरसभ किछु नहि करैत छल। एक दिस नेताजी आ दोसर दिस ओकर शत्रु संदीप। एकहि अस्पतालक एकहि विभागमे। मुदा दुनूक सुविधामे आकाश-पातालक अंतर छल। यद्यपि नेताजीक स्थिति ठीक छल,सभ डाक्टर ओकरापर लागल रहैत छल। संदीपकेँ ओकर भाग्यपर छोड़ि देल गेल छलैक। सभ बात तँ ठीके छलैक जे अस्पतालक डाक्टरसभ ओकरा एहि अस्पतालमे भर्ती नहि करए चाहैत छल। संजोगसँ हम आ शक्तिनाथ ओहिठाम पहुँच गेल रही। अस्पतालक चारूकात हमर पार्टीक कार्यकर्तासभक मेला लागि गेल छल। हमसभ अस्पतालक अधीक्षककेँ भेंट कलिऐक। तकर बाद संदीपक इलाज शुरू भए सकल।

संदीप बँचि गेल। नेताजी सेहो बँचि गेलाह। मुदा एहि घटनासँ नेताजीक राजनीतिक भविष्य डमाडोल भए गेलनि। प्रतिनिधि सभामे भारी हंगामा भेल। नेताजीक खिलाफमे पक्ष-विपक्षसभ एकमत भए गेल। एहन आदमी राष्ट्रप्रमुख नहि रहि सकैत अछि।

"पहिने ई इस्तीफा दिअए तकर बाद आओर किछु।"

आखिर प्रतिनिधि सभा स्थगित भए गेल। नेताजी बड्ड मोसकिलमे फँसि गेल छलाह। अपन खास-खास लोकसभसँ मंत्रणा कलथि। सभ एकमतसँ नेताजीक इस्तीफापर सहमत छल। आखिर नेताजी एकर समाधान तकलथि

"ठीक छैक । अहाँ लोकनिक ई बात हम मानि लैत छी। मुदा अहूँसभ हमर एकटा बात मानि लिअ। "

"बाजू की प्रस्ताव अछि?"

"हमरा बदलामे हमर श्रीमतीजी नायबप्रमुख बनतीह ।"

"एहना कतहु होइत अछि? ओ की जानए गेलथि राजनीति?"

"कते घरसँ सिखए नहि अबैत अछि । आखिर ई महिला सशक्तीकरणक युग छैक । ताहि समयमे अहाँसभ एहन बात कोना कए सकैत छी?"

"पार्टीक अंदर एक सँ एक अनुभवी लोक छथि, वरिष्ठ छथि, हुनकासभकेँ मौका देल जाए ।"

"हमर बात मानि लिअ । नहि तँ सभक सहयोग हमरा लग अछि । सभक गुप्त बातसभ बाहर आबि सकैत अछि । तखन तँ ततबे हएत से अहाँलोकनि जानी ।"

नेताजीक ओहिठामक सभ बैसारक जानकारी असामाजिक तत्वसभकेँ होइक। ओकरासभक हाथ ई सर्वकाल छल । सरकार बनाएब-खसाएब ओकरसभक साविक धंधा छल। सभ अपन-अपन जासूस नेताजीक लगपासमे राखि देलक । ओकर एक-एक गतिविधिक जानकारी लेबए लागल । जखन ई बात तय भए गेलैक जे नेताजी आब नायबप्रमुख नहि बनताह, तखन ओसभ

नेताजीपर सवार भए गेल। बेटा-बेटीसभ नेताजीकेँ घेरलक आ अपन-अपन हिसाब-किताब साफ करबाक दबाब बनबए लागल।

"अहाँ सभ अपन चिंताम छी। हम तखनहि हटब जखन महिमा ग्रामप्रमुख बनतीह।"

"एहना कहीं होइक अछि।"

"एहन होइक। हमसभकेँ छोड़ि बाप साफ कए देलिऐक अछि। छोड़ा कहि देलिऐक अछि जे जँ कहा तएबए करना गँ तकर हाल हमरासँ खराब भए जेतैक। सभक हाल पूरा तैयार छैक। बस मीतिआम जबाक देरी अछि।"

"असामाजिक तत्वसभ मांछपर हाथ देलक। बाजल-

"जँ स हाल्लक गँ हमसभ अहाँक संग छी। हमरसभक हितक ध्यान राखल जबाक चाही। बस एतब। हमरासभकेँ एहिसँ कोनो मतलब नहि अछि जे ग्रामप्रमुख अहाँ छी, की महिमा बनैत छथि, की कहा आउत।"

"तखन निश्चिंत भए अपन काजम लागल रहू। किछु पार्टीफंडम जमा कए दिऔक। कारण अखन खर्च बढ़ि गेल छैक। आगू हम देखि लब।"

"एनमस्कू।" -सभ एकस्वरसँ बाजि उठल।

30

ओम्हर महिमाक शपथग्रहण समारोह भऽ रहल छल,नेतासभ सलाहकार बनबाक हेतु पाँतिसँ बैसल छलाह,इलाकाक असामाजिक तत्त्वसभ उत्सव मना रहल छलाह। सदर बजारक मिष्ठान्न भंडार जनताक हेतु खालि देल गेल छल। जे जतेक मिठाइ खा सकऽ,जतेक अपना संगे लऽ जा सकऽ कोनो मनाही नहि,कोनो शुल्क नहि। सहनाइ रसनचौकी बाजि रहल छल। नव राज्यप्रमुखक स्वागतमे सहर भरिमे तोरनद्वार बनाओल गेल छल। रंग-बिरंगक फूलसभसँ सौंस रस्ताकेँ पाटि देल गेल छल। जनतामे एहन संदेश देबाक प्रयास कएल जा रहल छल जे बितल बातकेँ बिसरि जाउ,आब सभकिछु नीक होएत। जनताक हेतु शासन दिन-राति काज करत। जरूरतिक सभ चीज सुलभ रहत। बिजली मुफ्त,भानसक हेतु गैस मुफ्त,ताव नहि गृहणीसभकेँ मास-मास पाँच हजारक पेनसन सेहो देल जेतैक। ककरा किछु करबाक काज नहि। सभटा भार सरकार उठाओत। लोकसभ बस स्नान,ध्यान कऽ पलथा मारि कऽ बैसि जाएत आ जलखै,चाह,भोजन सभ किछुक ओरिआन मुफ्तमे सरकार करतैक। ताव नहि,जे सभ दारू पिबैत छथि तिनका हेतु साँझमे दारू सेहो मुफ्त। जतेक पिबथु कोनो कमी नहि रहतनि। ओहिसभक बदलामे जनतासँ अपेक्षा कएल जाएत जे ओ सभ नव सरकारक आँखि मूनि कऽ समर्थन करैत रहताह। सरकार विरोधी

तह्निकेँ राष्ट्रद्रोही बुझाइ । नियमक बातमे नहि अड़ाइ आ जहिआ कहिओ भोट होउ, सरकारक पक्षमे मतदान कराइ ।

सरकारी घोषणासँ जनता बहुत खुस रहए । मास-मास पानि-बिजलीक बिल नहि देबए पड़ैक । मासमे दुवन किलोक-किलो मंगनीमे राशन भेटि जाइक । सभ अपन-अपन दरबाजापर ताश खेलाए, भोजन करए आ साँझ पड़ितहि सुति रहए ।

लोकसभ आपसमे गप्प करैत रहैत छल -

"भाइ! एहिसँ नीक सरकार नहि भए सकैत अछि? अपन लोकसभ नेताजीक बड़ाइ करैत छल । ओकरा खिलाफ तरह-तरहक आरोप-प्रत्यारोप लगा रहल छल ।" लोकसभ खुस छल । ओम्हर नेताजीक समर्थनमे असामाजिक तत्वसभ दिन-राति एक कने छल।

नेताजी आ हुनकर गिरोहक तमाम दुष्टताक अछैत शिखा अपन अभियानमे लागल रहलि । सरकार बदलि गेलैक। नव राज्यप्रमुख बनि गेलैक । जनताकेँ प्रलोभन दए मिला लेबाक सरकारी प्रयास चलैत रहलैक । मुदा शिखा अपन अभियानमे अडल छलि । एकदिन एहिना राति अपन समर्थकसभक संग शिखा निकलल छलि की ठीक सामनेसँ एकटा ट्रक टक्कर मारि देलकैक । ओकर जीपक अगिला हिस्सा चूकरी-चूकरी भए गेल । कैकगोट नीचाँ खसल । कैकगोट घायल भेल । शिखाकेँ सेहो कैकठाम चोट लगलैक । कार्यकर्तासभ ओकरा उठा-पूठा कए सरकारी अस्पताल पहुँचओलक । बदमाससभक योजना शिखाकेँ दुर्घटनामे खतम कए

𑒠𑒹𑒥𑒰𑒏 𑒩𑒯𑒻𑒏। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒮𑒹 𑒮𑒯𑒪 𑒢𑒯𑒱 𑒠𑒹𑒪𑒻𑒏। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒍 𑒮𑒦 𑒦𑒱𑒐𑒰𑒏 𑒣𑒕𑒰𑒋 𑒏𑒩 𑒁𑒮𑓂𑒣𑒞𑒰𑒪 𑒡𑒩𑒱 𑒣𑒯𑒳𑒿𑒔𑒱 𑒑𑒹𑒪। 𑒁𑒮𑓂𑒣𑒞𑒰𑒪𑒧𑒹 𑒃𑒪𑒰𑒖 𑒏𑒩𑒰 𑒩𑒯𑒪𑒱 𑒦𑒱𑒐𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒍𑒑𑒯𑒱 𑒮𑒰𑒟 𑒏𑓄 𑒠𑒹𑒥𑒰𑒏 𑒫𑓂𑒨𑒫𑒮𑓂𑒟𑒰𑒧 𑒪𑒰𑒑𑒪 𑒩𑒯𑒪। 𑒏𑒼𑒢𑒰 𑒮𑒱𑒧𑒩𑒢𑒏𑒹𑒿 𑒧𑒱𑒪𑒰 𑒪𑒹𑒢 𑒕𑒪। 𑒍 𑒦𑒱𑒐𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒖𑒯𑒢𑒏 𑒮𑒳𑒑𑓂𑒑𑒰 𑒒𑒰𑒨𑓄 𑒖𑒰𑒃𑓄 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪 𑒏𑒲 𑒋𑒢 𑒧𑒾𑒏𑒰𑒣𑒩 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒞𑒰𑒏𑒢 𑒍𑒞𑓄 𑒣𑒯𑒳𑒿𑒔𑒱 𑒑𑒹𑒪। 𑒮𑒳𑒑𑓂𑒑𑒰𑒏 𑒔𑒱𑒢𑓂𑒯𑒰𑒮𑒿 𑒍 𑒥𑒴𑒗𑒱 𑒑𑒹𑒪 𑒖𑒹 𑒥𑒰𑒞 𑒏𑒲 𑒁𑒕𑒱। 𑒍 𑒮𑒱𑒧𑒩𑒢𑒏𑒹𑒿 𑒡𑒋𑒪 𑒔𑒧𑒙𑒰 𑒏𑒮𑒱 𑒠𑒹𑒪𑒏। 𑒮𑒱𑒧𑒩𑒢𑒏 𑒯𑒰𑒟𑒮𑒿 𑒮𑒳𑒑𑓂𑒑𑒰 𑒐𑒮𑒱 𑒣𑒛𑓃𑒪𑒻𑒏। 𑒮𑒱𑒧𑒩𑒢 𑒯𑒏𑓂𑒏𑒩 𑒕𑒪𑒱। 𑒖𑒰𑒫 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒥𑒴𑒗𑒱𑒞𑓄,𑒮𑒧𑓂𑒯𑒰𑒩𑒱𑒞𑓄 𑒞𑒰𑒫 𑒞𑒰𑒏𑒢 𑒯𑒳𑒢 𑒋𑒏 𑒔𑒧𑒙𑒰 𑒪𑒑𑒰 𑒠𑒹𑒪𑒏। 𑒞𑒰𑒫 𑒣𑒰𑒕𑒴𑒮𑒿 𑒔𑒰𑒩𑒱𑒙𑒰 𑒧𑒳𑒮𑓂𑒞𑓀𑒛 𑒠𑒾𑒛𑓃𑒪। 𑒪𑒑𑒣𑒰𑒮𑒧𑒹 𑒃𑒪𑒰𑒖 𑒏𑒩𑒰 𑒩𑒯𑒪 𑒩𑒼𑒑𑒲𑒮𑒦𑒏 𑒮𑓀𑒥𑓀𑒡𑒲 𑒮𑒦 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒮𑒯𑒙𑒱 𑒏𑓄 𑒍𑒞𑓄 𑒂𑒥𑒱 𑒑𑒹𑒪। 𑒬𑒏𑓂𑒞𑒱𑒢𑒰𑒟 𑒞𑒧𑒰𑒏𑒳𑒪 𑒐𑒫𑒰𑒏 𑒯𑒹𑒞𑒳 𑒍𑒮𑒰𑒩𑒰𑒣𑒩 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒪। 𑒯𑒪𑓂𑒪𑒰 𑒮𑒳𑒢𑒱 𑒏𑓄 𑒍𑒯𑒼 𑒂𑒥𑒱 𑒑𑒹𑒪। 𑒣𑒳𑒪𑒱𑒮𑒮𑒦 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒠𑒾𑒛𑓃𑒪। 𑒏𑒢𑒲𑒏 𑒏𑒰𑒪𑒧𑒹 𑒪𑒰𑒑𑒪 𑒖𑒹𑒢𑒰 𑒍𑒞𑓄 𑒥𑒱𑒯𑒰𑒛𑓃𑒱 𑒅𑒚𑒱 𑒑𑒹𑒪। 𑒥𑒱𑒯𑒰𑒛𑓃𑒱𑒍 𑒋𑒯𑒢 𑒖𑒹 𑒬𑒰𑓀𑒞 𑒯𑒹𑒥𑒰𑒏 𑒢𑒰𑒧 𑒢𑒯𑒱 𑒪𑓄 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪।

𑒋𑒯𑒢𑒰 𑒧𑒰𑒯𑒾𑒪𑒧𑒹 𑒧𑒳𑒮𑓂𑒞𑓀𑒛𑒮𑒦 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒰𑒮 𑒏𑒩𑒪𑒏 𑒖𑒹 𑒮𑒱𑒧𑒩𑒢𑒏𑒹𑒿 𑒒𑒱𑒔𑒢𑒹 𑒥𑒰𑒯𑒩 𑒔𑒪𑒱 𑒖𑒰𑒋। 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒧𑒳𑒮𑓂𑒞𑓀𑒛 𑒦𑒱𑒐𑒰𑒏 𑒪𑒑𑒲𑒔 𑒣𑒯𑒳𑒿𑒔𑒱 𑒑𑒹𑒪। 𑒍 𑒮𑒦 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒰𑒮 𑒏𑒩𑒪𑒏 𑒖𑒹 𑒦𑒱𑒐𑒰𑒏 𑒑𑒪𑒰 𑒠𑒥𑒰 𑒠𑒲। 𑒋𑒞𑒥𑒯𑒱𑒧𑒹 𑒠-𑒠𑒢𑒰𑒠𑒢 𑒠 𑒠𑒢𑒰𑒠𑒢 𑒖𑒢𑒏𑓂𑒩𑒰𑒢𑓂𑒞𑒱𑒠𑒪𑒏 𑒏𑒰𑒩𑓂𑒨𑒏𑒩𑓂𑒞𑒰𑒮𑒦 𑒍𑒞𑓄 𑒣𑒯𑒳𑒿𑒔𑒱 𑒑𑒹𑒪। 𑒍𑒞𑓄 𑒣𑒳𑒪𑒱𑒮𑒮𑒦 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒂𑒥𑒱 𑒑𑒹𑒪। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒏𑒩𑒞𑓄 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒢𑒯𑒱। 𑒣𑒳𑒪𑒱𑒮𑒮𑒦 𑒧𑒴𑒩𑓂𑒞𑒱 𑒖𑒏𑒰𑒿 𑒞𑒧𑒰𑒮𑒰 𑒠𑒹𑒐𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒱 𑒑𑒹𑒪। 𑒥𑒰𑒞 𑒥𑒜𑓃𑒻𑒞 𑒠𑒹𑒐𑒱 𑒧𑒳𑒮𑓂𑒞𑓀𑒛𑒮𑒦 𑒖𑒰𑒢 𑒥𑒿𑒔𑒰 𑒏𑓄 𑒦𑒰𑒑𑒪। 𑒮𑒱𑒧𑒩𑒢 𑒣𑒏𑒛𑓃𑒪 𑒑𑒹𑒪𑒱। 𑒦𑒱𑒐𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒩𑒏𑓂𑒭𑒰𑒩𑓂𑒟 𑒖𑒢𑒏𑓂𑒩𑒰𑒢𑓂𑒞𑒱𑒠𑒪𑒏 𑒏𑒰𑒩𑓂𑒨𑒏𑒩𑓂𑒞𑒰𑒮𑒦 𑒍𑒏𑒩𑒰 𑒔𑒰𑒩𑒴𑒏𑒰𑒞𑒮𑒿 𑒒𑒹𑒩𑒱 𑒪𑒹𑒪𑒏।

मीतिआवलासरकेँ सङ्ग ओहो समाचान यता लगलैक । दखिन-दखिन अस्पतालक दृश्य सौंस देशमे टेलीँभीजनक माध्यमसँ प्रसारित होबए लागल । सभ ओकर पूछि रहल छल-

"आखिर ओहो सभ कएलक की?"

"जकरा ओहिमे नागरीक षडयंत्र अछि ।"

"सभहक कहब छा ओकर नीचतापन छानि जाएत स नहि बुझा रहल छल ।"

ओहि पनहक गप्प गामक-गाम होबए लागल ।

थोड़ कालक बाद शक्तिनाथ हमना स्वान कहलक-

"कहाँ छी?"

"किएक?"

"जल्दी निकलू । हम ठाढ़ि आबि रहल छी ।"

"की भेलैक?"

"आहि रे बा! अहाँकेँ सङ्ग नहि बुझल अछि? सौंस दुनिआमे हल्ला भऽ गेल अछि।"

"बाप की छैक से कहू ना।"

"शिखापर ट्रक चढा देने रहैक। संजोगसँ ओकर जान बँचि गेलैक। मुदा?"

"मुदा की?"

"एकर बादो ओ सभ शिखाक अस्पताल धरि पछोड़ केने रहल, चाहलक जे ओतहि साफ करवा दी।"

"से केना?"

"ओकर बात हेरफेर करब ठीक नहि। हम पहुँचिए रहल छी। संगे आएब चलब। सभ बात अपने बूझि जेबैक।"

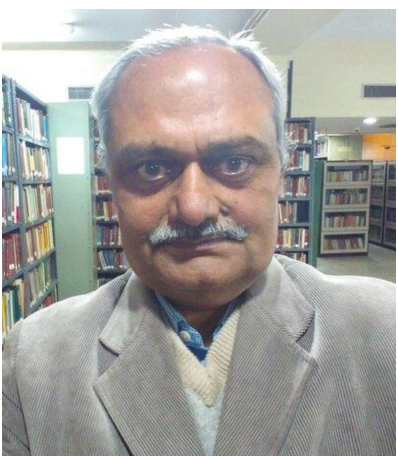
"ठीक छैक आबह।"

-नवीन्द्र नारायण मिश्र, पिताक नाम: स्वर्गीय सूर्य नारायण मिश्र, माताक नाम: स्वर्गीया दयाकाशी देवी, वयस: ६९ वर्ष, पैतृक ग्राम: अन्दर ठीह, मातृक: सिम्रिआ घाटी, वृत्ति: राज्य सरकारक उप सचिव (सेवानिवृत्त), स्पेशल मेट्रोपोलिटन मजिस्ट्रेट, दिल्ली(सेवानिवृत्त), शिक्षा: चन्द्रधारी मिथिला महाविद्यालयसँ बी.एस-सी. भौतिक विज्ञानमे प्रतिष्ठा : दिल्ली विश्वविद्यालयसँ विधि स्नातक, प्रकाशित कृति: मैथिलीमे: प्रकाशन वर्ष-२०११ १.रातसँ साँझ धरि (आत्म कथा),२. प्रसंगवश (निबंध), ३.स्वर्ग एतहि अछि (यात्रा प्रसंग); प्रकाशन वर्ष-२०१८ ४. हुलास (कथा संग्रह) ५. नमस्त्यै

(उपन्यास) ६. विविध प्रसंग (निबंध) ७.महराज(उपन्यास) ८.लजकाटन(उपन्यास); प्रकाशन वर्ष:२०१९ ९.सीमाक ओहि पार(उपन्यास)१०.समाधान(निबंध संग्रह) ११.मातृभूमि(उपन्यास) १२.स्वप्नलोक(उपन्यास); प्रकाशन वर्ष:२०२० १३.शंखनाद(उपन्यास) १४.सङ्घर्ष थिक जीवन(संस्मरण)१५.ढहैत देवाल(उपन्यास); प्रकाशन वर्ष:२०२१ १६.यात्रा(संस्मरण) १७.हम आबि रहल छी(उपन्यास) १८.प्रलयक पराग(उपन्यास); प्रकाशन वर्ष:२०२२ १९.बीति गेल समय(उपन्यास) २०.प्रतिबिम्ब(उपन्यास) २१.बदलि रहल अछि सरकार(उपन्यास) २२.राष्ट्र मंदिर(उपन्यास) २३.संयोग(कथा संग्रह) २४.नाचि रहल छलि वसुधा(उपन्यास) २५.दीप जरैत रहत (उपन्यास)।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.८.नवीन्द्र नारायण मिश्र- जय महाकाल



नवीन्द्र नारायण मिश्र

जय महाकाल

𑒏𑒼𑒩𑒼𑒢𑒰𑒏 𑒂𑒏𑓂𑒩𑒧𑒝𑒏 𑒥𑒰𑒠 𑒏𑒻𑒏𑒮𑒰𑒪 𑒡𑒩𑒱 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒪𑒼𑒏𑒢𑒱 𑒒𑒩𑒧𑒹 𑒥𑓁𑒠 𑒩𑒯𑒪𑒯𑒳𑓀। 𑒏𑒼𑒩𑒼𑒢𑒰 𑒏𑒧 𑒦𑒋 𑒑𑒹𑒪𑒰𑒏 𑒥𑒰𑒠𑒼 𑒍𑒏𑒩 𑒦𑒨 𑒥𑒢𑒪 𑒩𑒯𑒪। 𑒍𑒏𑒩𑒰 𑒧𑒼𑒢𑒮𑓀 𑒯𑒙𑒥𑒰𑒧𑒹 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒮𑒧𑒨 𑒪𑒰𑒑𑒪। 𑒣𑒕𑒱𑒪𑒰 𑒮𑒰𑒪 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒮𑒰𑒔 𑒫𑒱𑒫𑒰𑒯𑒏 𑒥𑒰𑒠 𑒯𑒧 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒥𑒹𑒏𑒞𑒲 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒰𑒑𑒩𑒰𑒖 𑒑𑒹𑒪-𑒩𑒯𑒲। 𑒍𑒯𑒱𑒚𑒰𑒧𑒮𑓀 𑒔𑒱𑒞𑓂𑒩𑒏𑒴𑒙 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒒𑒴𑒧𑒪 𑒩𑒯𑒲। 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒰𑒑𑒩𑒰𑒖𑒮𑓀 𑒮𑒙𑒪 𑒧𑒹𑒖𑒰 𑒞𑒯𑒮𑒲𑒪𑒧𑒹 𑒋𑒢𑒙𑒲𑒣𑒲𑒮𑒲𑒏 𑒏𑒰𑒩𑒐𑒰𑒢𑒰𑒏 𑒂𑒫𑒰𑒮𑒲𑒨 𑒣𑒩𑒱𑒮𑒩𑒧𑒹 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒯𑒧𑒮𑒦 𑒩𑒯𑒪 𑒩𑒯𑒲। 𑒞𑒏𑒩 𑒥𑒰𑒠𑒮𑓀 𑒒𑒩𑒹𑒣𑒩 𑒕𑒪𑒯𑒳𑓀। 𑒁𑒮𑓂𑒞𑒳,𑒧𑒼𑒢 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒠𑒱𑒢𑒮𑓀 𑒏𑒞𑒯𑒳 𑒒𑒴𑒧𑒥𑒰𑒏 𑒯𑒹𑒞𑒳 𑒫𑓂𑒨𑒑𑓂𑒩 𑒕𑒪। 𑒂𑒐𑒱𑒩 𑒯𑒧𑒮𑒦 𑒧𑒯𑒰𑒏𑒰𑒪𑒹𑒬𑓂𑒫𑒩,𑒍𑒧𑒏𑒰𑒩𑒹𑒬𑓂𑒫𑒩𑒏 𑒠𑒩𑓂𑒬𑒢 𑒏𑒩𑒥𑒰𑒏 𑒧𑒼𑒢 𑒥𑒢𑒹𑒪𑒯𑒳𑓀। 𑒞𑒰𑒯𑒱 𑒯𑒹𑒞𑒳 𑒅𑒖𑓂𑒖𑒻𑒢𑒧𑒹 𑒩𑒯𑒥𑒰𑒏 𑒖𑒑𑒯 𑒮𑒩𑒏𑒰𑒩𑒲 𑒯𑒰𑒪𑒲𑒛𑒹 𑒯𑒼𑒧𑒧𑒹 𑒦𑒋 𑒑𑒹𑒪। 𑒩𑒹𑒪𑒏 𑒙𑒱𑒏𑒙 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒏𑒙𑒱 𑒑𑒹𑒪। 𑒋𑒏𑒩 𑒥𑒰𑒠𑒼 𑒔𑒱𑓁𑒞𑒰 𑒦𑒋 𑒖𑒰𑒋 𑒖𑒹 𑒖𑒰𑒃𑒞-𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒮𑓂𑒫𑒰𑒮𑓂𑒟𑓂𑒨 𑒁𑒢𑒳𑒏𑒴𑒪 𑒩𑒯𑒱 𑒮𑒏𑒞 𑒏𑒱 𑒢𑒯𑒱? 𑒂𑒐𑒱𑒩 𑒍 𑒠𑒱𑒢 𑒂𑒥𑒱𑒋 𑒑𑒹𑒪। 𑒯𑒧𑒮𑒦 𑒥𑒰𑒃𑒮 𑒖𑒳𑒪𑒰𑒃𑒏 𑒔𑒰𑒩𑒱 𑒥𑒖𑒹 𑒙𑒻𑒏𑓂𑒮𑒲𑒮𑓀 𑒢𑒃𑒠𑒱𑒪𑓂𑒪𑒲 𑒙𑒲𑒮𑒢 𑒫𑒱𑒠𑒰 𑒦𑒋 𑒑𑒹𑒪𑒯𑒳𑓀। 𑒙𑓂𑒩𑒹𑒢 𑒕𑒳𑒙𑒥𑒰𑒏 𑒮𑒧𑒨 𑒣𑒾𑒢𑒹 𑒮𑒰𑒞 𑒥𑒖𑒹𑒮𑓀 𑒋𑒏𑒒𑓁𑒙𑒰 𑒣𑒯𑒱𑒢𑒹 𑒯𑒧 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒥𑒹𑒏𑒞𑒲 𑒙𑒲𑒮𑒢 𑒣𑒯𑒳𑓀𑒔𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒯𑒳𑓀।

𑒙𑒲𑒮𑒢𑒣𑒩 𑒣𑒯𑒳𑓀𑒔𑒪𑒰𑒏 𑒥𑒰𑒠 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒏𑒴𑒪𑒲 𑒚𑒲𑒏 𑒏𑒋𑒪𑒯𑒳𑓀। 𑒙𑒲𑒮𑒢𑒣𑒩 𑒣𑒯𑒱𑒪 𑒏𑒴𑒪𑒲𑒏𑒹𑓀 𑒣𑒞𑒰 𑒪𑒰𑒑𑒱 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒕𑒻𑒏 𑒖𑒹 𑒨𑒰𑒞𑓂𑒩𑒲 𑒋𑒮𑒲𑒯𑒮𑓂𑒩 𑒏𑒼𑒔𑒮𑓀 𑒖𑒰𑒋𑒞 𑒞𑓀 𑒍𑒏𑒩 𑒠𑒩 𑒠𑒳𑒑𑒳𑒢𑓂𑒢𑒰 𑒞𑓀 𑒦𑒃𑒋 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒕𑒻𑒏। 𑒞𑒟𑒰𑒣𑒱 𑒠𑒴𑒮𑒋 𑒙𑒰𑒏𑒰𑒧𑒹 𑒯𑒧𑒩𑒰𑒮𑒦𑒏 𑒥𑒰𑒞 𑒥𑒢𑒱 𑒑𑒹𑒪। 𑒂𑒑𑒴 𑒂𑒑𑒴 𑒮𑒰𑒧𑒰𑒢𑒮𑒦𑒏-𑒣𑒰𑒕𑒴 𑒯𑒧 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒥𑒹𑒏𑒞𑒲 𑒫𑒱𑒠𑒰 𑒦𑒹𑒪𑒯𑒳𑓀।-𑒮𑓁𑒑 𑒏𑒴𑒪𑒲 𑒂 𑒞𑒏𑒩 𑒣𑒰𑒕𑒴 𑒁𑒖𑒧𑒹𑒩𑒲 𑒥𑓂𑒩𑒱𑒖 𑒠𑒱𑒮𑒏 𑒋𑒮𑓂𑒏𑒪𑒹𑒙𑒩𑒣𑒩 𑒣𑒯𑒱𑒢𑒹 𑒍 𑒂 𑒞𑒏𑒩𑒥𑒰𑒠 𑒯𑒧𑒮𑒦 𑒠𑒐𑒱𑒢𑒰 𑒏𑒴𑒪𑒲 𑒏𑒰𑒞𑒮𑓀 𑒏𑒰𑒞 𑒔𑒰𑒪𑒱 𑒑𑒹𑒪। 𑒯𑒧-𑒣𑒾𑒢𑒹 𑒩𑒐𑒪𑒯𑒳𑓀। 𑒠𑒐𑒱𑒢𑒰 𑒂 𑒬𑓂𑒩𑒲𑒧𑒞𑒲𑒖𑒲 𑒮𑓁𑒑 𑒩𑒯𑒲। 𑒋𑒮𑓂𑒏𑒪𑒹𑒙𑒩𑒣𑒩 𑒏𑒳𑒢𑒏𑒢 𑒣𑒾𑒢𑒹 𑒚𑒲𑒏𑒮𑓀 𑒢𑒯𑒱

बैसि सकलनि। परिश्राम भेल त आधासँ ऊपर गेलाक बाद फेरकेँ पैर पिछड़ि गेलनि। हम अकचका गेलहुँ। ओ एस्कलटरपर घसिआइत बुझलीह। रच्छ भेल त कहुना कऽ ओ ओकर रलींगकेँ थामि ललीह। यदि स नहि होइत तँ ओ पाछू भर खसितथि आ पता नहि की होइत? साइत एकरा बड़का ग्रहसँ सक्षम छुटकारा भऽ गेल। हमसभ प्लटफार्म नंबर आठपर पहुँचि गेलहुँ।

ट्रेन प्लटफार्मपर लागल छल। हमरा सामनमे एसी रनक कोच संख्या एगारह छल। मुदा अखन ओहिमे पैसबाक अनुमति नहि छलैक। ओकर सफाइ चलि रहल छलैक। बाहर बड्ड गर्मी छलैक। तँ हम प्रयास कलहुँ जे जल्दीसँ ओहि डिब्बामे चलि जाइ। ताहि हेतु ओहिमे कार्यरत एकरा कर्मचारीकेँ आग्रह कलिएक। ओ सहमति दऽ देलक। हमदुनू बकरी ट्रेनक ओहि डिब्बामे बैसि गेलहुँ आ अपनसीटपर चलिओ गेलहुँ। मुदा ताबत आन यात्रीसभ सेहो ओहि डिब्बामे बैसि जएबाक दुराग्रह करऽ लागल। ओहिठाम कार्यरत कर्मचारीसभ से मना कऽ देलकैक। तकर बाद हल्ला शुरू भऽ गेल।

-अहाँ हिनकासभकेँ तँ जाए देलिअनि। हमसभ किएक नहि जाएब? हमरा तँ टिकट अछि।

आखिर एकरा कर्मचारी हमरा कहलक-

-अहाँसभ बाहर चलि जाउ। दासन यात्रीसभ परसानी कऽ रहल अछि। जखन डिब्बा चलबाक हेतु तैयार भऽ जएतैक

तखन हम चलि आएब।

-एहना कोना हएत अछि? हमसभ बूढ़ छी। बाहर ठम ठुलि रहल छल। गामसभक कहलाक बाद हमसभ एहिठाम अएलहुँ अछि। हमरासभकेँ टिकट अछि, एही डिब्बामे जगह अछि, तखन एना बैसिजा गेल छी, हम बाहर निकलबाक कोन बात हएत?

मुदा ओ सभ अड़ि गेल। तखन हमहुँ धमकी देलिऐक।

-बस तँ हम रेलमंत्रीकेँ सिकाइत करैत छी। आखिर हमरालोकनि वरिष्ठ नागरिक छी। उचित टिकट लेने छी आ एही ट्रेनसँ एही डिब्बामे जगह अछि। तखन किएक उठनि जाउ?

रेलमंत्रीक नाम सुनितहि ओसभ सकदम भए गेल। हमरासभक आगुक पनरा घेंचि देलक। हमहुँसभ निचेनसँ बैसि गेलहुँ।

आखिर ट्रेनक डिब्बा खुजल। यात्रीसभ धनाधन अपन-अपन सीटपर बैसि गेलाह। हमसभ तँ पहिनहिसँ बैसिए गेल

नियत समय सात बाजि कए पन्द्रह मिनटपर ट्रेन खुजल। हमसभ बड़ प्रसन्न रही। ट्रेन थोड़बे कालमे अपन गतिसँ चलि रहल छल। टीटी अएलाह। हमरासभक नाम पूछलथि। बस

ढाबा। किछु आन नहि। थोड़ कालक बाद रोजनक आदेश देल गेल। एकटा यात्री गोँ आनलाइन रोजनक आदेश देन नहथि। गोँ हुनकन रोजन मधुनाम ढुनम आबि सकलनि। ताव गोँ हमसभ रोजन कए निश्चिन्त भए गेल रही। जल रोजनालयसँ देल गेल हमन सभक रोजन बड्ड साधारण छल। हमना अहसास होइए जे हमहुँ किएक न आनलाइन रोजनक आग्रह कए ललहुँ?

राति रसि चललाक बाद ढुन निश्चित समयसँ एक घंटा पहिने ट्रेन छठ वज स्टेशन पहुँचि गेल। पछुआ मिनटम आराससँ हमसभ कछु सनकानक होटीत होम पहुँचि गेलहुँ। डाहिOाम मुख्यद्वारनियन कार्यनिरत चौकीदार हमनासभकेँ रोगन आबए देलक। स्वागत कउम कठा नहि छल। हम डाकना पूछलिएक-

-एहिOाम कठा आदमी नहि अछि की?

डा उत्तर देत अछि-

-हम अहाँकेँ आदमी नहि बुझाइत छी की?

डाकना आब की कहितिऐक? हमना चुप देखि डा बाजल-

-साग बज मनजन अएगाद। अहाँ चाही गोँ हुनका मावाइलयन रहान कए दिअनु।

-हुनकन मावाइल नंवन आ नाम एकटा कागजयन लिखि कए स्वागत कउम साटि देल गेल छल। हम हुनका डाहि मावाइल

नंबरपर फोन कलिअनि । ओहो ओएह बात कहलाह-

-सात बजे धरि अहाँसभ ओतहि बैसू। तकर बाद हम आबि सकब। ओना काल्हि साढ़े दस बजेसँ पहिने नहि भेटि सकत। कारण ओ नओ बजे धरि खाली होएत आ तकर बाद ओकर सफाइ कएल जाएत।

हम सामानसभ राखल सोफापर बैसि गेलहुँ। तावत एकटा आन परिवार पहुँचि गेलाह। ओहोसभ दिल्लीएसँ आबि रहल छलाह। थोड़ेकाल हुनकासभसँ गप्प सप्प कएलहुँ। नित्यकर्मसँ निवृत्त भेलहुँ। तावत कैंटिन खुजि गेलैक। हमसभ भोजनका बाद चाह पीब तावत होमक मैनेजर आबि गेल रहथि। हुनकासँ एकटा ट्रेवल एजेंटक मोबाइल नंबर लेलहुँ। हम ओकरा फोन करै छी

-हमरा लोकनिकेँ दस बजेक आसपास महाकालेश्वर, उज्जैन जएबाक अछि। टैक्सीक जोगार भऽ सकत की?

-किएक ने।

-कतेक टाका लगतैक?

-एकतीस सए। ओहिमे गेनाइ, ओहिठाम प्रमुख स्थानसभ घुमनाइ आ वापस होटल आएब सामिल अछि।

हम कहलिऐक-

-ठीक छैक। अहाँ टैक्सी वलाकेँ पठाउ।

हमसभ एहि बातसँ बड्ड प्रसन्न रही जे एतेक आसानीसँ टैक्सीक जोगार भए गेल। थोड़ेक कालक बाद टैक्सी वलाक फोन आएल। ओ दस बजे पहुँचि जाएत। हम सभ सोचलहुँ जे उज्जैन पहुँचिए कए क्षिप्रा नदीमे स्नान करब। दस बाजहि वला छल कि मनोज हमरासभकेँ कोठरी संख्या १०१मे पहुँचा देलाह। हमसभ अपन सामान उठाए राखि बाहर निकलल छलहुँ कि टैक्सी वला सेहो पहुँचि गेल। एकटा सामानमे (थारी,कुरता,अंगपोछा,साड़ी आदि राखि हमसभ टैक्सीमे बैसि गेलहुँ। टैक्सी अपन गंतव्य दिस विदा भेल। वाहनचालक बड्ड मधुर स्वरमे गबैत हनुमान चालीसा बजा रहल छलाह। बाहर मौसम बड्ड सुखद छल। मेघ लागल छल। कतहु कोनो परेसानी नहि छल। टैक्सी तीव्र गतिसँ अपन गंतव्य महाकालक दरबार दिस बढ़ि रहल छल।

महाकाल मंदिर

हमसभ बारह बजेक आसपास उज्जैन पहुँचि गेलहुँ। सभसँ पहिने क्षिप्रा नदीक घाटपर पहुँचलहुँ। चप्पल कारमे राखि देने रहियैक। कारसँ उतरि नदीक घाट धरि जेबामे बड्ड कष्ट भेल कारण सौंस पातर पातर पाथरक टुकड़ीसभ पसरल छल-जाहिपर पैर [illegible] छल। क्षिप्रा नदीक पानि गँ[illegible] कादोसँ बेसी मैल छल। ओहि पानिमे नहा कए की शुद्ध होएब? अपना मोन सोचलहुँ। तथापि हम दुनू बेकती बेरा बेरी पानिमे कहुना कए डुबकी लगौलहुँ। ओहिठाम आसपासमे बडी-

बढ़ीया मरल माछसभ पड़ल छल जकर दुर्गन्धसँ ओतए रहब बड्ड मोसकिल बुझाइत छल। संभवतः नदीमे बसी पानि बढ़ि गेलापर माछसभ बाहर खसि पड़ल आ ओतहि मरि गेल। जल्दीसँ स्नान कऽ हमसभ काल लग पहुँचलहुँ। लगीचमे महाकाल भैरवक मंदिर छल। हमसभ ओतए भैरवक दर्शन करबाक हेतु पाँतिमे लागि गेलहुँ। मुदा ओ पाँति की छल बुझू लोकसभ जिलबी जकाँ घूमि रहल छल। पाँच सएसँ बेसीए लोक ओतए पाँतिमे लागल छलाह। बच्चा नेना थोड़ कालपर सहो-नेना लोक आगू बढ़ैत छल। थोड़-बहुत भऽ जाइत छल। हालति देखि हमरा त बच्चा चिंता होइत छल।

-कहि नहि कखन धरि दर्शन होएत?-हम हुनका बेर बेर-कहिअनि।

-महाकालभैरवक दर्शन सहो करबाक अछि। एना नहि काना की होएत? एनामे कना दर्शन होएत?-हम दुनू बेरी आपसमे गप्प करैत रही। मुदा आब कएल की जा सकैत छल? पाँतिक बीचसँ बाहरा होएब संभव नहि छल। हमरा सभकेँ मैथिलीमे गप्प करैत सुनि सामनमे ठाढ़ि गेलाह समस्तीपुरक मैथिल परिवार। ओ थिक अपन लोकक चमत्कार हुनकासँ ! गप्प कऽ मोन कनी हल्लुक त भेल कएल। आब हमसभ मुख्यमंदिरपर आबि गेल रही। लगीचमे मूर्ति धक- धक जरि रहल छल। साँस ओकर धूआँ पसरि रहल छल। एक लोकनिक जयकारा सहो चलिए रहल छल,,,। जय श्रीकाल भैरव,,,! संभवतः ओ दृश्य मानमे स्मरण उत्पन्न कऽ सकैत

छल। व्यर्थक लालसासँ मोनमे उचाट उत्पन्न कए सकैत छल। मुदा से होइत कहाँ अछि? लोक उमेद शिव बाबासँ अपन अनेक कामनाक प्राप्तिक हेतु प्रार्थना करैत रहैत अछि।

लगभग दू घंटा पाँतिमे घुमैत रहि गेलाक बाद हमसभ शिव मंदिरक गर्भगृह लग पहुँचलहुँ। मंदिरमे शिवक आगूमे मोसकिलसँ एकमिनट समय रहल। मोन मोन हुनका प्रणाम कए-आगू बढ़ि गेलहुँ। मोन हमसभ बहुत थाकि गेल रही। तथापि जान पकड़ि लेने छल। उमेद छल प्रवचनीकेँ हम सदति कनबाक बाबू बाट निकालि देलक जाहिसँ तायसीमे हुनकसँ पाँतिमे रहि लागए पड़ल। मुदा बाहर निकलितहि तथापि हँसि गेलहुँ। उहिठामसँ दूगा शैंत धनि जाएब पनाहर भए गेल छल। कहुना कए हिलैत-चलैत-अपन दूगा-गीता हमसभ दूगा शैंत पहुँचलहुँ। अपन ललहुँ। उहिठामसँ हिलित आगू बढ़ि बाहरवालककेँ ताकि रहल छलहुँ कि छत्ता लेने उ देखाएल। मुदा मोन नें हमसभ नीकसँ हिलि गेल रही। उही हालतिमे हमसभ टैक्सीमे बैसि महाकाल मंदिर दिस बढ़ि गेलहुँ।

महाकालक नित्य राति ब्राह्ममुहूर्तमे भस्म आरती कएल जाइत छनि। पहिने चीहि लेल उहिनाति सरसँ पहिल जरल मुर्दाक भस्मक उपयोग होइत छल। मुदा आब गोइठासँ बनाओल गेल भस्मसँ भस्म आरती होइत अछि। एकरा देखबाक हेतु आनन्दलाइन बुकिंग सेहो होइत अछि। मुदा साओन मासमे

दर्शनार्थीक भीड़केँ देखैत ई सुविधा बंद कऽ देल गेल अछि। अस्तु, महाकालक दर्शनक हेतु हम शीघ्रदर्शनक आनलाइन टिकट कीनने रही। मंदिर परिसरमे द्वार संख्या चारिसँ हमरासभकेँ ओहि टिकटक संग आगू जेबाक छल। हमसभ ओही द्वारसँ आगू बढ़ैत छी। कतहु कोनो परेसानी नहि,कोनो धाँगि नहि । हमसभ धराधर मंदिरमे भीतर धरि प्रवेश कऽ गेलहुँ। बहुत नीकसँ महाकाल महादेवक दर्शन कलहुँ । एकर बाद मंदिरसँ बाहर अएलाक बाद हमसभ प्रसाद कीनबाक हेतु द्वार संख्या एक लग बनल खिड़कीपर गेलहुँ । सए रुपयाक दरसँ यथेष्ट लड्डुक पैकेट कीनलहुँ । हमसभ एकर बाद अपन वाहनमे वापस जेबाक दिसामे बढ़लहुँ । एतेक आसानीसँ दर्शन भऽ जाएत से नहि सोचने रही। जहिना उज्जैन मंदिरमे भीड़ छल तहिना ओहिठाम एकदम सफाइ रहै। लगैत अछि महाकाल हमरालोकनिपर विशेष दया कलनि। संभवतः शीघ्रदर्शनक टिकट रहबाक कारण परेसानीसँ बचलहुँ । महाकालक दर्शनक बाद हमसभ बहुत संतुष्ट छलहुँ। आब आन कतहु जेबाक प्रयोजन नहि बूझा रहल छल । ओना वाहनवालक आन मंदिरसभक चर्चा कलक । मुदा हमसभ आब कतहु नहि गेलहुँ । सोझ वापसी यात्रा हेतु टैक्सीमे बैसि गेलहुँ ।

उज्जैन

हमसभ अपन यात्राक मुख्यालय उज्जैन बनौने रही। कतहु जाउ,किछु काल घूमि कऽ वापस एँ घर आएब। संयोगसँ ओहि यात्रामे हमरा सरकारी होलीडे होममे जगह भेटि गेल छल जे

सभ ठामहुँ सुखद छल । ओतऽ सभ आवश्यक सुविधा छल। भोजन,जलखै,चाहक ओरिआन तँ छलहे। तँ हमसभ वापस ओहिठाम आबि गेलाक बाद बहुत आराममे रहैत छलहुँ । जेना अपन घरमे होइ। आइ हमरा लोकनिक एथेन्समे दर्शन दिन छल। सात दिन रहबाक कारण किछु मंदिरसभमे अथवा भीड़ रहबाक संभावना छल। तँ हमसभ आइ आराम नहि कऽ स्थानीय भ्रमण करबाक निर्णय कएलहुँ । भोर जलखै चाहक बाद हमसभ ओही टैक्सीसँ नगर भ्रमण करऽ विदा भेलहुँ ।

एथेन्स शहर पछिला कैकसालसँ सफाइक मामिलामे संपूर्ण देशमे प्रथम आबि रहल अछि। बहुत साल सऽ भेलैक । जखन एथेन्स शहरमे घूमि रहल छलहुँ तँ व्यावहारिक रूपसँ प्रत्यक्ष अनुभव भेल जे वास्तवमे ई शहर अतिशय स्वच्छ अछि । सदिखन सफाइ करबाक हेतु तत्पर कर्मचारीसभ। स्थानीय लोकसभ ओहिना ध्यान राखए । यातायात सरकारीक दोकान बला सभ जाइत काल एक-एकटा खढ़ उठबैत देखलहुँ । तकर बाद ओहि स्थानकेँ बाढ़निसँ चिक्कन,चमचम करैत छल,ओहिना जेना भोरमे रहल होअए। कतहु कचरा सऽकायर एकर बकर वस्तु नहि देखैत। कोना ने ओलिम्पिक-आयोग ई शहर?मानमे होअए जे आन आन शहरमे ई गुण-लोकमे किएक ने अबैत छनि?

छलीह। मुख्य मंदिरमे गणेशजीक सुन्दर प्रतिमा स्थापित अछि। लगपासक छोट आन देवतासभक मूर्ति स्थापित-छोट मंदिरमे आन-अभिलाषाक कामना करैत छथि से प्रायः पूर्ण होइत छनि। मंदिरमे दर्शन कएलाक बाद हमसभ थोड़काल ओतहि बैसलहुँ। ओहिठामसँ हमसभ पहुँचलहुँ अन्नपूर्णा मंदिर। एहि मंदिरमे अन्नपूर्णाक मूर्ति स्थापित अछि। चारूकात अतिशय स्वच्छ परिसरक बीचमे चम चम-करैत अन्नपूर्णाक मंदिर देखैत बनैत छल। हमसभ बड्ड नीकसँ दर्शन कएलहुँ। लगैत छल जेना एकटा बड्ड पवित्रस्थानमे पहुँचि गेल छी।

सहरमे घूमैत घूमैत हमसभ राजबाड़ा पहुँचलहुँ।-राजबाड़ा महल मध्य प्रदेश राज्यक इन्दौर शहरमे अवस्थित एक राजमहल छी। ई महल लगभग 200 साल पहिने बनल छल। एहि महलक वास्तुकला फ्रेंच, मराठा आ मुगल शैलीक अनेक रूप आ वास्तुकला शैलीक मिश्रण अछि। सात मंजिला एहि भवन मे निचला तीन मंजिला संगमरमरक बनल छल। ऊपरका चारि मंजिला सागौनक लकड़ीक सहायतासँ बनल छल। राजबाड़ा ९१८ फीट लंबा आ २३२ फीट चौड़ा एहि भवनक प्रवेश द्वार ६ १० मीटर. ऊँच अछि, जकर संरचना हिन्दू शैलीक महल जकाँ अछि। राजबाड़ा अपन इतिहास मे तीन बेर जरि चुकल अछि आ 1984 मे अंतिम बेर लागल आगि मे एकरा भारी नुकसान पहुँचल छल। आइ मात्र बाहरी भाग अक्षुण्ण अछि। ओहि महलमे घूमलाक बाद बाहर आबि हमसभ किछु फोटो घिचलहुँ। कैकबेर

ओहि विशाल महलकेँ देखैत चललहुँ आ तकर बाद आगू बढ़ि गेलहुँ ।

ओतहि गेलहुँ आ ओहिठामक छप्पन दोकानमे जा कऽ मनपसिंद हलसग्गी नहि कलहुँ त की कलहुँ? ओतहिक पेठा जिलेबी,पानी पूरी,दही पूरी,खायना पट्टी,गोंदक लड्डू,कचौरी आ पान बहुत प्रसिद्ध अछि। पेठा जिलेबी त स्थान स्थान सहरमे सबठाम-भेटि जाएत । हमसभ दुपहरिआमे छप्पन दोकान लग पहुँचलहुँ छोट दोकान-। ओकपाँतिसँ दुनुकात छोटछोट अनेक प्रकारक भोजन सामग्रीसभ उपलब्ध छल। हमसभ थोड़ बहुत खेलहुँ । तकर बाद आगू बढ़ि गेलहुँ। तकर बाद हमसभ पहाड़ीपर बनल जैनसभक प्रसिद्ध तीर्थस्थल गोमटगिरि गेलहुँ। ओतऽ चौबीसो तीर्थंकरकेँ समर्पित चौबीसटा संगमरमरक मंदिर अछि। गोमटेश्वरक एक्कैस फीट ऊँच मूर्ति सेहो आकर्षणक केन्द्र अछि। नित्यदिन कऽ ओहिठाम आगन्तुक लोकनिकेँ दालबाटी खेबाक अवसर भेटैत छनि। साँझमे ओहि पहाड़ीपरसँ सूर्यास्तक दृश्य बहुत मनोरम लगैत अछि। परंतु,हमसभ ओ दृश्य नहि देखि सकलहुँ ।

अहिल्याबाई होल्कर ओतहिक नामसँ जुड़ल छथि। ओ बहुत धार्मिक प्रवृत्तिक छलीह । ओ संपूर्ण भारतमे प्रसिद्ध मंदिरसभक जीर्णोद्धार करओलीह। नव मंदिर,धर्मशाला सभक स्थापना सेहो करओलीह। एहिमे काशीविश्वनाथ मंदिर,वाराणसी,सरयू घाटपर निर्मित राम मंदिर,बद्रीनाथ,द्वारकाधीस,केदारनाथ,ओंकारेश्वर,आ रामेश्वरमक मंदिर,धर्मशाला आदिक स्थापना करबओलथि।

ओंकारेश्वर मंदिर

सोमदिन उज्जैन घुमलाक बाद मंगलदिन हमसभ भोर ओंकारेश्वर महादेवक दर्शनक हेतु विदा भेलहुँ। मंगल दिन रहबाक कारणे हम दुनू बच्ची उपासमे रही। एँ की? मोनमे एकटा उत्साह छल जे उपासक कारणे कनिको परेशानी नहि बुझाएल। रस्तामे हमसभ एकठाम चाह जरूर पीलहुँ। एकर बाद गाड़ीवालाक चलबैत रहल अपन गाड़ी आ हमसभ लैत रहलहुँ ओहि सुंदर मौसममे पहाड़ी यात्राक आनन्द। आकाशमे मेघ उमड़ि-मंद बहि रहल छल। दुनू द-मनि रहल छल। हवा स मंद्◌घ◌स पहाड़ी आ बीच बीचमे बोल बम कहैत कमरथुआसभ आगू बढ़ैत-जा रहल छल। एहन सुखद यात्रा होएत एकरा हमरा कनिको अनुमान नहि छल। अपितु,हमरा कनी मनी डर होइत रहए।-पता नहि पहाड़ी सड़कपर गाड़ी कोना चलत,आदि,आदि। मुदा से सभ किछु नहि छल। लागि रहल छल जेना चारूकातसँ आनन्दक वर्षा भए रहल अछि। एहि एनहुँ लगभग दू घंटा गाड़ी चलैत रहलाक बाद पहुँचि गेल ओंकारेश्वर।

सभसँ पहिने हमसभ नर्मदा नदीक घाटपर गेलहुँ। नदीमे कातमे बना बनी स्नान कएलहुँ। किछु फोटो सेहो खिचलहुँ। एकर-बाद ओंकारेश्वर मंदिर दिस विदा भेलहुँ। हमरासभकेँ शीघ्र दर्शन करब◌ाक टिकट छल। तथापि मंदिरक द्वारिएपर एकटा पंडा प्रस्ताव देलाह-

-हमरा संगे चलू। हम नीकसँ महादेवक गर्भगृहमे दर्शन

करा देब। महादरशन जल्दी करवा देब।

-मुदा हमरासभक लगमे तँ शीघ्रदर्शनक टिकट अछि?

-तँ की? ओहिसँ अहाँ महादरशन जल्दी थोड़े करा सकब। हम तँ अहाँकेँ जलाभिषेक करा देब। गर्भगृहमे तुरंत पहुँचा देब।

-हमरा कतेक भुगतान करए पड़त?

-एगारह सए।

-हम एको टाका नहि देब।

ओहि पंडासँ बहुत मोसकिलसँ जान बचा कए हमसभ आगू बढ़लहुँ। थोड़बे दूर की गेल हएब कि एकटा पूजक पंडा हमर सामने प्रस्ताव लए उपस्थित भए गेलाह। हम हुनका कहलिअनि

-पाँचसए टाका दए सकैत छी। एहिसँ बेसी किछु नहि।

ओ तैयार भए गेलाह। तकर बाद ओ आगू आगू आ पाछू जा रहल छलहुँ। हमर श्रीमतीजीक हाथमे हमसभ पाछू शीघ्रदर्शन बला पर्ची छलनि। से देखि कए एकटा समाधान ओहि

-हिनकासभकेँ तँ शीघ्र दर्शनक टिकट छनि।

हाथसँ इसारा दैत ओ आगू बाजल-

-हिनकासभकेँ उठि बाट लए जाइत।

एकर बाद यंत्र नक्शा बदललक। हमहूँसभ उठकर यात्रु-यात्रु चलैत रहलहुँ। बहुत संकीर्ण सीढ़ीमा नक्शाम लोक ठसल छल। मासकिलसँ पाँच मीटर आगू मंदिरम प्रवेश करबाक द्वारि रहए जाएत। हमसभ एहि बाटसँ आन चिन्हि नही। मुदा ई नहि रहल। थोड़ेब कालक धक्कम धुक्कीक बाद हमसभ उंकारेश्वर-मंदिरक द्वारिसँ हीएन पैसि गेलहुँ। पैसि तँ गेलहुँ,मुदा आगू-यात्रु लोकसभ लगैत छल पिचि देत। दर्शनक तँ रहबे ना मालिक। आखिर कना आगू आ-एना उ यंत्र लाटाम जल लन आगू--यात्रु महादेवक आगूम पहुँचि गेलहुँ। बना-हमसभ उठकर यात्रु नी महादेवपर जल ढालहुँ, प्रणाम कलहुँ आ आगू बढ़ि गेलहुँ।

महादेवक दर्शन कए हमसभ बाहर रहल छलहुँ कि यंत्र हमना हमर हाथ पकड़ि कए किछु मंत्र पढ़ए लगलाह। जाब हम किछु सोचि रहल्हुँ ताब तँ उ बहुत आगू बढ़ि गेल नहथि। हम पूछलिअनि-

-ई की रहए नहल अछि?

-अन्नदान। कमसँ कम एगारह सएक दान।

-हन उठएब बाप? हम तँ अहाँकेँ पाँच सए गछन छी।

वस उगव दव।

श्रीमतीजीक इसाना यावि हम एक सए आन कृनका दए हानकग हलहुँ। जानम जान आएला। दृनुगोट कनिक हटि कए सृम्हलहुँ। किछ्छ हाटा सहा खिचल गेला। गकन वाद आगू वढि गेलहुँ।

अहसाव आ दुखक वाग अछि जे एगक पैघ धर्मस्थानम एहन कुव्यवस्था किएक अछि?पंडासभ एना किएक करैत अछि जे दर्शनार्थीसभ हतप्रभ नहि जाइत छथि। संबंधित व्यवस्थापकलोकनिकेँ एहियन ध्यान देवाक प्रयोजन अछि। उमकानश्वन महादव एकादश ज्योतिर्लिंगम मानल जाइत छथि। कतए कतएसँ लोक हुनकन दर्शन कनए हवैत छथि। लोकसभक श्रद्धाम कोनो कमी नहि अछि। सामदिनक गेँ उहिOाम जाएव आ दर्शन कनव वहुत मासकिल काज अछि। मुदा जाहि रूपक व्यवस्था हवाक चाही से नहि वुझाएला। महाकालश्वन मंदिनम गेँ एकन कैक गुणा वसी नीक व्यवस्था देखवाम आएला। इ एकटा महज संयोग छल कि एहिना वलैत अछि से गेँ नहि कहल जा सकैत अछि। हमसभ एहि वातसँ वहुत प्रसन्न नही जे दु दिनक भीतन दुटा प्रसिद्ध ज्योतिर्लिंग महादवक दर्शन भए सकल। कतेको सालसँ सोचैत छलहुँ,से सपना पूर्ण भेल। निश्चित रूपसँ इ महादवक कृपसँ संभव भेल।

माहेश्वन

उंकानश्वन महादवक दर्शनक वाद हमसभ माहेश्वन विदा

रहलहुँ। अहिल्याबाइ होल्करक समयमे इन्दौरक शासन माहेश्वरसँ कएल गेल छल। हमसभ माहेश्वरमे अहिल्याबाइक महल आ लगपासमे बनल मंदिरसभ देखलहुँ। हुनकर महलकेँ तुलयन ओसाराक ठीक सामने नर्मदा नदी छथि। कहल जाइत अछि जे अहिल्याबाइ नित्य राज-काज शुरू करबासँ पहिने ओतऽ ठाढ़ भऽ नर्मदाक दर्शन करैत छलीह। एकर बाद ओ राजकाजमे हाथ लगाबथि। कनीक हटि कऽ अखंड दीप जरैत अछि। कहल जाइत अछि जे ओ एगारहटा दीप पाँच हजार साल सँ जरि रहल अछि। दीप जरि तँ रहल छल अवश्य मुदा पाँच हजार सालक बातक पुष्टि के करत?

माण्डू (माण्डवगढ़)

हमसभ महाकालक दर्शन कऽ लेने नहि। ओंकारेश्वर महादेवक दर्शन सेहो कऽ लेने नहि। लौटतीमे माहेश्वर सेहो भऽ आएल नहि। इन्दौर सहरक प्रमुखप्रमुख स्थान सेहो घूमि लेने नहि। हमरासभ लग आब किछु समय छल। वापसी रेल टिकट २८ जुलाइक छल। सत्ताइस जुलाइक हमसभ माण्डू जेबाक निर्णय कएलहुँ। ओही टैक्सीवलासँ गप्प पक्का कऽ लेलहुँ। सत्ताइस जुलाइक भोर साढ़े सात बजे हमसभ माण्डू बिदा भऽ गेलहुँ। माण्डू इन्दौरसँ सतानवे किलोमीटर दूरकी अछि। ई शहर पहाड़ीपर अवस्थित अछि। पर्यटकलोकनि ओहिठामक वर्षाक आनन्द लेबाक हेतु बहुत उत्सुक रहैत छथि। माण्डू धार जिलाक वर्तमान मण्डव ग्राम एक प्राचीन शहर अछि। ई पश्चिमी मध्य प्रदेशक

मालवा आ निमाड़ उत्तम अवस्थित अछि । एकर चारू कात पाथरक देवाल अछि जाहि पर दरवाजा विंदीदार अछि (गेटवे) । स्थानीय मानुक नक्सा बड्ड नीक अछि। बादमे किछु पहाड़ी नक्सा देखल जाए टूरिस्टकेँ करी सावधानीसँ चलबाक प्रयोजन रहैत अछि। लगभग साढ़ेदस बजे हमसभ माण्डू पहुँचि गेल रही। स्थानीयसँ बिना जलखै कने हमसभ विदा भ' गेल रही। ई माण्डू पहुँचि हमसभ सबसँ पहिने किछु जलखै कयलहुँ । तकर बाद घूमए विदा भेलहुँ । संयोगसँ एकटा बड्ड नीक मार्गदर्शक(गाइड) भेटि गेलथि। एक होटल रुपयामे ओ सौंस घुमा देताह,से कहलथि।

रानी रूपमती आ सुल्तान बाज बहादुरक दुखान्त प्रेमकथा।

सुल्तान बाज बहादुर माण्डू क अंतिम स्वतंत्र शासक छलाह। एकबेर जखन ओ सिकार करए निकलल रहथि ई नर्मदा नदीक कातमे एकटा बालिकाकेँ अपन संगीसभक संग खेलाइत देखलथि। ओ बड्ड मधुर स्वरमे गाबि रहल छलि। बाज बहादुर स्वयं संगीतप्रेमी छलाह। ओ ओहि बालिकाक मधुर संगीतसँ तेहेन प्रभावित भेलाह जे ओकरासँ विआह करबाक प्रस्ताव द' देलनि। ओ बालिका एहि सर्त संग विआह करबाक हेतु तैयार भ' गेलि जे ओ कोनो एहन महलमे रहतीह जाहिसँ अपन प्रिय नदी नर्मदाक नित्य दर्शन क' सकथि। तकर बाद हुनकर विआह सुल्तान बाज बहादुर संग भेलनि। तकर बाद रेवाकुण्डक निर्माण भेल छल। रानी नित्य रानीरूपमती मंडपक नामसँ बादमे प्रख्यात पहाड़ीक चोटीपर बनल मूलतःसेनाक अवलोकन चौकीसँ बाज बहादुरक महल

आ नर्मदा नदीक दर्शन करैत छलीह।

हमसभ जखन नानीरूपमतीमंडप दिस जाइत रही तखनहि नालाकुण्ड लग दुटा मूर्ति जनि रहल छल। अचानक वर्षा शुरू भऽ गेल। हमसभ थोडकाल ठाढ़ीम नहि गेलहुँ। वर्षा समाप्त भेलाक बाद हमसभ गाइडक संग निचाँ उतरलहुँ। वर्षाक समयमे ठाढ़िOमक मौसम बड्ड सुखद भऽ गेल छल। आकास जेना धूआँ सँ भरि गेल होइक। कहल जाइत अछि जे कौकवन खनाय मौसमम नानी रूपमती नर्मदा दर्शन नहि कऽ पाबथि। माण्डूक मौसम बसी काल गहन नहैत छल जे धूंधक कारण नानी नर्मदा नदीक दर्शन नहि कऽ पाबथि। तकर विकल्पक रूपमे नालाकुण्डक दर्शनसँ ठाढ़ि संकल्पक पूर्ति करथि।

नानी रूपमती आ सुल्तान बाज बहादुरक प्रेमकथा अकबरक माण्डूपर आक्रमणक कारण संकटमे पडि गेल। अकबर अधम खानकेँ माण्डू पर कब्जा करबाक लेल पठा देलनि। सुल्तान बाज बहादुर मुगल सेनाक मकाबिला नहि कऽ सकलाह आ युद्धमे हारि गेलाह। अधम खान नानी रूपमतीकेँ कब्जा करए चाहलक। नानी ओहि परिस्थितिकेँ बुझि आत्महत्या कऽ लेलनि। ओहि तरहेँ सुल्तान बाज बहादुर आ नानी रूपमतीक प्रेमकथाक दुखद अंत भऽ गेल
।

हिण्डोला महल

हिण्डोला महल या -स्विंगिंग पैलेस- ऐतिहासिक खंडहर

माण्डु किलाक उन्दनी रागम नायल ओनक्लानक हिस्सा छैक। संरक्षाः ई15वीं शताब्दीक अंगक छैक आ सुल्तान घियाथ शाह)1469-1500 क शासनकालम एक दर्शक होलक रूपम वनाउल गेल (नहैक, ज अयन रागनादी जीवनशैलीक लल प्रसिद्ध छल।

जहाज महल

ई ऐतिहासिक स्थान उहि युगक कारीगनक अकल्पनीय काज थिक। चारू कात पहाउी आ हनियन जंगलसँ घनल . आश्चर्यजनक, अद्भुत दृश्य अछि। जहाज महल एना वनाउल गेल अछि जना उ यानिम हलि नहल हाअए। उकान दु दिसम याखनि अछि आ दु दिसम कृत्रिम याखनि वनाउल गेल अछि। एहि तनहुं ई महल चारू दिससँ यानिसँ घनाएल नहैत अछि। दुटा मीलक वीचम 0१८ रुण्य, सदिया यूनान जाहाज महल वक्नत गजव अछि। ऊयनसँ देखलायन लगैत अछि जना उ जलसँ चारूदिससँ घनाएल एकटा जहाज अछि। अयन यनावर्णन यन वहैत माण्डु क जाहाज महल एहन जहाज जकाँ लगैत अछि ज चलए वला अछि। दु टा कृत्रिम मील मूंज याखनि आ कयून याखनिक वीच वनल ई एक सए वीस मीटन नमगन -जहाज महल- एकटा सुरुचियूर्ण दु मंजिला महल अछि। खुजल मंडय, यानि यन लटकल वालकनी आ खुजल छत क संग जहाज महल एकटा शाही सुख शिल्पकयाथनम कल्पनाशील मनानंजन अछि। जहाज महलक निर्माण अद्भुत अछि। नानीक स्नानगृहम तनह तनहक उनिआनसए कएल-गेल छल। ई महल प्राचीन समयम जल संनऊणक हेतु कएल

जा रहल प्रयासक एकटा अद्भुत उदाहरण अछि। ओहिठाम वर्षाक पानिकेँ जल संरक्षण द्वारा बचा कए राखल जाइत छल जाहिसँ ओहिठामक निवासीकेँ साल भरि पानिक दिक्कति नहि होनि।

कहल जाइत अछि जे सुल्तान बाज बहादुर संगीतसभाक आयोजन ओहि भवनमे कराओल करथि। ओहि भवनक विशेषता अछि जे ओकर कोना कोनमे यदि कओ किछु बाजए तँ ओ ध्वनि एकदम मौलिक रूपमे भवनक कोना स्थानसँ सुनाइत अछि। हमसभ स्वयं एहि प्रयोगकेँ कलहुँ। हमरसभक गाइड एक कोनपर ठाढ़ भए गीत गओलथि आ हमसभ ओहि भवनक एकदम दोसर कोनटापर ठाढ़ भए ओकरा साफसाफ सुनि सकलहुँ-, सेहो एकदम स्पष्ट आ मधुर स्वर जेना कि माइक लागल होइक। कहि नहि ई अभियान कोना कएल गेल छल?

होशंग शाहक कब्र, गुंबददार संगमरमरक मकबरा, आओर विशाल जामी मस्जिद सेहो एहिठामक प्रमुख भवन अछि।

माण्डुक इमलीक नामसँ जानल जाइत अफ्रीकन रूखक स्थानीय नाम खोरासानी इमली छैक जाहि कारणसँ एकर जड़ि खोरासान क प्राचीन भूमिमे छैक।(प्राचीन फारस)कहल जाइत अछि जे एहि रूखक बीज मिस्रक खलीफा ने 14वीं सदीमे माण्डु क सुल्तानकेँ उपहारमे देन छलाह। आब ठाम ठाम एहि रूखकेँ-बिकाइत देखलिऐक। पर्यटकसभ उत्सुकतासँ एकरा कीनैत

माण्डुम प्रमुख प्रमुख ऐतिहासिक स्थानसभ देखलाक बाद-हमसभ स्टेशन वापस विदा भेलहुँ। एहि बेर वाहनवालक नव रस्तासँ जा रहल छल जाहिमे पहाड़ नहि छलैक। साफ सपाट-रस्तापर तीव्रगतिसँ टैक्सी अपन गंतव्य दिस बढ़ि रहल छल। दूर धरि हरिअर-सड़कक दुनूकात हरिअरी पसरल छल। दूर धान देखि ककर मोन हर्षित नहि होएत-कंचन बाध? ऊपरसँ पानिस टिपिरटिपर खसि रहल छल। -

आब स्टेशन मात्र अठतीस किलोमीटर बाँकी छल कि वाहनवालक गुगलनक्शाक चक्करमे रस्ता बदलि लेलक। ओ दहिना दिस आगू बढ़ि गेल। एकर बाद तँ शुरू भेल गाम गाम घूमैत-रहि कए ग्रामीणसभसँ सही-पातर सड़कक यात्रा। रहि-पातर रस्ता पूछए पड़ैत छलैक। जाए काल्हि चौबटिआ रहैक तहिठाम तँ खास कए मासकिल होइत छल। साइत हमरासभकेँ ओहि इलाकाक गामसभ देखब लिखल छल। से हमसभ नीकसँ देखलहुँ। मुदा परसान भेलहुँ। आखिर वाहनवालक आठ किलोमीटर एहि तरहेँ चललाक बाद फेरसँ हाइवेपर सड़कपर वापस आबि सकल। हमसभ बड़का हल्लुक अनुभव कए रहल छलहुँ। टैक्सी फेरसँ अपन पुरना गति धए लेने छल। हमसभ एक बेर फेरसँ निश्चिन्त भाव यात्राक आनन्द लैत आगू बढ़ि रहल छलहुँ। एतबेमे एकटा नीकसन ढाबा देखाएल। हमसभ भूखल तँ रहब करी। ओहिठाम नीकसँ भोजन कलहुँ। एकर बाद स्टेशन दूर नहि छल। मासकिलसँ चालीस मिनटक बाद हमसभ अपन ठेकानापर पहुँचि गेलहुँ।

ऽऽश्रेन आ आसयासक हमनासरक यात्रा सुखद वनवअम नाहनवालकक वङ्का योगदान छल। ओ एकटा समांग जकाँ सदिखन हमनासरक संगे लागल नहल। कादृ काना यनसानी नहि होमअ दलक। स्नान कनवासँ लअ कअ दर्शन कनवा धनि ओ छाँह जकाँ हमनासरक संग रहैत नहल। हमसर अचानक ट्रेवल एजन्सीक माध्यमसँ ओकना संपर्कम आअल नही। मुदा यहिल दिन ओकन व्यवहानसँ हमसर वङ्का प्रभावित रल नही, एकन वाद गँ शेष सरदिन ओकनसँ साम संपर्क कनी। ओ वङ्का उचित किनायाम हमना लाकनिकँ सुनक्षित यात्रा कनवैत नहल। ताहि हेतु ओ निश्चित रूयसँ धन्यवादक यात्र अछि। असलम कावा किछु वकाल समय रअ गेलैक अछि,मुदा अखनहु नीका लाक अछि। । गँ ऽऽी दुनिआ चलि नहल अछि आ चलैत नहत। एकटा अस्लात सहनम एकदम अयनिचित ओहि नाहनवालकक व्यवहानसँ स अनुरूप यक्का रल।

अधिऽऽस झलाऽऽक रानसँ हमसर नायसी यात्राक तैयानीम लागि गेल नही। स्नानध्यानक व-ाद अतिथिगृहक सामन अवस्थित यियलवृक्ष महादवकँ प्रणाम कअ हमसर जलखै कलहुँ। एकन वाद थोडक विश्राम सहो रलैक। समानसर वाकसम नाखि लल गेल। दुयहनिआम राजन कलाक वाद घंटा रनि हुनसँ विश्राम कलहुँ। एकन वाद अतिथि गृहक हिसाव किताव कअल गेल। आवश्यक-भुगतान कलहुँ आ हमसर ऽऽश्रेन नलव टीसन दिस विदा रअ गेलहुँ। एक वन हुन नम्फ नम्फ ऽऽश्रेन सहनक सहाऽऽसँ-

𑒁𑒕𑒱। 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒮𑒩𑒏𑒰𑒩𑒲 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒰𑒮𑒮𑒿 𑒃 𑒮𑓀𑒦𑒫 𑒢𑒯𑒱 𑒦𑓄 𑒮𑒏𑒺𑒞 𑒕𑒪। 𑒧𑒰𑒢𑒥 𑒃𑒯𑒼 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒕𑒪 𑒖𑒹 𑒠𑒬𑒏 𑒂𑒢 𑒂𑒢 𑒬𑒯𑒩𑒮𑒦 𑒏𑒱𑒕𑒳𑒏-𑒢 𑒍𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒮𑓂𑒫𑒕𑓂𑒕𑒞𑒰𑒏 𑒛𑒾𑒁𑒪𑒱 𑒂𑒫𑒱 𑒮𑒏𑒺𑒞 𑒁𑒕𑒱? 𑒏𑒱𑒕𑒳𑒏 𑒢? 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒞𑒰𑒯𑒱 𑒯𑒹𑒞𑒳 𑒮𑒩𑒏𑒰𑒩𑒏𑒿 𑒃𑒮𑓂𑒟𑒰𑒢𑒫𑒰𑒮𑒲𑒮𑒦𑒮𑒿 𑒣𑓂𑒩𑒢𑒐𑒰 𑒪𑒫 𑒖𑒩𑒴𑒩𑒲 𑒁𑒕𑒱।


















-रवीन्द्र नारायण मिश्र, पिताक नामस्वर्गीय सूर्य नारायण मिश्र :, माताक नामस्वर्गीया दयाकाशी देवी :, व७स६९ वर्ष :, पैतृक ग्राम : अरेर डीह, मातृकसिम्रिआ घाट :, वृत्ति भारत सरकारक उप : (सेवानिवृत्त) सचिव, स्थशल मद्रायालिटन मजिस्ट्रेट, दिल्ली(सेवानिवृत्त), शिक्षा-एस.चन्द्रधारी मिथिला महाविद्यालयसँ वी : दिल्ली विश्वविद्यालय : रौतिक विज्ञानम प्रतिष्ठा .सीसँ विधि स्नातक, प्रकाशित कृति.प्रकाशन वर्ष१२०11 १ :मैथिलीम :रानसँ साँस ध्वनि (आत्म कथा),२(निबंध) प्रसंगवश ., ३ यात्रा) स्वर्ग एहि अछि. (प्रसंग; प्रकाशन वर्ष१२०१८ ४ नमस्त्ये .७ (कथा संग्रह) रूसाद . (उपन्यास)महनाज.१ (निबंध) विविध प्रसंग .६ (उपन्यास) उ)लजकाटन.८यन्यास(; प्रकाशन वर्ष१२०१९ ९ सीमाक ओहि. (उपन्यास)मातृभूमि.११ (निबंध संग्रह)समाधान.१०(उपन्यास)यान (उपन्यास)स्वप्नलोक.१२; प्रकाशन वर्ष१२०२० १३ (उपन्यास)शंखनाद. (उपन्यास)ठहैत देवाल.१७(संस्मरण)ऊँएह थिक जीवन.१४; प्रकाशन वर्ष१२०२१ १६ हम आबि रहल.१७ (संस्मरण)या(थय. (उपन्यास)प्रलयक पतन.१८ (उपन्यास)छी; प्रकाशन वर्ष१२०२२ १९ बदलि.२१ (उपन्यास)प्रतिबिम्ब.२० (उपन्यास)बीति गेल समय. (उपन्यास)राष्ट्र मंदिर.२२ (उपन्यास)रहल अछि सरकिछु (उपन्यास)नाचि रहल छलि वसुधा.२४ (कथा संग्रह)संयोग.२३ ।(उपन्यास) दीय जनौ नरु७.२७**mishrarn@gmail.com; m-9968502767**

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

३.पद्य खण्ड

३.१.पवन मिश्र 'गोनौली'- ओ जमाना किछु आओर छल

३.२.आचार्य रामानंद मंडल- ई धनी छई/ हम मिथिला छी/ नायक छी हम

३.३.राज किशोर मिश्र-आरुद

३.४.आशीष अनचिन्हार- २ टा गजल

३.५.कल्पना झा- राखी

𑓓.𑓑.𑒧𑒠𑒢 𑒧𑒱𑒬𑓂𑒩 '𑒑𑒰𑒧𑒻𑒪𑒲'- 𑒍 𑒖𑒧𑒰𑒢𑒰 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒂𑒍𑒩 𑒕𑒪



𑒧𑒠𑒢 𑒧𑒱𑒬𑓂𑒩 '𑒑𑒰𑒧𑒻𑒪𑒲'

𑒍 𑒖𑒧𑒰𑒢𑒰 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒂𑒍𑒩 𑒕𑒪

𑓑.𑒖𑒐𑒢 𑒙𑒼𑒪 𑒧𑒞𑒮𑒏 𑒧𑒰𑒠𑓂𑒩𑒳𑒢 𑒁𑒣𑒢
𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒕𑒪,
𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒧𑒰𑒠𑓂𑒩𑒳𑒢𑒏 𑒠𑒼𑒏𑒰𑒢𑒲𑒮𑒿 𑒠𑒯𑒲 𑒋𑒏
𑒠𑓂𑒩𑒳𑒢𑒏 𑒒𑒩𑒮𑒿 𑒁𑒥𑒻𑒞 𑒕𑒪!
𑒍 𑒖𑒧𑒰𑒢𑒰 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒂𑒍𑒩 𑒕𑒪!!
𑓒. 𑒖𑒐𑒢 𑒙𑒼𑒪𑒏 𑒫𑒰 𑒑𑒰𑒧𑒏 𑒥𑒹𑒙𑒲 𑒢𑒻𑒯𑒩
𑒁𑒥𑒻 𑒕𑒪,
𑒋𑓄 𑒣𑒴𑒩𑒰 𑒙𑒼𑒪 𑒂𑒢𑒢𑓂𑒠𑒱𑒞 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒕𑒪,
𑒢𑒻𑒢𑒏 𑒢𑒯𑒱 𑒕𑒪!

ओ जमाना किछु आओर छल!!

३.जखन गहुमक ताँटी आँगन- आँगनमे

करैत काल ,

आँगनमे किटी पाटी जकाँ लगैत छल!

ओ जमाना किछु और छल!!

४. जखन बरीक नियारमे नव

बनियाणिक लल रङ्ग या हरल नहि

लल जाइत छल,

पतासिक दलान द्वारक ओछाओन -

बिछाओन लगाओल जाइ छल!

ओ जमाना किछु आओर छल!!

५. जखन ककना खरिहानमे ककर धान

और ककर चौरी- बिसरि सुखाइत

छल इयो करनाइ मासकिल छल,

जखन ताकयीनकँ अबैत देखि मनमे

उत्सुकता आ चिठीक इंतजार रहैत

छल!

ओ जमाना किछु आओर छल!!

६. जखन पाहुन पनरह अबैत छल

घरमे पाबैन तिहार जकाँ लगैत छल,

जखन टोलक सब बच्चा साँझमे

लुक्काचोरी खेलाइत छल!

ओ जमाना किछु आओर छल!!

१. जखन बच्चाक जन्मदिन पर
भगवानक पूजा होइत छल,
स्त्रीगण बधैया गबैत छलीह आर
बच्चा गलामे फूलक माला पहिरने
अपनाकेँ शहंशाह मानैत छल।
ओ जमाना किछु आओर छल।।
८. जखन दीदी- पीसा, मामा- मामी
जाइत काल हाथमे बलजोरी पाइ
पकड़बैत छल आ बाल सभ हुनका
मना करैत छल,
ओहि लेन- देनक बदलामे एक आसनकेँ
सम्मान दैत छल।
ओ जमाना किछु आओर छल।।
९. जखन काका शादी-बियाहमे
इस्कूलक चमकैत कनिया ड्रेस
पहिरनाइ काका शानसँ कम नहि
होइत छल,
जखन छुट्टीमे हिल स्टेशन नहि
नानीगाम गेनाइ पसंद कएल जाइ
छल आ बनरख टनिक लेल मधुर
पाडक पटान टनि टनि कऽ अबैत छल
ओ जमाना किछु आओर छल।।
१०. जखन विद्यालयमे शिक्षक हमर गुरु

नहि हमन कमी गनवौ नहौ छलाह,
जखन निर्मंग्रध स्नीकृणिक वाम्ह
७क हाँक सुयानी दल जाꣿग छल,
विना हाथ (धान घेल छुनाꣿ मना
छल!
ऊ जमाना किछु ७ाउान छल!!
११. जखन गनमीक साँमम छग यन
यानि छिटनाꣿ जन्हनी हाꣿग छल,
जखन Óंताक ननम नोदम सुꣿटन
वूनल जाꣿ छल ७ा वूनाꣿ यन
नव-नव खिस्सा सुनाउल जाꣿ छल,
जखन नागिम नह कटनाꣿ मना छल
मूनहाꣿन साँमम वाढनि लगेनाꣿ
खनाय मानल जाꣿग छल!
ऊ जमाना किछु ७ाउान छल!!
१२.जखन वच्चाक ७ाँखिम काजन,
माथ यन नजनिक टीका जन्हनी छल,
नागि कs मैंया- नानी खिस्सा सुनवौ
छल ꣿगियौ- यिगियौ सहा सहादन
लगेग छल!
ऊ जमाना किछु ७ाउान छल!!
१३. तीज नहि ढालकक थाय साहाउान
छल,

जखन गला सुरीला नहि रहिया खालि
कऽ जराजटीन गाउल जाइत छल,
जखन बियाहक एक - दू दिन नहि
दस- बारह दिन धरि स्त्रीगण गीत गबै
छली सालासनि विधि-वरान होइत
रहै छल।
ऊ जमाना किछु आओर छल।।
१४. जखन बिना एसीक गलक सरकम
माटी या फूसि आलु आन अवानक
संग बरद सुअरगन लगैत छल,
जखन खटगन- मिठगन बैनक
सुआदक आगु जंगली काँटक चूरन
नीक लगै छल।
ऊ जमाना किछु आओर छल।।
१५. जखन सब अपन लगै छल
बिना घंटी बजने बधनक ककरो
घरमे लोक ढुकि जाइ छल,
जखन टाल- पूली, चिक्का आओर
आसपास खेलक संग दोस्ती कन
पूल बाढ़ल जाइ छल।
ऊ जमाना किछु आओर छल।।
१६. जखन लोक ताकल लग देखबै लेल
काम जाइ छल, ताकन घर घर अबै

छल,ताकान साखवक वेग उठा कs
कूनका वाहन छाति ७नाॠ संस्थान
आ संस्कृति मानल जाॠ छल।
ऊ जमाना किछु आउान छल!!
११. जखन गौन ऊन अमना खरगन नहि
मिठगन लगेत छल,
जखन प्रथक यानिनिर्माण यन
चिकनी माटिसँ घन छछानल ,
गोवनसँ आंगन नियल जाॠ छल।
ऊ जमाना किछु आउान छल!!
१८.जखन येघ राय- वहिनिक छाट रल
कयठा उयहानसँ कम नहि लगे छल
जखन लू सँ रनल दूयहनियाम नना
सव खाली यञन गाछिय गाछी रल
रहिनै छल,
जखन वरु ववै७ नालाक तमक आ
लालछठी ववै७ नालाक घंटी सुनि
वव ल' क' कनका दुन दौतल जाॠ
छल।
ऊ जमाना किछु आउान छल!!
१९. जखन मावाॠल नहि धर्मयुग,
सनिता,साप्ताहिक हिन्दुस्तान,
कादम्बिनी, ॠतियारतक संग हमन

दिन कटैत छल,

जखन टीवी नहि प्रेमचंदक

उपन्यास हमरा कहानी सुनबै छल,

ओ जमाना किछु आओर छल!!

२०. जखन मुल्तानी माटिसँ केशकेँ

रेशमी बनाओल जाइत छल

जखन दस पाइक चूरन आ गोली

कमाल करैत छल,

जखन पिपनिया बर्निस दालि बनै

छल,

जखन ढेकीसँ धान कुटाइत छल

जखन ओखलिसँ चूड़ा कुटाइत छल जाँतसँ

गहूँम पिसाइत छल,

जखन चटनी लोढ़ी- सिलौट पर

पीसल जाइत छल

आब ने ओ नगरी ने ओ ठाँव छल!

ओ जमाना किछु आओर छल,

ओ जमाना सचियहुँ किछु आओर छल!!

पवन मिश्र "गोनौली"

१७-०३-२०२१

- हाटगछिया, थाना, कोलकाता- 700105, 9433746295;

सहायक शिक्षक, श्री उमापति विद्यामंदिर, पश्चिम बंगाल सरकार, कोलकाता।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

३.२.आचार्य रामानंद मंडल- के धनी छथि/ हम मिथिला छी/ नायक छी हम



आचार्य रामानंद मंडल- ॐ धनी छॐी/ हम मिथिला छी/ नायक छी हम

१

ॐ धनी छॐी।

शान मं छी।

गुमान मं छी।

गुलामी कैं,

गुणगान गबै छी।

राजा महाराजा कैं,

महिमा कै,

बखान करै छी।

हम कवि छी।

राजा रानी कें,

नख शिख वर्णन,

करै छी।

करी राधा कृष्ण,

न करी गौरी शंकर,

बनबै छी।

करी वैष्णव,

करी शैव,

न करी शाक्त बनै छी।

गाजा भांग मांस माछ कें

बखान करै छी।

उच्च-नीच कें,

ध्यान रखै छी।

मिथिला मैथिली,

आ मैथिल कें,

राजनीति करैत छथि।

हिंदी नै,

कहक शासन कें,

कमजोर करै छी।

मिथिला कें,

वृद्ध संस्कृति कें,

नष्ट करै छी।

ई धरती छै,

जनक, बुद्ध आ,

कवीन कें स्थान छै।

ई धरती छै,

सीता आ चनमा कें,

प्रेम कें।

ॐ धनी छै,

शलरुस लानिक,

आ वंश तीन चमान कैं।

ॐ धनी छै,

मांगैन, नद्यू नामरुल,

आ दिनकन कैं।

नामा ॐ धनी छै,

सरु मैथिल क।

२.

हम मिथिला छी।

कृषक जनक कैं मिथिला छी।

हम बेटी सीता कैं मिथिला छी।

हम मिथिला छी।

बटा शलरुस कैं मिथिला छी।

हम तीन लोकक कें मिथिला छी।

हम मिथिला छी।

साहित्यकार रघु कें मिथिला छी।

राष्ट्र कवि दिनकर कें मिथिला छी।

हम मिथिला छी।

शहीद रामफल कें मिथिला छी।

हम शहीद जुब्बा कें मिथिला छी।

हम मैथिली छी।

जन जन कें बोली मैथिली छी।

जन जन कें भाषा मैथिली छी।

हम मैथिली छी।

मांगेन कें गान मैथिली छी।

यात्री कें भाषा मैथिली छी।

हम मैथिली छी।

मैथिल कें मायक भाषा मैथिली छी।

मिथिला कें मिOगन वाली मैथिली छी।

हम मैथिली छी।

संवैधानिक भाषा मैथिली छी।

मिथिला मैथिल कें भाषा मैथिली छी।

हम मैथिल छी।

मिथिला कें नहनियान मैथिल छी।

मिथिला मं जनमल मैथिल छी।

नामा हम सूब्रा मैथिल छी।

३

।। नायक छी हम।।

खलनायक नै,

नायक छी हम।

मूकक नायक छी हम।

नयथक नायक छी हम।

खलनायक नै,

वंचित लोकेन,

आवाज छी हम।

कवीर छी हम,

गलाकेँ विराधी छी हम।

खलनायक नै,

वृद्ध छी हम।

शलहस, लारिक, रघु, रामहल क

वंशज छी हम।

मांगेन राग केँ,

गायक छी हम।

खलनायक नै,

सीताक राखी छी हम।

मिथिलाक खवरदार छी हम।

मिथिलाक पहरदार छी हम।

खलनायक नै,

नायक छी हम।

सुतल मैथिल के,

जगाब वाला हम।

सच्चा मैथिल छी हम।

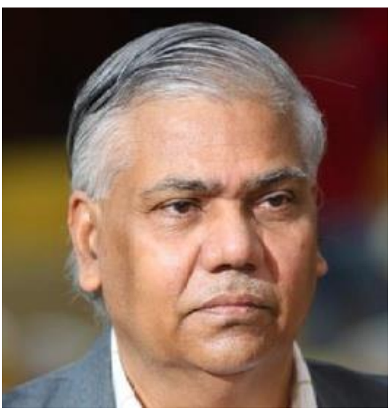
खलनायक नै,

रामा नायक छी हम।

-आचार्य रामानंद मंडल सामाजिक चिंतक सह साहित्यकार सीतामढ़ी।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

𑓒.𑓒.𑒩𑒰𑒖 𑒏𑒱𑒬𑒼𑒩 𑒧𑒱𑒬𑓂𑒩-𑒂𑒩𑒴𑒛



𑒩𑒰𑒖 𑒏𑒱𑒬𑒼𑒩 𑒧𑒱𑒬𑓂𑒩, 𑒩𑒱𑒙𑒰𑒨𑒩𑓂𑒛 𑒔𑒲𑒤 𑒖𑒢𑒩𑒪 𑒧𑒻𑒢𑒹𑒖𑒩 ([illegible]), 𑒥𑒲.𑒋𑒮.𑒋𑒢.𑒋𑒪.(𑒧𑒳𑒐𑓂𑒨𑒰𑒪𑒨), 𑒠𑒱𑒪𑓂𑒪𑒲,𑒑𑒰𑒧- 𑒁𑒢𑓂𑒡𑒩 𑒚𑒰𑒜𑒲, 𑒣𑒼. 𑒁𑒢𑓂𑒡𑒩 𑒯𑒰𑒙, 𑒧𑒡𑒳𑒥𑒢𑒲

𑒂𑒩𑒴𑒛

ककना लगौक नी क कद्गु?
ना गव का ना नि यप्कि ,
की नग वा ढि , गुकम्य ,क?
मा नल (गल जकन ह्गौक मगि ।

मूदा , वि क्लवे न जनवे, वूसवे न सूसवे,
अकम्मा ग् ,0। ८ रुs जा ७ग, आरुद,
दजि ध सँ ,ना म सँ, अका ससँ ,यगा ल सँ,
आ७ग ससनल, याँ गन सँ, रुs नि सवद।

वा ट ध्s कs, का ग दs कs,
ना गि म, कि यना ग रुs कs,
मा टि दs कs, या नि दs कs,
गुख ,आ कि ध्न -घा नि दs कs,

घन लग आगि सँ
गुवा ल, वि ७ना वसा ग सँ,
काँ ८ -कनज गा ित दग,
कमजा न कनग वा ग सँा

नि नग्रा अका स सँ ,ह्ना ॐ्ठ नक्षाया ग,
वेसल नरुग सूख ,रुs जा ७ग का गा

नि यन्दि , का ना दखो अछि ,
जा ऽ कऽ ककना दा आनि ?
दुनहि सँ सुनि सको ठी ,
या नो अछि यी ि७ ा रा का नि ।

यूर्वा रा स नहि नहला सँ,
नहेठ जि नगी असा नधा न,

सक्षक, जना कऽ सक्षनव, उँ
अकस्मा ा् आ७ा ुहा ना।

सदि खन ,जि नगी सनल नहि ,
आ न ,चलेठ मृज -वा ट,
नहि जा नि , खुजि जा ७ा कखन,
ज्ञा ला मूखी क कया ट।

री क वनला सँ समया ,
की या डाा अयन नि दा न?
ज शक्ति अछि , डाहि सँ ल७व ाऽ,
ाखन अछि कल्या ध।

आँखि मुनि लव, रा ाि जा ७व,
ाऽ कि , मा नि जा ७ा ,आयदा ?

कि ह्र गs ह्रा ्््ग अठि ,अक्षज ,
कि ह्र टलि ऊा जा ्््ठ ,यदा -कदा ।

(धेर्य संग ह्म गs अ७व,
मा न, वइा न सदृश ,कनवा।

जगा ७व ,सुगल यून्कषा र्थ क,
ऊ0ा ७व ,अर्थंगन या र्थ का।

प्रलय संग, ह्म वनव प्रलय,
ऊकना सूना ७व, ऊकन लया।

सी खि जा ७व ह्मर्कुँ गां ऊन,
जि नगी क समन म, वनव यां ऊना।

नि यफि सँ ह्म नदि ऊनव,
वक्षलर्कुँ ह्राँ ७, ह्म गs ल७वा।

कनअऊा आयदा जाक सळा ७,
लगा वs ऊा सर ,अयन जा ना।

ह्म घा स -या ग, नदि चनि जा ७ग,
टकना ७ग गs, ऊा मनि जा ७गा।

मन म जि नगी क जा स अछि ,
यथा र्थक सत्ता , सा स अछि ।

मा नस-नर यन ,अछि चमकि नहल ,
उसा हक मा गेछु,
नि यदि क' कहना धा क्नि , हा टग,
रS जा ज्ञा , खछु -यखछु।

नि जय क डा आगि जा गल
नहय ,मा न म ,सदि खन,

कहना जमल अक्ना न आह्दक,
घमेंग नहग डा, खन -खन।

सरटा हना ठैक मा नक,
वूमि लि अ डौ वा वू!वू
जि नगी क जी ग अछि अयना यन,
वस!नहउ मा न यन का वू।

आह्द नदि हा ळूग अछि वि नंजी वी ,
डाकना लि वा उ, नदि स्नयं लि वी ।

अह्ला नक वा द, ऊहि रा ग म,
ञेक यसनल खुव ङ्जा ग,
जलधि क सहा अऊाँक गी न,
रS दृ७ चला ऊ गS या ग।

थह्मु गS कि ह्र का ल ,
अनथ्य, अऊाँक जि नगी क रा न,

आरुद सँ ल७क जञा नरुय,
नहि कि , आँखि म ना ना।

दृ७ नि श्वय लग था कि कS,
हा नि जा ङ्ग अञि का ल,

आरुद गS,का ना ञा ट -ञी न,
ञ की ऊाकन , मजा ल?

अयन मंगय editorial.staff.videha@gmail.com **यन यOाऊ।**

३.४.आशीष अनचिह्नान- २ टा गजल



आशीष अनचिन्हार- २ टा गजल

1

मोलक वस्का दन गेल
लाटा थानी लन गेल

हमना हिस्सा कूनक नाम
चूथ्य चूय नखवन गेल

नहिय वँवौ टूटल नाह
गैया असगन खन गेल

जन्ध विठलक अयनसँ
सह टा स छितियन गेल

𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒠𑒬𑒏 𑒂𑒥 𑒯𑒰𑒪
𑒑𑒢𑒠𑒢𑒱 𑒥𑒰𑒿𑒔𑒪 𑒥𑒢 𑒑𑒹𑒪

𑒮𑒦 𑒣𑒰𑒿𑒞𑒱𑒧 22-22-22-21 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩𑒰𑒏𑓂𑒩𑒧 𑒁𑒕𑒱।

2

𑒁𑒑𑒢 𑒧𑒑𑒢𑒧 𑒖𑒲𑒫𑒢 𑒥𑒲𑒞𑒪
𑒑𑒲𑒖𑒪 𑒏𑒰𑒨𑒰 𑒩𑒯𑒰 𑒑𑒲𑒖𑒪

𑒨𑒕𑒢 𑒢𑒯𑒱𑒨𑒻 𑒖 𑒁𑒑𑒢 𑒧𑒑𑒢
𑒖𑒲𑒫𑒢 𑒩𑒢𑒱 𑒮 𑒥𑒠𑓂𑒡𑒝 𑒪𑒲𑒐𑒪

𑒖𑒱𑒧𑓂𑒧𑒰 𑒯𑒱𑒮𑓂𑒮𑒰 𑒏 𑒧𑒑𑒕𑒰𑒧
𑓇 𑒁𑒑𑒢 𑒧𑒑𑒢 𑒯𑒧𑒯𑒳𑒿 𑒮𑒲𑒐𑒪

𑒁𑒮𑒑𑒢 𑒮𑒳𑒢𑓂𑒢 𑒨𑒕𑒪 𑒂𑒿𑒑𑒢𑒧
𑒁𑒣𑒢 𑒏𑒮𑒪 𑒁𑒣𑒢 𑒥𑒰𑒿𑒮𑒪

𑒁𑒪𑒑 𑒁𑒢𑒳𑒩𑒴𑒣 𑒠𑒴𑒢𑒏𑒰 𑒕𑒫𑒱𑒝
𑒨𑒪𑒧 𑒚𑓀𑒕𑒰 𑒨𑒪𑒧 𑒡𑒲𑒨𑒪

सभ पाँतिमे 22-22-22-22 मात्राक्रम अछि। दू टा अलग-अलग लघुकेँ दीर्घ मानल गेल अछि। ई बहरे मीर अछि।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

३.७.कल्पना झा- नारी



कल्पना झा
नारी

कल्पेग मान छल,
मूद्धा निनशा क आगु
0गवजज्ञान रल नही,
वजान में सजल
ऊा नशम क जानि,
हाथ क स्पर्श सं हंसि यउल,
ककन पूछानि कन्क,
ॐ जनि राॐी वहिन क दूनी क
नायि सकवा में कम छल,

आइ रोस्कन क ॐजाग का गिख छै,
मान वहिन क खाली
आ राॐी क कलाॐी शुन छै,
माय क माटनी गमकैत सनश
सब गुणियैल
व२ अजगुत दिन अछि आयल
बितिया काल पर सब स्नेह पठावल,
बिधना क नवल ॐी विधि
जगा ज नही सब नही खुशी।

-कल्पना झा, वाकाना, वनमा

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**